कल्पतरु-गुणपाल



लेखक :

जैनाचार्य पूज्य श्री काशीराम जी महाराज
के सुशिष्य व्याख्यानवाचस्पति

श्री सुरेन्द्र मुनि जी महाराज



प्रस्तुत कर्त्ता :

साधुराम देवीदयाल अग्रवाल
समीप जैन-मार्किट, जालन्धर।

पुस्तक : कल्पतरु-गुणपाल

प्रकाशक : श्री देवी दयाल अग्रवाल,
एवं अन्य साहित्य प्रेमी सज्जन,
समीप जैन मार्किट, जालन्धर ।

लेखक : सुरेन्द्र मुनि

भाषा : सरल हिन्दी

संस्करण : प्रथम

प्रति : २०००

मूल्य : एक रुपया

दिनांक : वीर निर्वाण दिवस सम्वत् २४९४
कार्तिक वदी ३०, ई०स० १९६७ ।

चित्रकार : रमन आर्ट स्टूडियो, जालन्धर ।

मुद्रक : सुरेन्द्र कुमार चोड्डा,
चैम्बर प्रिंटिग प्रैस, सैंट्रल मिल्ज़, जालन्धर ।

मिलने का पता : मास्टर फ़कीरचंद जैन,
९०२३, नया वांस, अम्बाला शहर ।

: निरंजन लाल अग्रवाल,
प्लाट नं० १९७, बिशन नगर, पो० दुखनिवारण,
पटियाला—२ ।

पुस्तक के विषय में

कथा-कहानी का जन्म भी सृष्टि के साथ ही हुआ। ज्यों-ज्यों सृष्टि का विकास होता गया कथा-कहानी भी विकसित होती गई। नानी की कहानी से लेकर आधुनिक रूप तक कहानी एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् पहुँची। समयानुसार रूप में परिवर्तन भले ही होता रहा हो लेकिन उद्देश्य में परिवर्तन नहीं आया। मनोरंजन के साथ-साथ कहानी आदि-काल से शिक्षाप्रद रही है। हमारे धार्मिक नेताओं से लेकर वैज्ञानिकों तक ने कहानी के माध्यम से अपने गूढ़ रहस्यों को बड़ी सरलता से प्रस्तुत किया। हो सकता है कि कहानी किसी समय केवल मनोरंजन का साधन रही हो लेकिन इसका प्रयोग प्रमुखतः शिक्षा देने के लिए उपदेशात्मक ही रहा। हमारे ऋषि मुनियों तथा आचार्यों ने कथा के माध्यम से धर्म के गूढ़ रहस्यों को प्रस्तुत किया। साधारण से साधारण मनुष्य भी इसके माध्यम से इन गूढ़ रहस्यों से परिचित हो गया।

प्रस्तुत पुस्तक कल्पतरु-गुणपाल भी एक कथा है जिसके माध्यम से धर्म के कुछ गूढ़ रहस्यों को बड़ी सरलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। कथा का नायक गुणपाल एक धीर-वीर और गम्भीर पुरुष है जिसमें धार्मिक संस्कार कूट कूट कर भरे हुए हैं। गुणपाल का जीवन एक आदर्श जीवन है जिसमें आत्म-त्याग और संयम की प्रधानता है। वह अपने जीवन में अनेक सत्कार्य करता है। दुष्टों का विनाश और सज्जनों से नेह, उसका महान गुण है। जीवन के अन्त में वह अपने आप को आत्मसाधना में लगा देता है। कथा उपदेशात्मक होते हुए भी मनोरंजन से भरपूर है। पाठक इस पुस्तक के माध्यम द्वारा यह दोनों प्रकार का लाभ उठा सकेंगे।

पुस्तक के रचयिता श्रीमद् जैनाचार्य पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीराम जी महाराज के सुशिष्य कविरत्न प्रसिद्ध वक्ता श्री सुरेन्द्र [illegible] महाराज हैं। मुनि जी धर्म शास्त्र के एक योग्य ज्ञाता हैं

लेखक की ओर से

प्रस्तुत कथा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि विचारों से परिपूर्ण है। इस की पृष्ठ भूमि वर्तमान् सामाजिक वातावरण है। वर्तमान में बढ़ती हुई सौंदर्य प्रियता, विलासिता एवं उच्छृंखलता को देखकर मन में अनेकानेक विचारों का प्रादुर्भाव हुआ।

एक दिन बैठे बैठे मन में संकल्प उठा कि क्यों न किसी इस प्रकार की कृति का प्रकाशन किया जाए, जो अज्ञानान्धकार में भटकने वाले जीवों के लिए प्रकाशपुंज बन सके, तथा वर्तमान भौतिक चकाचौंध में सुख प्राप्ति के लिए भटकने वालों के लिए सुख प्राप्ति का मार्गदर्शन कर सके।

अतएव तत्संकल्प के फल स्वरूप ही जो कुछ बन पड़ा है, पाठकों के कर कमलों मे अर्पित है। कथा के नायक गुणपाल के माध्यम से मानवता, शौर्यता, धीरता, गम्भीरता, सदाचारिता आदि का दिग्दर्शन कराने का पूर्ण प्रयास किया गया है। मानव भौतिक सुखों का उपभोग करता हुआ भी कमल की भान्ति निर्लिप्त रह सकता है और क्रमशः इन्द्रिय दमन करते हुए परम पद को प्राप्त कर सकता है।

अन्त में मुझे निसंकोच होकर लिख देना ही उचित है कि मेरे इस प्रथम प्रयास में यदि कोई भूल रह गई हो तो उसके लिए सदैव सुधार को तत्पर हूँ।

सुरेन्द्र मुनि।

लेखक-परिचय

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक कवि रत्न पं० श्री सुरेन्द्र मुनि जी महाराज हैं। आपका जन्म संवत् १९७५ रादौर ज़िला करनाल में हुआ। आपके पिता जी का शुभ नाम श्री कुन्दन लाल तथा मातेश्वरी का श्रीमति कृष्णा देवी था। आपने संसार की असारता को निहारते हुए १७ वर्ष की अल्पायु में १९९३ विक्रमी विजय दशमी के दिन होश्यारपुर (पंजाब) में जैन दीक्षा ग्रहण की और पंजाब केसरी जैनाचार्य परमपूज्य श्री काशीराम जी महाराज के शिष्य रत्न बने।

आप एक उदीयमान कवि और मधुर भाषण कर्ता हैं। आपके व्याख्यानों पर जनता मंत्र मुग्ध हो जाती है। आप एक शांत एवं सरल प्रकृति के सन्त हैं। तपस्वी श्री विकास मुनि जी महाराज आप श्री जी के ही शिष्य हैं जिन्होंने इस वर्ष जालन्धर शहर चतुर्मास में ५५ दिन का घोर तप किया। यह केवल परिचय के लिए ही लिखा गया है।

आपकी गीत पुस्तिकाएँ निम्न हैं :—

१. मधुर स्वरों की झंकार
२. सुरेन्द्र वीणा
३. सुरेन्द्र विमान
४. सुरेन्द्र ज्ञान रश्मि
५. सुरेन्द्र मणि

लेखक :



श्री सुरेन्द्र मुनि जी महाराज

(चित्र परिचय के लिये)

पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं हो रहा था। राही कभी-कभी रुक पड़ता, थोड़ा समय रुक कर फिर चल पड़ता। चलता-चलता वह एक घने जङ्गल में प्रविष्ट हो गया। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ बड़े-बड़े वृक्षों और गहरी खड्डों में जंगली जानवरों की भयानक आवाज़ें भी उस पर कोई प्रभाव नहीं डाल रहीं थीं। साधारण व्यक्ति ऐसे निर्जन और भयानक वातावरण में साहस को छोड़ बैठता है। लेकिन वह राही एक विभिन्न प्रकार का इन्सान था। जो उन आपदाओं की तनिक परवाह न करता हुआ अपना मार्ग नाप रहा था।

पाठक गण! राही काफी थका हुआ दिखाई देता था लेकिन मंज़िल लम्बी होने के कारण विश्राम नहीं करना चाहता था। एका एक राही रुक जाता है। शायद पाँव में कांटा चुभ गया हो। राही पाँव उठा कर कांटा निकालता है। ओहः! उसका तो सारा पाँव ही लहू से लथपथ हो गया। जंगल का मार्ग भी कितना संकट मयी है। कांटा निकालकर वह फिर चल पड़ा। जंगली झाड़ियों से उलझ-उलझ कर उसके वस्त्र भी फट चले हैं। शरीर और वस्त्रों की सुध-बुध भुलाकर वह आगे ही बढ़ा जा रहा है। बगल में एक तलवार लटक रही है। शायद कोई क्षत्रिय है। लो राही फिर रुक गया अब क्या बात है? शायद

निर्वासित राही



एक राही धीरे 2 पग बढ़ाता हुआ चला जा रहा है।

विश्राम ले रहा हो। ओह! नहीं-नहीं यह तो चित्र देखकर रो रहा है। आंसू पोंछ कर वह चित्र को संभालता है और फिर चल पड़ता है। इस दशा से वह अवश्य दीन-हीन और भिखारियों जैसा लगता था, पर शरीर से वह किसी उच्च राजकीय परिवार से सम्बन्धित दिखाई देता था। जंगल का भाग समाप्त हो चला है। वह चलता-चलता काफी दूर निकल आया है। जंगल अब पीछे छुटता जा रहा है। थोड़ी दूर चलने के पश्चात वह एक नदी के किनारे पर पहुँच जाता है पानी लेकर हाथ-पांव साफ करता है और मुँह धोता है और प्यास मिटाकर नदी को भुजाओं से तैर कर पार करता है। नदी पार करके वह भारत की सीमा में आन पहुँचा। राही का शरीर थकान से चूर-चूर हो रहा था। सुस्ताने को जी चाह रहा है। नदी के किनारे पर ही वह एक उपयुक्त स्थान देखकर सो जाता है। मार्ग की भयानक विपत्तियों और लम्वाई ने उसके शरीर को चूर कर दिया सोते ही वह गहरी नींद में खो गया। जब निद्रा टूटी तो सूर्य भगवान अस्ताचल को जाने की तैयारी कर रहे थे और पक्षी- चह-चहाते हुए अपने घोंसलों में लौट रहे थे। सांय का आगमन हो रहा था वह उठकर अपने मार्ग पर फिर चल पड़ता है। विश्राम से उसके

शरीर में फिर से नयी स्फूर्ति पैदा हो गई।

नेपाल-भारत सीमा के समीप रत्नपुर नाम का एक अति रमणीक नगर था। इस नगर की शोभा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता था। प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर इसकी सुन्दरता को देखकर देवलोक भी फीका दिखाई देता है। नगर नदी के तट पर स्थित होने के कारण व्यापार का भी प्रमुख केन्द्र था। भूमि हरी-भरी तथा अत्यन्त उपजाऊ थी। धन-धान्य की कोई कमी न थी। लोग सब प्रकार से प्रसन्न तथा पूर्ण सुखी थे। लोगों में धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी अहिंसा उनका प्रधान गुण था। इस प्रकार की सुसम्पन्न तथा वैभवशाली नगर का राजा भी धर्म के गहरे रंग में रंगा हुआ था। राजा प्रसन्नकीर्ति जैन धर्म का उपासक था। जैसा उसका नाम था वैसे ही उसमें गुण भी विद्यमान थे। उसके शासन में प्रजा अत्यन्त प्रसन्न तथा सुखी थी जिससे उस नगर की कीर्ति चारों ओर फैल रही थी।

ऐसे धर्मानुरागी तथा प्रजापालक राजा की रानी भी इन्हीं गुणों से ओत-प्रोत थी। उसकी धर्म के प्रति-गहन आस्था थी और वह बड़ी दृढ़ता से अपने कर्त्तव्य का पालन करती थी। इससे उसका दाम्पत्य जीवन बड़े सुख से व्यतीत हो रहा था। ऐसे धर्मप्रिय तथा कर्त्तव्य-

निष्ठ दम्पति के समयानुसार एक पुत्र तथा पुत्री ने जन्म लिया। रानी पुत्र तथा पुत्री को पाकर फूली न समाई वह उनके ही लालन-पालन में लगी रहती थी। शोभारानी की आंखों के ये दो सितारे थे जिन्हें देख-देख कर वह परम शांति प्राप्त किया करती। धीरे-धीरे राजकुमार और राजकुमारी चम्पा की वेल की भांति वढ़ने लगे। राजकुमार का नाम मनमोहन तथा राजकुमारी का नाम चन्द्रप्रभा रक्खा गया। थोड़े समय के पश्चात् दोनों पढ़ने के योग्य हो गये। राजा तथा रानी दोनों चाहते थे कि पुत्र और पुत्री सर्वकलाओं में निपुण हों। वह धार्मिक वनें तथा सद्गुणी हों। माता-पिता के विचार श्रेष्ठ थे। यह स्वाभाविक ही है कि जिस प्रकार के विचार माता-पिता वालक के हृदय-पट पर अंकित कर देते हैं वह उसी के आधार पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वालक कोरी पुस्तक के समान होते हैं जो भी उन पर अंकित कर दिया जाये वैसे ही वन जाते हैं। राजा ने एक दिन शुभ मुहूर्त में उन्हें शिक्षाशाला में भेज दिया। वहां कलाचार्य ने उन्हें समस्त कलाओं का ज्ञान देना आरम्भ कर दिया। राजकुमार और राजकुमारी दोनों ही प्रतिभाशाली थे। कलाचार्य से वह शीघ्रता से विद्या ग्रहण कर रहे थे। थोड़े ही समय में दोनों ने काफी विद्या ग्रहण कर ली। कलाचार्य

ने राजकुमार को ७२ तथा राजकुमारी को ६४ कलाओं में निपुण वना दिया।

कलाचार्य एक दिन राजकुमार तथा राजकुमारी को लेकर राजसभा में पहुँच गया। राजा ने कलाचार्य को योग्य आसन देकर वैठाया। राजकुमार तथा राजकुमारी को सर्व-कला-सम्पन्न देखकर उसकी प्रसन्नता का पारा-वार न रहा। उसने कलाचार्य को भरी सभा में सम्मानित किया और सुन्दर परितोषिकों से उसे पुरस्कृत किया। कलाचार्य राजकुमार तथा राजकुमारी को आशीर्वाद देकर चले गये। समस्त कलाओं में सम्पन्न राजकुमार अपने पिता जी के साथ और भी सुन्दर ढंग से प्रजा का पालन करने लगे।



दो

मिलन

मुसाफिर के शरीर में सोने से नई शक्ति पैदा हो चुकी थी। लड़खड़ाहट उसके शरीर में से गायब हो चुकी थी जिससे वह बड़ी द्रुतगति से आगे को कदम बढ़ाता हुआ चला जा रहा था। थोड़ी दूर जाने पर ही उसे विशाल ऊँचे-ऊँचे भवनों तथा सुन्दर वृक्षों से सुशोभित एक नगर दिखाई देने लगा। इन विशालकाय भवनों को देखकर ही उसने नगर की शोभा का अनुमान लगा लिया। उसके पांव शीघ्रता से अब उस अपरिचित नगर की ओर बढ़ने लगे। कुछ समय के पश्चात् वह नगर की प्रमुख दीवार के समीप पहुँच गया। दीवार के साथ एक अतीव सुन्दर खाई थी जिसमें स्वच्छ पानी भरा हुआ था। पश्चिम से अस्त हो रहे सूर्य की किरणें पानी में पड़ कर एक सुन्दर दृश्य उपस्थित कर रही थीं। राही इन आकर्षक दृश्यों को देखकर अति प्रसन्न हुआ। दीवार के साथ-साथ चलता हुआ वह एक विशाल द्वार के पास पहुँचा और द्वार में से होता हुआ नगर में प्रविष्ट हुआ।

आकृति को देखकर मन ही मन में उसकी प्रशंसा करने लगा क्योंकि उसके मन पर उस राही ने विजय प्राप्त कर ली थी। न जाने मनमोहन का मन उसकी ओर क्यों खिचता जा रहा था। मानो किसी ने उसके गले में जादू की डोर डाल दी हो उसने उसी समय सेवक को भेजकर उसे बाग में ही बुला लिया। राही ने आते ही मनमोहन को नमस्कार किया। मनमोहन ने बड़े स्नेह के साथ जयजिनेन्द्र करने के पश्चात् उसको इधर आने का कारण पूछा और बोला "आपका शुभ नाम क्या है, यह बताने की कृपा करें।"

युवक उसके व्यवहार और शिष्टाचार से बड़ा प्रसन्न हुआ और बिना किसी संकोच के साथ बड़े मीठे और धीमे स्वर से उसके होठों से निकाला—"मैं गुणपाल हूँ जी।" मनमोहन उसकी मधुर आवाज़ को सुनकर झूम उठा, आवाज़ क्या थी, मानो किसी ने ताल छेड़ दिया हो। मनमोहन ने उससे फिर पूछा कि वह कहाँ से आया है पर यह सुन कर गुणपाल उदास हो गया और बोला—"मैं कहाँ से आया हूँ; कौन हूँ, क्या करने आया हूँ, यह सब पूछ कर क्या करोगे ? अब मेरा कोई ठिकाना नहीं, कोई घर नहीं, जहाँ रात पड़ती है वहीं मेरा घर बन जाता है। भूमि को चारपाई समझकर सो जाता हूँ।" मनमोहन उसकी

मिलन



आप का शुभ नाम क्या है ? बताने की कृपा करें !

बातें सुन कर कुछ देर गुणपाल की ओर देखता रहा और फिर बोला—मुझे आपकी यह पहेलियाँ समझ नहीं आ रहीं जो बात हो स्पष्ट कहिए, मुझे अपना छोटा भाई ही समझिए। शायद मैं आपके कोई काम आ सकूँ। "गुणपाल यह सुन कर उसकी ओर घूर-घूर कर देखने लगा और थोड़ी देर बाद मनमोहन को कंधों से पकड़ कर झंझोरता हुआ बोला– भाई-भाई हो तुम मेरे, भाई हो, तुम्हारी आकृति मेरे भाई सुधीर से मिलती-जुलती है। गुणपाल का इतना कहना ही था कि मनमोहन खुशी से उछल पड़ा, जैसे उसे कोई गुप्त खजाना मिल गया हो और उसके मुँह से निकला—"भाई साहिब, मैंने कोई असत्य थोड़ी कहा था।" गुणपाल भी इस बात से प्रसन्न हो गया दोनों गुलाब के पुष्प की भान्ति खिले हुए थे।

गुणपाल ने कहा आपकी मनोहर आकृति आनन्द-दायक बातें और ज्ञानियों जैसे विचार मुझे यह कहने पर विवश कर रहे हैं कि आप भी एक सज्जन पुरुष हैं। अपना नाम तो मुझे बतलाइये। "मनमोहन बोला—मुझे मन-मोहन कहते हैं मेरे पिता जी इस नगर के राजा हैं।"

गुणपाल मन ही मन में सोचने लगा कि राजकुमार होते हुए भी इसकी वाणी में कितनी मधुरता है। राजवैभव का तो ज़रा भी नशा नहीं है। आश्चर्य है कि इस राज-

कुमार को कितनी सादगी पसन्द है अर्थात् इतना कुछ होते हुए भी किस प्रकार सादा जीवन व्यतीत कर रहा है।

दुनियां तो इसे राजकुमार कहती है परन्तु मेरे विचार में इसे देवकुमार कहना भी अनुचित नहीं है बल्कि यहाँ तक यह मानव नहीं महा मानव है। मनमोहन गुणपाल को विचारों में डूबा देखकर बोला—"क्या विचार कर रहे हो गुणपाल जी ! यदि संकोच न हो तो मुझे भी बताने का कष्ट करें। गुणपाल मनमोहन की तरफ मुड़ कर बोला यही सोच रहा हूँ कि आप एक नरेश के राजकुमार होते हुए भी मुझ जैसे दीन-हीन कंगले से और एक अपरिचित के साथ कितने प्रेम और मुहब्बत से बातें करते हो इसलिए तो मैं कहता हूँ कि आप मानव नहीं महा-मानव हैं। फिर आप मुझे अपना ज्येष्ठ भ्राता मानते हैं जबकि कोई किसी प्रकार की जान पहचान भी नहीं है इसीलिए आप महान हैं। मैं आपका आभारी हूँ। मनमोहन बोला आपने तो बस कमाल कर दिया आपको और आपकी ज़ूबान को घड़ने में कारीगर को पूरी-पूरी मेहनत करनी पड़ी होगी भरसक प्रयास और परिश्रम के साथ आपकी आकृति तैयार की होगी हंसते हुए मनमोहन ने फिर उसी बात को दोहराया।

"आपकी वार्तालाप से ऐसा प्रतीत होता है कि आप

भी किसी शाही खान-दान के उज्वल सूर्य हैं आपका बात करने का ढंग निराला है, आप आफ़त के सताए हुए हो सकते हैं परन्तु निर्धनता के नहीं, आपकी आकृति और मुखमण्डल यह सूचित करता है कि आप किसी महान भूपति या किसी योग्य महामन्त्री के नयन सितारे हैं।"

गुणपाल यह सुन कर हैरान होकर बोला—"धन्य हो; आपकी प्रतिभा अति तीक्ष्ण है आपने मुझे पहचानने में कुछ भी देर न लगाई, आपको इन्सान की परख ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार एक जौहरी खरे और खोटे जवाहरात की पहचान पल भर में ही कर देता है यह आपने कमाल कर दिया धन्य है आपकी बुद्धि को।"

मैं आफत का सताया हुआ हूँ परन्तु निर्धनता अथवा गरीबी का नहीं। यह आपने बिल्कुल सत्य कहा है। यदि आप मुझे जानना ही चाहते हैं तो सुनिए "मैं वास्तव में नेपाल नरेश का पुत्र हूँ।"

मनमोहन—(गुणपाल को अपने वक्षस्थल से लगाते हुए)—कहिए भाई इतने बड़े महाराजा के युवराज होते हुए भी आपकी यह कैसे दुर्दशा बन गई। क्या मैं जान सकता हूँ ?

गुणपाल—(आंसुओं को नेत्रों में छिपाता हुआ)......

क्या कहूँ दिल की व्यथा कुछ कही जाती नहीं।
अमिट रेखा कर्म की जो मिट कभी पाती नहीं॥

मनमोहन—फिर भी कुछ तो कहिए कर्मों के सम्मुख तो सभी छोटे-बड़े हार गये।

गुणपाल—तो फिर सुनिए :

मैं भी कभी राज्य के नशे में झूमा करता था, मांस खाता था, जुआ खेलता था, मुझे किसी की चिन्ता नहीं थी, चिन्ता थी तो यही कि आज किसको सताया जाए। मेरे गुरु, माँ-बाप सभी ने मुझे समझाया पर मैं एक कान से सुनता तो दूसरे कान से निकाल देता। मैं सारा दिन रंग-रलियां मनाता, मित्रों-दोस्तों से मिलता तो वे मेरी प्रशंसा करते, पर रिश्तेदारों के पास जाता तो वे मुझे बुरा-भला कहते, मेरे ऊपर उपदेशों की वर्षा करते, पर मैं, जो उपदेश वे देते, वहीं फैंक आता। मुझ पर तो यह नशा सवार था कि मैं राजकुमार हूँ, लोग मुझसे डरें, मुझे सलाम करें ! पर हर तरफ मेरा अपयश फैल गया। लोग मुझ से घृणा करने लगे, मुझ पर ताने कसने लगे, महल मुझे खाने को दौड़ते, महल की प्रत्येक वस्तु मुझ पर हँसती, मेरा मज़ाक उड़ाती और मेरा दिल रो उठता। सोचता किसी ऐसी जगह भाग जाऊँ जहाँ कोई न हो। मेरे छोटे भाई सुधीर और छोटी बहन निर्मला ने भी मुझे समझाया। निर्मला ने भरे दिल और आँखों में आँसुओं की तरी लेकर समझाया।

निर्मला ने कहा—भाई साहब आप उस पथ को त्याग क्यों नहीं देते जिससे तुम्हारा दामन मुसीबतों और बदनामी से भर रहा है। मैं तुम्हारी बहन हूँ और छोटी हूँ फिर भी मुझे आपको समझाना पड़ रहा है। मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूँ कि सम्भल जाईए अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है अगर अब भी न सम्भले तो याद रखो जिन्दगी भर न सम्भल पाओगे और जिधर भी जाओगे मुसीबतें मुँह खोल कर तुम्हारी ओर भागी आएंगी। पछताओगे भईया, पछताओगे।"

निर्मला की एक-एक बात बहुमूल्य थी, परन्तु मुझे उसकी बातें अच्छी नहीं लगीं बल्कि मैंने उसको बहुत झिड़कें मारी। मेरे उन कठोर शब्दों ने उसके हृदय को बेध डाला। मेरे गम में वह सख्त बीमार पड़ गई। बहुत दौड़ धूप और अगाध प्रयत्न करने पर भी उसका स्वास्थ्य बिगड़ता ही चला गया और चन्द रोज में ही परलोक सिधार गई। उसकी मौत का जिम्मेदार मैं हूँ। मैं निर्दयी हूँ। मैंने अपनी बहन का गला अपने हाथों से घोंट दिया। मुझ से बड़ा पापी इस दुनिया में कौन होगा।

जिस समय मुझे इस बात का ज्ञान हुआ तो हाथ मलने के सिवाए और कुछ भी प्राप्त न हुआ। इससे मेरे

पिता जी और माता जी को हार्दिक खेद हुआ, परन्तु काल के आगे सभी विवश थे और आँसू वहा कर ही रह गये।

तन से निकले हुए प्राण वापिस लौट कर नहीं आते चाहे मानव लाख प्रयत्न भी क्यों न करे। यही सोच करके परिवार के सभी सदस्यों ने उसके वियोग को सहन कर लिया पर मैं उसके वियोग को सहन न कर सका। अपने तप्त हृदय को आँसुओं की नन्हीं-नन्हीं बून्दों से शान्त करता रहा और रोने-धोने के अतिरिक्त कुछ भी हाथ न लगा। उसकी प्रेमभरी बातों को याद करके पछताने लगा। सोच रहा था, उसके जीते जी क्यों न सम्भल गया, मुझे अपने पर गुस्सा आ रहा था, दिल चाहता था कि कहीं डूब जाऊँ, मर जाऊँ, चला जाऊँ, पर मेरी हालत ऐसी थी कि न मैं मर ही सकता था और न जी ही सकता था।

गुणपाल कुछ देर तक सिसकियां भरता रहा, फिर बोला, पिता जी को भी पता था कि मैंने ही निर्मला की बात नहीं मानी थी, मैंने उस का दिल दुखाया था, मैं ही उसकी मौत का ज़िम्मेदार हूँ और उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया मैं सोच रहा था कि पिता जी ने मुझे फांसी पर क्यों नहीं लटकवा दिया। मुझे केवल इतनी छोटी सी सज़ा क्यों दी। आते समय मैं निर्मला की तस्वीर ले

आया। तस्वीर को देख लेता हूँ और रो लेता हूँ। निर्मला मुझे कभी क्षमा नहीं करेगी। उस की आत्मा को शान्ति कैसे मिलेगी।" अपनी करुणा भरी कहानी सुनाते सुनाते वह फूट फूट कर रो उठा और फिर एक दम तस्वीर को दिखा कर बोला– यह है इस बदनसीब की बहन का चित्र, जिसे देख कर मेरी अन्तर आत्मा मुझे दुत्कारती है। मुझे लाहनत देती है और निर्मला का एक एक शब्द मुझे याद हो उठता है और लगता है, अगर अब भी मैं निर्मला के उपदेशों पर चलूं तो उसकी आत्मा को शांति मिल सकती है।

उफ ! उस समय मेरी बुद्धि कहां चली गई थी। मैंने बड़ी भूल की और बहन की बात पर तनिक भी विचार नहीं किया, उल्टा उसके कोमल दिल को ठेस पहुँचाई। मेरी प्यारी बहन तेरे बगैर मेरा जीवन बेकार हो गया। घर, दर सब छूट गया और हर प्रकार से लाचार हो गया। किसी ने सच ही कहा है कि :

"सम्भल कर चलना जलवा मुहब्बत का देखने वाले ॥
तमाशा खुद न बन जाना तमाशा देखने वाले ॥
तमाशा दिखाने मैं चला, खुद ही तमाशा हो गया ॥
जगमगाता भाग मेरा हाय आज सारा सो गया ॥

मनमोहन ने उसे जब इतना दुःखी देखा तो बोले

उठा "भाई गुणपाल" आप इतने अधीर क्यों होते हो। ज़रा धैर्य से काम लो किसी ने यह भी तो कहा है कि—

सहो कष्टों को हंस-हंस कर न रोने में भलाई है।
मुसीबत यह अनेकों पर अनेकों बार आई है॥
नहीं तुम पर नई आफत, जो यूं बेजार होते हो।
भलाई वीरता है दोस्त, और कायरता बुराई है॥

अब आप इस चित्र को देख कर दुखी न होवें। जिस का यह चित्र है उसकी शिक्षा को अपने हृदय में उतारो। (चित्र को अच्छी तरह से देख कर) "ओह, वाह! यह चित्र तो किसी स्वर्ग की अप्सरा का लगता है। अच्छा जो कुछ भी हुआ वह सब कुछ आप के कर्म का ही फल है। अब भी चेत जाओ, अब भी कुछ नहीं विगड़ा।"

गुणपाल के मुँह से निकल पड़ा कि धन्य हो, धन्य हो, हे राज पुत्र तुम्हें बार बार नमस्कार।

खोल दी आँखें मेरी तुम ही रहवर हो मेरे,
आज से मैं शिष्य तुम्हारा तुम ही गुरुवर हो मेरे।
मैं वह पापी हूं न देखी जिसने पुण्य की परछाई,
मैं वह अन्धा हूं जिसने आँख होते हुए ठोकरें खाईं।
ढूंढता फिरता था मार्ग, पर न मिलता था मुझे,
तुमने मार्ग आ सुझाया इस मुसीबत में मुझे।

मनमोहन अपनी प्रशंसा को सुन कर ज़रा भी गर्व में न आया और बोला "आप तो मेरी प्रशंसा के व्यर्थ ही पुल

बाँधने लगे यह तो मेरा कर्तव्य है कि हर मानव के दुख को सुनना और शक्ति के अनुसार उसके दुख को दूर करना और सहायता देना। यह भी तो प्रत्येक मानव का कर्तव्य है, परन्तु मैंने तो अब तक आपका कुछ भी नहीं किया इतना अवश्य है कि आप के जीवन की रूप रेखा देख कर तथा आप की दुख भरी कहानी सुन कर मेरे हृदय में उथल पुथल सी हो गई है। फिर भी आप चिन्ता न करें अब आप की मुसीबत के दिन बीत गये हैं। मैं आप को अपना भाई कह चुका हूँ सो इस वचन को पूर्ण रूप से निभाने का प्रयत्न करूँगा।

यह तो फर्ज है मेरा आखिरी दम तक निभाऊँगा।
गर पड़ी जान की जरूरत वह भी मैं दे जाऊँगा॥

यह सुन कर गुणपाल ने मनमोहन के चरण पकड़ लिये और बोला आप इन्सान नहीं देवता हैं आप धन्य हैं, पर मनमोहन ने उसे उठा कर छाती से लगा लिया। गुणपाल उसकी छाती से लगने से हिचकचा रहा था, सोच रहा था कि कहीं मेरे मैले वस्त्रों से इसके वस्त्र भी मैले न होजाएं। पर मनमोहन उसके भावों को ताड़ गया और बोला मेरे से पीछे क्यों हटते हो मैं भी तो तुम्हारे जैसा ही हूँ।

तपाक से गुणपाल बोला :

दुख में जो काम आये वही इन्सान होता है।
गिरते को जो थाम ले वही भगवान होता है॥

"मेरे तो आप ही सब कुछ हैं।"

मनमोहन बोला :—अरे कहां भगवान और कहां मैं। मैं तो भगवान के चरणों की धूली भी नहीं हूँ।

गुणपाल आंखों में तरी ला कर बोला, यह तो मैं जानता हूँ कि कौन भगवान है और कौन धूली।

मनमोहन व्यंग कसता हुआ बोला—भाई साहब आपको बातों में नहीं जीता जा सकता। चलिए अब महलों में चल कर स्नान मंजन करो, और बाद में भोजन पान करो फिर बाकी बातें देखी जाएंगी।

महलों का नाम सुन कर गुणपाल यूँ झटक कर संभला, मानों उस पर बिजली गिर गई हो, बोला :—"मैं और महल!" फिर हँसता हुआ बोला भाई क्यों हँसी करते हो। मुझे यहीं पड़ा रहने दो मुझे न जाने कहां-कहां की खाक अभी मेरी किस्मत में छाननी शेष है और फिर मुझे देख कर तुम्हारे माता पिता कहेंगे कि किस भिखारी को पकड़ लाये हो। मैं..........।

मनमोहन ने आगे उसके मुँह पर हाथ रख दिया और बोला : बस-बस अब आगे कुछ मत कहना। मेरे माता पिता ऐसे नहीं हैं। उनके शरीर में भी मानवता से भरा हुआ दिल है। तुमने अभी उनके दिल को नहीं समझा। मेरे

माता-पिता तुम्हें देख कर कमल के फूल की भाँति खिल जायेंगे।" इस प्रकार समझा बुझाकर मनमोहन गुणपाल को महलों की ओर ले चला दोनों ऐसे चले जा रहे थे। मानों सगे भाई हों गुणपाल अब भी सोच रहा था कि क्या मनमोहन के माता-पिता जी भी मेरे साथ वही व्यवहार करेंगे। जो मनमोहन ने किया है। वह महलों का रहने वाला था परन्तु आज महलों की चार दिवारी से ऐसे भय खाता हुआ चल रहा था। मानों उसे कारागार में डालने जा रहे हों। इस प्रकार विचार-शृङ्खला में पड़ा-पड़ा ही मोहन के पीछे चल रहा था। कुछ ही देर में वे दोनों महल के अन्तिम भाग में पहुँच गए। वहां पर उसके स्नान आदि का प्रबन्ध किया गया। राजकुमार—मनमोहन ने उसे अपने वस्त्र दिए। वस्त्र उसके शरीर पर ऐसे फिट बैठे मानों दर्जी ने उसके लिए ही सिए हों। वह कपड़ों में चक्रवर्ति सम्राट् से कम नहीं लग रहा था। यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि उसने कभी भिखारियों जैसे कपड़े पहने थे। वह और मनमोहन दोनों एक ही पिता की सन्तान लग रहे थे।

गुणपाल शरीर का थका और मन का उदास था। राजकुमार मनमोहन से मिलने के पश्चात् उसकी उदासी दूर हो गई। थकान के कारण रात को उसे गहरी नींद

आई। प्रातः ठंडी पवन के साथ मनमोहन की निद्रा भंग हुई। वह उठ कर प्रातःकाल के सामायिक आदि कार्य से निवृत्त और स्नान मंजन करवाया, और अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनने को दिए। फिर राज दरवार में जाने के लिए तैयार हुए।



तीन

कला कौशल

मनमोहन और गुणपाल दोनों राजा प्रसन्नकीर्ति के दरवार में पहुँच गए। गुणपाल राज दरवार की शोभा को देखकर आश्चर्य चकित हो गया। राजा प्रसन्न कीर्ति राज दरवार में सब से ऊँचे एक स्वर्ण रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजमान थे। राजा के दोनों ओर नौकर-चाकर-कुछ छत्र लिए खड़े हुए थे, कुछ चंवर ढुला रहे थे। चारों ओर अंग रक्षकों का पहरा था। राज दरवार में दोनों ओर राज पुरुषों तथा मंत्रियों के स्थान वने हुए थे। मनमोहन और गुणपाल ने झुक कर राजा को अभिवादन किया। राजा ने अभिवादन का उत्तर देकर उन्हें योग्य आसन दिया। मनमोहन ने गुणपाल को अपने समीप आसन पर वैठाया।

महाराज गुणपाल की ओर देखकर वोले—मनमोहन ये तुम्हारे साथ कौन हैं ? हमने इन्हें पहचाना नहीं।

मनमोहन बोला पिता जी यह नेपाल नरेश के कुमार हैं। साँयकाल वाग के सामने मुझे मिल गए थे। मैं इन्हें

थीं। पर गुणपाल की तलवार ने तूफान सा मचा रखा था।

जिसके गेड़ में आकर कई औंधे हो गए। जो बचे वे भाग गए। गुणपाल विजयी हुआ। इसके पश्चात् राजा ने दूसरा दौर चलाया। राजा बोले :—देखो सेना अधिपति जी गुणपाल के पास एक गेंद है मैं तुम्हें भी एक गेंद देता हूँ तुम भी सब वीरों को एक-एक गेंद दे दो। तुम्हें भी तथा गुणपाल को भी और योद्धाओं को भी यह समानाधिकार होगा कि तुम और तुम्हारे योद्धा—चाहे शारीरिक बल से चाहे तलवार की शक्ति से गुणपाल के पास से गेंद छीन कर मुझे दे दो। इसी प्रकार गुणपाल भी तुम्हारी गेंद छीन कर मुझे देगा। बस फिर क्या था राजा की बात सुनकर सब योद्धाओं की आँखों में लाली छा गई। अपने जोश में आकर सब ने गुणपाल की चुनौती स्वीकार कर ली और तनकर एक दूसरे को मार भगाने की ताक में लग गए।

[गुणपाल की वीरता देखिए]

फुँकारता वह नाग सम, गुणपाल वीर जब उठा,
कांप गई पृथ्वी, आकाश भी गूँज उठा।
जब चलाई तेग उसने, अभिमन्यु वीर सा लगा,
जो भी सन्मुख आ गया, वह आगे से भगा।



गुणपाल की तलवार ने तूफान मचा दिया।

म्यान में तलवार कर, फिर हाथ लिया कमान को,
मैदान साफ हो गया, जिस ओर छोड़ा बाण को।
कर से शस्त्र छोड़ कर, सब मौन चित्र से खड़े,
कौन मां का लाल जो, उसके सन्मुख आ अड़े।
सभी गेंदें छीन ली, गुणपाल वीर बलवान ने,
राज चरण में भेंट की, तुरन्त ही इक आन में।
वीरता को देख उसकी, जनता ताली मारती,
चन्द्र प्रभा भी लख उसको, थी दूर से निहारती।
राजा भी मन में सोचता, गजब का यह वीर है,
पुण्य प्रताप तेज निराला, वीर क्या महावीर है।
मन मोहन ने भी दौड़ कर, उसे अंक में भर लिया,
क्षत्रिय कुल का वीर तूने, नाम ऊँचा कर दिया।

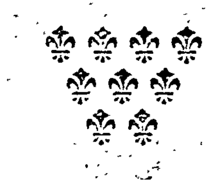
सभी ओर से—वाह ! वाह !! और तालियों की आवाजें आने लगी। कुछ लोग गुणपाल के नाम के नारे भी लगाने लगे। कुछ देर के पश्चात् सब कार्य-क्रम समाप्त हो गया। सब नगर-निवासी गुणपाल का गुणगान करते हुए अपने-अपने घरों को वापिस लौट गए।

गुणपाल की वीरता की धाक सारे शहर में जम गई। क्या बच्चा, क्या बूढ़ा सभी गुणपाल के नाम के तराने गाने लगे। राज भवन में भी गुणपाल के शौर्य की चर्चा हो रही थी मगर एक बात मनमोहन के मन को खाए जा रही थी कि गुणपाल इतना वीर है फिर भी उसे उस के

पिता ने घर से क्यों निकाल दिया, पर वह चाहता हुआ भी न पूछ सका। उधर महाराज का उपमंत्री शैतान सिंह गुणपाल से ईर्ष्या करने लगा था, क्योंकि पहले वह शहर का माना हुआ वीर समझा जाता था। पर गुणपाल ने उसे भी रणचंडी के मैदान में परास्त कर दिया था। सभी उसका मज़ाक कर रहे थे। वह उस अपमान का बदला लेना चाहता था। रात को जब सभी खाने की मेज़ पर बैठे तो वहाँ शैतान सिंह भी आ गया। वह भी वहीं आ बैठा खाना खाने के लिए। उसने जेब से जहर की एक पुड़िया निकाली और आंख बचाकर गुणपाल वाली दाल की कटोरी में डाल दी। शैतान सिंह का बेटा भी वहीं बैठा था उसकी थाली में गलती से दाल की क़टोरी न रखी गई। जब खाना—खाना शुरू हुआ तो शैतान सिंह का बेटा हाथ में एक रोटी लेकर बोला हमें भी तो दाल दो। गुणपाल ने अपने वाली दाल की कटोरी उठा कर शैतान सिंह के बेटे की ओर कर दी। शैतान सिंह ने जब यह देखा तो तड़प उठा और क्रोध में आ कर उस ने ऐसा झटका मारा कि कटोरी दाल सहित दूर फर्श पर जा गिरी। दाल बिखर गई। पास ही महाराज के पालतू कबूतर बैठे थे। एक कबूतर ने ज्यों ही उस दाल के दाने को खाया, वहीं ढेर हो गया। अब बात खुल गई कि शैतान

सिंह ने ही गुणपाल को मारने का षडयन्त्र रचा था। गुणपाल शैतान सिंह की ओर लपका ही था कि शैतान सिंह ने अपनी तलवार निकाल ली और बोला खबरदार अगर आगे बढ़े तो गर्दन उड़ा दूंगा। सोचा था दाल खाओगे तो मर जाओगे पर वह दाव खाली गया, परन्तु अब यह तलवार जहर से बुझी हुई है। जान की सलामती चाहते हो तो वापिस चले जाओ। पर गुणपाल उस की ओर यूं बढ़ने लगा मानो उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं है। शैतान सिंह फिर चिल्लाया—गुणपाल रुक जाओ वरना मुफ्त में मारे जाओगे। कमरे में शैतान सिंह की आवाज़ गूंज उठी। राजा फटी-फटी आँखों से गुणपाल की ओर देख रहा था और गुणपाल से बोला :—"गुणपाल वापिस आ जाओ" हमें तुम्हारी जान की जरूरत है। पर गुणपाल ने जैसे महाराज की आवाज़ नहीं सुनी थी, वह मशीन की तरह आगे बढ़ता गया। शैतान सिंह क्रोध में आ गया और उसने तलवार गुणपाल पे दे मारी। गुणपाल बिजली की भांति एक तरफ हो गया और तलवार का वार खाली गया तलवार भी एक खिड़की में फंस गई। गुणपाल के लिए यही स्वर्ण अवसर था उसने ऐसा घूंसा शैतान सिंह के मुंह पर रसीद किया कि वह पेट के बल ज़मीन पर जा गिरा और मछली की भांति छट-पटाने

लगा, वह फिर उठा, पर गुणपाल ने उसे उसी की तलवार से परलोक पहुँचा दिया। यह देख कर महाराज जी को सुख का स्वांस आया, वह गुणपाल की वीरता से और भी प्रभावित हुआ और सोचने लगा इसे क्या पारितोषिक दूँ ? सोचते-सोचते इस निश्चय पर पहुँचा कि इसे यह पारितोषिक देना चाहिए कि इसे अपना दामाद बना लिया जाये, पर इसके लिये कुमार और रानी से पूछना जरूरी था।



चार

चन्दा के मन की उड़ान

चन्द्र प्रभा ने भी यह सारी घटना अपनी आंखों से देखी थी। सोच रही थीं गुणपाल सुन्दर ही नहीं वीर भी है। कितनी प्यारी इस की आकृति है। शरीर का एक-एक हिस्सा सुन्दरता का जीता जागता नमूना है। शरीर को देख कर ऐसे लगता है मानो किसी कारीगर ने उसे फुरसत में बनाया हो। चन्द्र प्रभा ने कई राजकुमार देखे थे जिन की तस्वीरें उस के पास शादी की खातिर आई थीं, पर गुणपाल उन सब में से अलग हो था। उस की आंखें किसी कमल के फूल से कम न थी और सोचती-सोचती चन्द्र प्रभा न जाने कौन से कल्पना लोक में पहुँच गई। वह चाहती थी कि गुणपाल से कुछ बात करू, पर लज्जा की दीवार भी तो सामने खड़ी थी, उसे कौन फांदे। फिर कुछ सोच कर उसने अपनी दासी कमला को पुकारा। कमला आ गई और साथ ही उसका नौकर फालतू राम भी आ गया। वह बेचारा जरा थथला कर बोलता था। बड़ा सीधा सादा था, एक दस वर्ष के बच्चे में जितनी

समझ होनी चाहिए उसमें थी। राजकुमारी उसे देख कर नाक चढ़ा कर बोली—अरे ! फालतू—मैंने तुझे थोड़े ही बुलाया था तू क्यों आ गया ?

फालतू राम ही...ही...ही करता हुआ बोला :—"र...र...र...राज कुमारी जी मैं...मैं...मैं फालतू जो हूँ। इसलिए चला आया।"

राजकुमारी उसके भोलेपन और थथलाने का अंदाज़ देख कर हंस पड़ी। बेचारे को इसी राज कुमारी ने अपने महल में रख छोड़ा था, नहीं तो सभी उसे निकालने पर तुले हुए थे। फिर राज कुमारी कमला से बोली :—री कमला ! यह तो बता जो नये मेहमान हैं न वो ? क्या नाम है उनका। फालतू राम बीच में बच्चों की तरह हाथ उठाकर बोला :—मैं...मैं...मैं बताऊँ राज कुमारी जी, उस का नाम है "गुणमाल"।

कमला बीच में बोली—अरे गुणमाल नहीं गुणपाल।

फालतू राम बोला—एक ही बा...बा...बात है।

राज कुमारी बोली—देख फालतू तू बीच में टाँग मत अड़ाया कर, मैंने तुझ से थोड़े ही पूछा था। फालतू-राम बोला—फालतू आदमियों से कौन पूछता है। इसी लिए तो मैं फालतू बातें भी कर देता हूँ।

कमला शरारत भरी मुस्कान होंठों पर लाकर बोली—

मगर राजकुमारी जी आप उसके बारे में क्यों पूछ रही हैं ?
"बस यों हीं" । राजकुमारी चुनरी का पल्ला अपने होंठों में दबा कर बोली—"कमला नहीं कुछ बात जरूर है ।"

यह सुन कर चन्दा कुछ झेंप सी गई और फिर उसे हंसती हुई बोली—"चल शैतान कहीं की, मैं तो यूं ही पूछ रही थी ।

फालतू राम ने फिर बीच में टांग अड़ाई, बोला—"मैं बताऊं र...र...र...राजकुमारी जी पूछ रही थी ।"

"भला क्यों पूछ रही थी ?" कमला ने पूछा ।

"नहीं ब...ब...ब...बताऊंगा ।"फालतू राम अड़ गया ।

"अरे ! बताओ न क्यों ?"

"बता दूं"

"हाँ बता दो"

"तो सुनो"—फालतू राम कमला के कान के पास अपना मुँह ले जाकर बोला—

"कोई चीज मंगवानी होगी" यह सुन कर कमला खिलखिला कर हँस पड़ी । फालतू राम उसे हँसते देख गुस्से में आ गया बोला—इसमें ह...ह...हँसने की क्या बात है । जब भी राजकुमारी मुझे बुलाती है कोई न कोई चीज़ मंगवाने के लिए ही तो बुलाती है । फिर राजकुमारी ने फालतू राम की बातों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया । वह कमला से बोली—"क्या वह ... दिन ठहरेंगे

कमला हँसती हुई बोली—घबराइये नहीं, वे अब कहीं नहीं जायेंगे, अगर गए भी तो आप को लेकर...इसके आगे राजकुमारी ने कमला का कान पकड़ कर ज़ोर से मरोड़ा और बोली—कमला, तूँ बातें बहुत करने लग पड़ी है। मैं कुछ पूछती हूँ तूँ कुछ उत्तर देती है।"

फालतू राम फिर बीच में टपका—बोला—हाँ जी—रा-रा-राजकुमारी जी, यह बहुत बातें करती हैं—मैं-मैं-मैंने भी इसे समझाया था, पर यह म-म-मानती ही नहीं।"

राजकुमारी—फालतू राम से बोर हो रही थी उसने उससे पीछा छुड़ाने के लिए उसके हाथ पर दो चाँदी के सिक्के रखे और बोली—जाओ फालतू राम बाज़ार से एक सिक्के का पान और दूसरे का चूना ले आओ। फालतू राम अभी लाया, यह कह कर चला गया। अब कमला ने राजकुमारी को फिर छेड़ा—बोली—राजकुमारी जी अब मिठाई तैयार रखिए भगवान ने मेरी सुन ली है।"

राजकुमारी ने जानबूझ कर पूछा—क्या सुन ली है ?

कमला राजकुमारी को दोनों बाजुओं से पकड़ कर बोली—"अब आप यहाँ चन्द रोज़ की महमान हैं कोई शिकारी आया हुआ है" राजकुमारी ऊपर-ऊपर से क्रोध करती हुई बोली—मैं कहती हूँ कमला मुझे ऐसे मज़ाक ज़रा भी नहीं भाते। कमला कुछ बोलने ही लगी थी कि फालतू

राम भागा-भागा आ गया जो ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था बोला—रा-रा-राजकुमारी जी क्षमा करना दोनों सिक्के आपस में रल गये हैं ज़रा फिर से बताइये, कौन से सिक्के का पान और कौन से सिक्के का चूना लाऊँ।

यह सुन कर दोनों हँस पड़ीं और फालतू राम उनके हँसने का कारण समझने की चेष्टा कर रहा था।

अब पाठक जरा राजरानी के महल की ओर निगाह करें।



पांच

........महारानी से परामर्श

महारानी भी अपनी शैय्या पर आराम कर रही थी समस्त दासियाँ सेवा में उपस्थित थीं, कोई सिर दबा रही थी, कोई पांव । इतनी देर में अचानक ही दासी भागी आई और बोली—महारानी साहिबा महाराज जी पधार रहे हैं, इतना सुनना ही था कि रानी शीघ्र ही उठती हुई महाराज के सन्मुख चली गई । महाराज रानी के पास बैठते हुए बोले—महारानी आज बैठे-बैठे अनायास ही ख्याल आया कि बेटी चन्दा अब विवाह योग्य हो गई है । रानी बोली—"वो तो ठीक है, पर इसके लिए आप ने क्या सोचा ?"

महाराज बोले—यही तो सोच रहा हूँ कि क्या करना चाहिए, इसलिए तुम्हारा परामर्श लेने आया हूँ ।

महारानी बोली—आप स्वामी हैं, जो करेंगे उचित ही करेंगे ! मैं तो आप के साथ ही हूँ ।

राजा—यह जो नेपाल नरेश का पुत्र है इसके बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?

महारानी प्रसन्न होकर बोली—स्वामी आप ने तो मेरे हृदय की बात कह डाली, क्या किसी दासी ने तो आप को नहीं बता दिया ? मैंने जब से उसकी वीरता का कला कौशल रण चंडी के मैदान में देखा है, तभी से मन में यही सोचती हूँ कि इस प्रकार का नवयुवक जिसमें सभी प्रकार के गुण हैं, ढूँढने पर भी मिलना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। महाराज ! उसे प्रसन्न देख कर बोले—अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। अब राजकुमार से पूछ लेना चाहिए। महारानी बोली-राजकुमार इन्कार थोड़े ही करेगा। इतने में राजकुमार मनमोहन स्वयं ही वहाँ पर आ गये और महाराज को प्रणाम करके बैठ गये। महाराज ने उसे सारी बात संक्षेप में बतला दी और उत्तर के लिये मनमोहन की ओर देखने लगे। मनमोहन ने भी उनकी प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता प्रकट की और कहा कि यह हमारा अहोभाग्य है जो हमें गुणपाल जैसा वर मिल रहा है। राजकुमार को अपने से सहमत पाकर महाराज ने अपनी बेटी चन्दा के विचार भी जानने चाहे और एक दासी को चन्दा के लाने के लिए भेज दिया। दासी चन्द्रप्रभा को साथ लेकर आ गई। पीछे पीछे कमला और फालतू राम भी आ रहे थे। फालतू राम सोच रहा था शायद कुछ खाने को मिलेगा। महाराज ने

महारानी को चन्दा से पूछने को कह कर स्वयं मनमोहन के साथ चले गए। महारानी ने चन्दा के आगे गुणपाल की वीरता की खूब प्रशंसा की और बोली—"बेटी क्या गुणपाल तेरे पसन्द है ?"

यह सुन कर चन्द्रप्रभा ने शर्म से सिर झुका लिया। महारानी फिर बोली—बेटी इसमें शरमाने की क्या बात है, अगर वह तुझे पसन्द है तो बता दे।" पर राजकुमारी कुछ न बोली। फालतू राम सोच रहा था कि ऐसी कौन सी मिठाई आ गई है, जिसको महारानी पसन्द करवा रही है। उससे रहा न गया, पूछ ही बैठा। "म-म-महारानी आप क्या बात कर रही हैं?" महारानी खुशी से बोली—"विवाह की" फालतू राम ने सोचा शायद मेरी शादी की बात चल रही है, बोला—न महारानी जी, मैं-मैं-ब्रह्मचारी रहूँगा, मैं शादी न कराऊँगा।" हाँ अगर आपने मुझे बार-बार पूछा तो फिर न कहना; मैं हाँ भी कर दूँगा।" महारानी हँसती हुई बोली—अरे मैं तेरी शादी की बात थोड़े ही कर रही हूँ, मैं तो चन्दा से पूछ रही हूँ और उसकी शादी की बात कर रही हूँ।"

"तो फिर कर दीजिए"—फालतू राम बोला।

"मगर चन्दा कहे भी"

"मुझे पता है चन्दा क्यों नहीं बोल रही है ?" फालतू-

राम बोला।

"भला क्यों" महारानी ने उत्सुकता से पूछा।

व-व-वता दूँ।

"वता दो।"

"र-र-राजकुमारी जी यह चाहती हैं कि पहिले फालतू-राम की शादी हो तव मैं करूँगी।" इतना सुनना ही था कि कमरे में हंसी का फुहारा छूट पड़ा। इसके पश्चात् महारानी ने चन्दा से पूछा और वोली—वेटी ! एक-न-एक दिन लड़कियों को माता-पिता का घर छोड़ना ही पड़ता है। सोचती हूँ तेरे जाने के वाद मैं अकेली रह जाऊँगी।" मां को अधीर देख कर राजकुमारी वोली—माता जी मैं आप को छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगी।" मैं आप के चरणों में ही रहूँगी। महारानी राजकुमारी के वालों को सहलाते हुई वोली—आज तक किसी भी पिता ने अपनी जवान वेटी घर में नहीं रखी और फिर तुझे तो खुश होना चाहिए; तेरा दुल्हा तो "सोना" है "सोना।"

"सोना" फालतू राम वड़वड़ाया और फिर उछल कर वोला महारानी तव तो मेरी शादी भी उसी से कर दीजिए। आजकल सोने का भाव वहुत महंगा है। कमरा एक वार फिर हंसी से गूँज उठा, फालतू राम नहीं समझ पा रहा था कि सभी उसकी वातों पर क्यों हंसते हैं। इसके

पश्चात् राजकुमारी वहां से उठ कर चली गई। कमला ने महारानी जी को बता दिया कि राजकुमारी का मौन ही स्वीकृति का लक्षण है और फिर उन्हें गुणपाल पसन्द भी था। महारानी यह सुन कर खुशी में झूम उठी और बोली भगवान् दोनों की जोड़ी सलामत रखे। फालतू राम फिर बोला–म-म-म-महारानी जी आप किस जोड़ी की बात कर रही हैं," परन्तु महारानी ने उसके मुँह पर एक प्यार भरी हल्की सी चपत लगाई और चली गई। फालतू राम बेचारा देखता ही रह गया और बोला महारानी ने म-म-मेरे प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं दिया। हाँ याद आया मैं फालतू जो हूँ।" इसके साथ ही वह राजकुमारी के महल की ओर अन्धा धुंध भाग गया।

उधर राजकुमारी को कमला ने सताना शुरू कर दिया और बार-बार मिठाई की माँग दोहराती रही। राजकुमारी उससे पीछा छुड़ाना चाहती थी पर वह छोड़ने का नाम तक न ले रही थी और कोई समय होता तो राजकुमारी उसे क्रोध में आकर महल से निकाल देती पर आज उसे पता नहीं क्यों उसकी कड़वी बातें भी अच्छी लग रही थीं। वह एक अनोखी दुनियां में खोई हुई थी। अपने मन ही मन में लड्डू से फोड़ रही थी और न चाहती हुई भी भविष्य की कल्पनाओं में डूबती चली जा रही थी और फालतू राम

सोच रहा था कि यदि मैं भी लड़की बन जाता तो मुझे भी सोने का दुल्हा मिलता। उधर चन्दा मन ही मन में फूल रही थी।

परन्तु कर्म कुछ और ही कह रहे थे। राजकुमारी के भाग्य की पिटारी में न जाने क्या छुपा हुआ था। सुख के डब्बे में दु:ख का काला नाग अपना फन उठाए बैठा था। संसार के परिवर्तन का सुदर्शन चक्र न जाने कब का चल रहा है। प्राणी सोचता कुछ है परन्तु होता कुछ है। ये ही तो कर्म है, इसी का नाम दुनिया है। ये जो कुछ होता है कर्मों का ही खेल है।

पाठक यह सोचते होंगे कि यहाँ कर्म कहाँ से टपक पड़ा, परन्तु तनिक सोचिए एक ओर चन्दा के मन में खुशियों का सागर ठाठें मार रहा है। अनेक प्रकार की आशाओं के दीप अपने हृदय में सँजोए बैठी है। भावी कल्पनाओं के गगन में एक स्वतन्त्र पक्षी की तरह उड़ान भर रही है। न जाने क्या-क्या सोच रही है।

परन्तु दूसरी ओर कर्म अपना ताना-बाना बुन रहे हैं। मकड़ी की तरह जाला बना कर चन्दा को अपने जाल में फंसाना चाहते हैं। उसका कुटिल भाग्य हंस रहा है और बार-बार चेतावनी देता है कि राजकुमारी क्या ...च रही

तुम्हें मेरा भान नहीं मैं एक

वन कर आ रहा हूँ । एक वार तो तुम्हें ऐसा झटका दूँगा कि तुम संभल न पाओगी और अन्तिम सीमा पर जा गिरोगी । वहाँ रोने और चिल्लाने के सिवाए कुछ भी न होगा, यह है मेरी महिमा और विचित्रता ।

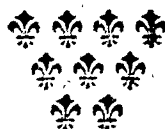
प्यारे पाठको अन्त में हुआ भी ऐसा ही । एक चोर जिसका नाम चटपटा था उसकी जालिम दृष्टि इस नवयौवना राजकुमारी पर पड़ी और उसने निश्चय कर लिया कि इसे चुरा लेना चाहिए । देखिए चन्दा कुछ सोच रही है तथा कर्म कुछ और ही सोच रहे हैं, तथा चोर के मन में भावी कल्पना का सागर हिलौरे ले रहा है । अब आप देखिए कि क्या होता है । कर्मों के सामने किसी का वश नहीं चलता कर्म बलवान् है ।

इसीलिए भगवान् महावीर ने भी अपने प्रवचन में कर्म वाद को एक महत्व पूर्ण स्थान दिया है, परन्तु जैनागमों में तो इसकी व्याख्या के पृष्ठ के पृष्ठ भरे पड़े हैं कर्म आखिर कर्म है । इसकी महिमा अपरम्पार है । लेखक की पंजावी भाषा में पढ़िये :—

काफ़ कर्म उदय जदों आंवदा ए,
पुट्ठा किए वगैर कदे छड़दा नहीं ।
अवतार होवे भावें सामान होवे,
लेखा लिए वगैर कदे टलदा नहीं ।

दया करुणा किसे ते न आंवदी ए,
अपनी चाल चलदा पिछे हटदा नहीं।
गरीब ते अमीर नूँ पिटा-पिटा मारे,
नफा इक पाई दा, वी छड़दा नहीं।
श्री रामचन्द्र दुनियां दे अवतार कोलों,
खाक दर-दर दी छनवाए दित्ती।
सीता हरी ते भाई नूँ लग्गी शक्ति,
अक्ल हैरान ते परेशान कित्ती।
महासती पतिव्रता अंजना नूँ,
दागी कर घरों निकलवाए दित्ता।
नंगा नाच नचवाया सती द्रौपदा तों,
भरी सभा दे अन्दर जलील कित्ता।
पूर्ण भक्त नूँ नाकों चने चबाए दित्ते,
ते कुएँ दे विच डलवाए दित्ता।
काशी दे बाजार विच राजा हरिश्चन्द्र तों,
झाड़ू भंगी दा उठवाए दित्ता।
रूप बसन्त नूँ दुनियां जानदी ए,
भाई नूँ भाई से जुदा करवाए दित्ता।
पांच सो शिष्य मुनि खन्दक जी दे,
घानी दे विच पिलवाए दित्ते।
रावण जरासिन्ध कुत्ते दी मौत मारे,
सारे जग दे उत्ते बदनाम कित्ते।
श्रीकृष्ण जी दी डांवां डोल हो गए,
द्वार का जली ते प्यासे प्राण दित्ते।

कैरों पांडव दी दशा विगाड़ दित्ती,
भाइयों के भाईयों से सर कटवाए दित्ते ।
गुरु गोविन्द सिंह जी दे बाल दोवें,
किस तरह दिवारां दे विच चिनवाए दित्ते ।
कहाँ तक वर्णन करां लीला कर्म दी ए,
सिकन्दर जहे बादशाह रुलाए दित्ते ।
जिहनां नूँ फ़कर सी अपनी कमान उत्ते,
पृथ्वीराज जहे कैद कराए दित्ते ।
वड़े-वड़े राजा नष्ट से भ्रष्ट कित्ते,
"सुरेन्द्र" देख ले कर्म क्या नाच नचवाए दित्ते ॥



छः

........चन्द्र प्रभा हरण

चटपटा चोर भी उस समय का माना हुआ चोर था। सारी प्रजा उसके नाम से काँपती थी। उस के पास चोरों की एक बड़ी फौज़ थी। वह ज़ालिम, निर्दयी और पापी था। उसका घर एक भयानक अटवी में था। जिसका किसी को पता न था। चटपटे की शक्ल भी उसके नाम की तरह भयानक थी। बड़ी-बड़ी मूंछें, काला रंग, बड़ी-बड़ी भौंएँ और मोटे-मोटे होंठ, उसके चेहरे की कल्पना से ही मन काँप उठता था। अच्छा भला व्यक्ति भी उसे देखकर भयभीत हो जाता था। वह जिस ओर जाता था तूफान आ जाता था। गाँव के गाँव दहल उठते थे, लोग रो उठते थे, चीख उठते थे और वे उनकी चीखें सुनकर मुस्कराता था, हंसता था। जब वह हंसता था तो उसकी शक्ल और भी भयानक हो जाती थी। जिस सुन्दर कन्या या नारी को वह देखता उठा कर ले जाता और उसे अपनी गुफा में जाकर बन्द कर देता। अब उसकी नजर चन्द्रप्रभा पर थी। उसकी सुन्दरता ने चटपटे का मन हर लिया था। ऐसी सुन्दर लड़की

उसने अपने सारे जीवन में न देखी थी और वह किसी मौके की तलाश में था कि कब मौका लगे और मैं चन्द्र-प्रभा को ले जाऊँ।

× × × × × ×

[अब ज़रा पाठक गण राजकुमारी के बाग की ओर ध्यान दें।]

एक दिन राजकुमारी चन्द्रप्रभा अपनी सखियों के साथ हरे भरे उद्यान में सैर करने के लिए निकली। वह अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी। चारों ओर आनन्द की लहरें दौड़ रही थीं। सहेलियाँ वहाँ राजकुमारी जी को छेड़ रही थीं। हंसी मज़ाक कर रही थीं। फालतू राम भी वहीं था। जब राजकुमारी की सहेलियाँ हंसतीं तो वह भी हंस पड़ता और जब सहेलियाँ चुप होतीं तो वह भी चुप कर जाता। सहेलियाँ फालतू राम से बोलीं—फालतू राम जी अब तो राजकुमारी जी पराए घर चली जाएगी तब तो तुम अकेले रह जाओगे।"

फालतू राम यह सुन कर बच्चों की तरह रोने लगा और थोड़ी देर बाद चुप करके बोला—मैं...मैं...मैं भी वहीं शादी कर लूँगा। जहाँ राजकुमारी जी शादी करवाएंगी।" यह सुन कर सभी हँस पड़ीं। राजकुमारी बड़े स्नेह और प्यार से फालतू राम से बोली मैं तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं

जाऊँगी। फालतू राम बोला—क...क...कुमारी जी कोई गुणपाल मेरे लिए भी ढूँढ दें।" राजकुमारी उसका भोला सा उत्तर सुनकर मुस्करा दी। उसके पश्चात् सभी सहेलियां शाही बगीचे में घुस गईं और राजकुमारी भी उनके साथ साथ चली और भिन्न-भिन्न फूलों के रंगों को निहारने लगी। इतने में घोड़े पर एक व्यक्ति वहाँ आ गया और घोड़े से उतर कर बोला—"ठहरो, राजकुमारी इधर आओ।" सभी सहेलियों ने जब उस पुरुष को देखा जो कोई चोर दिखाई देता था, ठग सा लगता था, तो भय से कांपने लगीं। कुछ मूर्छित हो गईं और कुछ भाग गईं, कुछ चिल्लाने लगीं।

राजकुमारी उसे देखकर बड़े ज़ोर से चिल्लाई बचाओ, बचाओ। फालतू राम ने जब उसे देखा तो उसे क्रोध आ गया। वह उसकी ओर भागा और बोला—ओ...च...च... चोर के बच्चे भाग जा यहाँ से वरना मार-मार कर तेरा त...त...त...तरबूज़ बना दूँगा। जानता नहीं मेरा नाम फालतू राम है।" पर चटपटे ने उसके ऐसी लात पेट में जमाई कि वह वहीं औंधा हो गया था। चटपटा फिर राजकुमारी की ओर बढ़ने लगा। राजकुमारी पीछे हटने लगी और बोली चले जाओ यहाँ से, जानते नहीं यह शाही उद्यान है।" यह सुन कर चटपटा कहकहा मार कर

हंसा और बोला—मैं तुम्हें इससे भी बढ़िया उद्यान में ले जाऊँगा। अभी तुम मेरे साथ चलो और देखते ही देखते उसने राजकुमारी को उठा लिया और घोड़े पर बैठा कर साफ निकल गया।

जब फालतू राम को होश आई तो वह महलों की ओर रोता चिल्लाता हुआ भागा और उसके पीछे-पीछे राजकुमारी की सहेलियाँ भी थीं जो रोती हुई जा रही थीं। फालतू राम ने महारानी से रो-रो कर सारी घटना कह सुनाई। महारानी एकाएक यह सुन कर बेहोश हो गई। उधर महाराज को भी यह अशुभ समाचार सुनाया गया। बड़े दुःख दर्द भरे शब्दों में सुन कर महाराज की आज्ञानुसार बात की बात में चहुँ दिशाओं में चोर की खोज में सैनिकों की एक टुकड़ी आकाश के बादलों की तरह छा गई, परन्तु कुमारी का सही सलामत पता लेना तो दूर रहा नामोनिशान तक भी न मिला। महारानी को बार-बार मूर्छा आ रही थी। महाराज का हृदय बैठा जा रहा था, गुणपाल और मनमोहन अधीर हुए जा रहे थे। सभी सैनिक घबराए हुए थे। महलों में मायूसियों के मानों बादल छा गए। महाराज महारानी को बार-बार धैर्य दे रहे थे। पर उनका अपना दिल रो रहा था। आँखों से आँसू श्रावण की बरसात की तरह बरस रहे थे। होनी की और कर्मों

चन्द्र प्रभा हरण



राजकुमारी को उठाकर वह घोड़े पर हवा हो गया ।

की महिमा निराली है, प्रकृति की लीला न्यारी है, अनोखी है, विचित्र है—

जहाँ कल थी खुशियाँ, आज मातम छा गया।
न जाने खुशी कहाँ गई, मातम कहाँ से आ गया॥
कर्मों की है महिमा न्यारी, भेद न इसका पाया।
कहीं किसी को दे दे खुशियाँ, कहीं आफत बन गया॥

× × × ×

संध्या होने लगी सूर्य देवता भी अस्त हो गए। महाराज के सैनिक वापिस मुँह लटकाए हुए लौट आए और बोले—"महाराज! हमने सारा शहर और जंगल का पत्ता-पत्ता छान मारा! राजकुमारी का कहीं भी पता न चला।" जब महारानी ने यह सुना तो पागलों की तरह चिल्ला उठी और महलों के बाहिर की ओर भागी।

"चन्दा-चन्दा मेरी चन्दा तू कहाँ है" और जोर-जोर से फूट-फूट कर रो उठी—"आह! न जाने मेरी बिटिया किस हाल में है। उसने कुछ खाया भी है या नहीं, चन्दा! तू कहाँ गई, आवाज़ क्यों नहीं देती, मैं तुझे पुकार रही हूँ। यह कह कर महारानी ने अपना सिर महलों की दीवारों से मारना शुरू कर दिया। महाराज ने उसे ऐसा करने से रोका और बोले—"महारानी, चन्दा तुम्हारी ही तो नहीं हमारी भी तो बेटी थी। हमने भी तो हौंसला किया है। धीरज रखो, हम चन्दा के लिए देश का कोना कोना

छान मारेंगे" और स्वयं भी बच्चों की तरह हिचकियाँ लेने लगे। महाराज ने महारानी को कुछ देर के पश्चात् खाना खाने के लिए कहा किन्तु पर वह माँ रोटी कैसे खाए जिसकी जवान बेटी को कोई उठा ले गया हो, बोली—"महाराज आप खा लें मुझे भूख नहीं है।" गुणपाल और मनमोहन ने भी महारानी को हौंसला दिया, बोले–महारानी जी आप खाना खाएं हम दो जो हैं,जिसने हमारी राजकुमारी को उठाया है हम उसके हाथ तोड़ देंगे। महारानी हम उसकी आँखों को फोड़ देंगे, जिसने हमारी राजकुमारी की ओर देखने की हिम्मत की है।" किसी तरह महारानी को खाने की मेज पर लाया गया। आज चन्दा की कुर्सी खाली पड़ी थी। महारानी दिल को पत्थर बनाए रोटी को मुँह में डालती थी पर वह बाहर आ रही थी और महारानी को देखते ही देखते उल्टी आने लगी, वह खाना वहीं पर छोड़ कर अपने कमरे में लेट गई। महाराज ने भी खाना नहीं खाया, वह भी अपने कमरे में जा लेटे। सारी रात आँखों में ही व्यतीत हो गई। सुबह महाराज दरबार में उपस्थित हुए और महामन्त्री से सलाह पूछी। महाराज बड़े दुःख से बोले—"मन्त्री जी! हमें दुःख इस बात का है कि हमारे राज में एक भी शूरवीर नहीं, विदेशी लोग जब इतिहास में यह घटना पढ़ा करेंगे तो हमारा

उपहास उड़ाया करेंगे । क्या यह हमारे राज्य पर कलंक नहीं है ?

सोचो, कोई उपाय करो, कुछ भी करो हमें हमारी राजकुमारी से मिला दो ।"

इसके उत्तर में मन्त्री जी ने कहा कि "राजन् ! इस का केवल एक ही उपाय है कि आप बीड़ा डाल दें और घोषणा करवा दें कि जो कोई भी व्यक्ति राजकुमारी का पता देगा तथा चोर को पकड़ देगा, उसी के साथ राज-कुमारी का पाणि ग्रहण करवा दिया जायेगा, जो ऐसा करने के लिये तैयार हो वह आगे बढ़ कर पान का बीड़ा ग्रहण कर सकता है ।"

राजा ने मन्त्री के सुझाव को स्वीकार करते हुए उप-र्युक्त घोषणा करने के लिये तैयार हुए कि मन्त्री जी ने बीच में ही कहा कि राजन्, तनिक गुणपाल तथा मनमोहन को भी आने दीजिए ।"

राजा को मन्त्री की बात पसंद आ गई और कुमारों के आने तक घोषणा का कार्य स्थगित कर दिया गया ।

—:(०):—

सात

........शून्यचित्त मनमोहन

राजकुमार मनमोहन को भगिनि चन्द्रप्रभा के अपहरण का ज्ञात हुआ तो एक दम ही शून्य चित्त सा हो गया और व्याकुल से हो गए। कुछ संभल कर बोले—"भैया गुणपाल जी यह तो बड़ा बुरा हुआ।" गुणपाल शोक-सिन्धु में डूबते हुए कहने लगे "गज़ब! गज़ब! गज़ब"—और चक्कर खाकर गिर पड़ा।

मनमोहन बोला—"अरे तुम्हें क्या हो गया?" अपनी भुजाओं से गुणपाल को उठाता हुआ बोला—गुणपाल, मनमोहन से लिपट जाता है और आंसू बहाता है। मनमोहन ने कहा—भैया जी आप तो गम्भीर हो, शूरवीर हो, तनिक धैर्य से काम लो इतने अधीर मत होओ हम शीघ्र ही चन्दा को खोज निकालेंगे। भले ही हमें आकाश-पाताल एक क्यों न करना पड़े।

उत्तर में गुणपाल ने कहा—देखो, उस दुष्ट ने ज़रा भी विचार नहीं किया। उसने राजकुमारी का अपहरण करके हमारी वीरता को चुनौती दी है। उसको इस कुकृत्य का

फल चखाना ही पड़ेगा।" मनमोहन बोला—"धन्य हो! भैया जी मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी, और मुझे पूर्णविश्वास है कि आप ही मेरी बहिन को शीघ्र ही ढूंढ निकालेंगे।" मनमोहन गुणपाल को धैर्य दे रहा था पर उसका मन अन्दर ही अन्दर बैठा जा रहा था। दिल ही दिल में सोच रहा था कि न जाने बहिन इस समय किस अवस्था में है। उस पर क्या-क्या मुसीबतें आती होंगी, उसके दिल पर न जाने क्या-क्या गुजर रही होगी। इन्हीं विचारों में डूबा हुआ अन्दर ही अन्दर उसका मन रो रहा था। इसी तरह से सारी रात्रि व्यतीत हो गई।

प्रभात होते ही दोनों कुमारों ने स्नान मंजन किया तथा सभी प्रकार के कार्य-क्रम से निवृत्त होकर राजसभा के लिए प्रस्थान कर गए। मनमोहन और गुणपाल को आते हुए देख कर राजा का मन भर आया। मनमोहन भी दौड़ कर पिता के चरणों पर जा पड़ा। अधीर स्वर से बोला—"पिता जी यह क्या हो गया ?" राजा मनमोहन को उठाता हुआ तथा कण्ठ से लगाता हुआ बोला—"पुत्र यही तो कर्म की विचित्र गति है। जो कुछ होना था वह तो हो गया, अब हमारे लिए यही श्रेयस्कर है कि हम बुद्धि से काम लें।" गुणपाल बीच में बोल उठा कि '

उसके कर्म का फल उसको चखाना चाहिए।"

राजा—वीर योद्धा गुणपाल मैंने अभी-अभी यह घोषणा करने का निर्णय किया है।

पान का बीड़ा डालते हुये बोले—"जो राजकुमारी को ढूंढ निकालेगा तथा चोर को राज सभा में ले आएगा या उसके जीवन का अन्त कर देगा, उसके साथ राजकुमारी का संबंध किया जाएगा।" इस प्रकार की घोषणा सुनते ही राज सभा में सन्नाटा छा गया। किसी ने बीड़ा तो क्या उठाना था मुंह से बोल तक भी न निकला। इस अवस्था को देख कर फालतू राम बोला "म... म ...म...महाराज बीड़ा तो मैं भी उठा लेता पर आप की घोषणा यह है कि राजकुमारी को ढूंढने वाले से राजकुमारी का विवाह कर दिया जाएगा और मैं राजकुमारी को अपनी बहन मान चुका हूँ।" उसकी बात सुन कर सब दरबारी मुंह में रुमाल देकर हँसने लगे। राजा ने फालतू राम की पीठ ठोक कर कहा—"शाबास, किन्तु यह काम तुम्हारे वश का नहीं।" फिर राजा ने सारे दरबार में अपनी नज़र घुमाइ और गरज़ कर बोला—"क्या हमारे दरबार में एक भी ऐसा वीर नहीं है जो इस बीड़े को उठाए ? क्या यहां पर सारे हिजड़े ही बैठे हुए हैं, क्या यहां पर कायर और बुज़दिलों की ही भरमार है, क्या यहां पर कोई क्षत्री

वीर नहीं है ?" इन शब्दों को सुनकर गुणपाल खड़ा हो गया और वोला—"महाराज ऐसा न कहिए, अभी क्षत्रिय वंश समाप्त नहीं हुआ है और न होगा। लाईए पान का बीड़ा, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं राजकुमारी को लाकर छोड़ूंगा और तलवार निकाल कर वह क्रुद्ध सिंह की तरह गरजा—

उठाया जिसने कुमारी को, उसकी वुद्धि भ्रष्ट हो गई।
समझ लेना मन में राजन्, मौत उसकी आ गई॥
जीवन नैया आ फंसी, उसकी अब मझधार में।
सुख की नींद न सोने दूंगा, अब उसे संसार में॥

उस की वहादुरी भरी प्रतिज्ञा से महाराज वहुत खुश हुए और सब राज-दरवारी आश्चर्य चकित हो गए। महाराज ने उसे प्रसन्न होकर एक अपनी अनोखी तलवार भेंट की और वोले–इस मेरे राज्य में जो भी वस्तु आपको पसन्द हो ले सकते हैं। गुणपाल ने अश्वशाला में जाकर एक घोड़ा पसन्द किया और पांचो हथियार लगाकर उस घोड़े पर आरूढ़ होकर उत्तर दिशा की ओर चल दिया। घोड़ा हवा से वातें करता हुआ जा रहा था शहर से निकल कर अव जङ्गल में से गुज़र रहा था। घोड़े पर वैठा हुआ गुणपाल ऐसा जान पड़ता था मानों कोई देवकुमार जा रहा है।

घोड़ा ज्यों त्यों करके जङ्गल में निरन्तर वढ़ता जा

रहा था उसकी टप-टप की ध्वनि कहीं से कहीं जा रही थी। घोड़ा इतनी तीव्र गति से जा रहा था कि उसकी मार्ग में चलने वाले पथिक भी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। बहुत दूर निकल जाने पर एक बहुत सुन्दर स्थान आ गया। वहां पर गुणपाल को एक जैन महात्मा नज़र आए। वे महात्मा एक बड़े विशाल वट वृक्ष के नीचे तल्लीनता के साथ ध्यान मुद्रा में खड़े थे। महात्मा को देखते ही गुणपाल घोड़े की पीठ से उतर पड़ा और महात्मा के चरण कमलों में जा पहुँचा और नमस्कार कर बैठ गया सोच रहा था महात्मा जी की तपस्या कितनी कठिन है। जंगल में अकेले कैसे रहते होंगे। वह अभी सोच ही रहा था कि महात्मा जी ने अपने नेत्र खोल दिए। गुणपाल ने पास रक्खे फलों को महाराज की सेवा में भेंट करने लगा। महात्मा जी मुस्कराए और बोले कि—"बच्चा ! हम यह कन्द-मूल नहीं खाते और मैं एक ही बार आहार लेता हूँ। यहीं से कुछ दूरी पर तिलकपुर नगर है मैं वहीं से भिक्षा मांग कर लाता हूँ और अपना उदर भर लेता हूँ। गुणपाल बोला—"महाराज, इस दास को भी सेवा का मौका दीजिए।"

महात्मा जी उसके सेवा-भाव को देख प्रसन्न हो गये और बोले—वत्स ! हम तुम्हें कुछ उपदेश देना चाहते हैं

अगर तुम उसका पालन करोगे तो हम समझेंगे कि तुमने हमारी सेवा कर दी ।

गुणपाल बोला – महाराज विश्वास रखिए कि मैं प्राण देकर भी आपके प्रवचनों का पूर्णतया पालन करूँगा ।

महात्मा का उपदेश

इस असार संसार में अनेक प्राणी जन्म लेते हैं और नट की भान्ति अपनी जीवन लीला दिखाकर चले जाते हैं । उनको कोई याद नहीं करता क्योंकि उनका जीवन कीड़े मकौड़े की तरह जन्म लेकर मर जाना मात्र ही है परन्तु जो अपने आदर्शों से, अपनी विशेषताओं से, अपने गुणों से, अपने जनहित कार्यो से, इस मानव जगत को चमत्कृत कर जाते हैं वे मर कर भी अमर तथा अदृश्य होकर भी दृश्य रहते हैं । उनका जीवन युग-युगान्तर तक मानव को प्रगति की प्रेरणा देता है । भगवान महावीर ने स्थान-स्थान पर अपने प्रवचन में फरमाया है कि "इस प्राणी को मानव जीवन का मिलना अत्यन्त दुर्लभ है तथा इससे भी कठिन मानवता का मिलना है क्योंकि यह जीवन एक कांच के सामान है जो एक बार टूट जाने पर फिर जोड़ा नहीं जा सकता । जिस प्रकार दर्पण टूट जाने पर उसका जुड़ना कठिन है उसी प्रकार जीवन के टूट जाने पर इसका भी जुड़ना कठिन है ।" यह जीवन अनन्त पुण्योदय

से मिलता है, बार-बार मिलना कठिन है। इसके विषय में एक कवि ने कितने मार्मिक शब्दों में कहा है कि –

दुर्लभ लाधो मनुष जमारो अनार्य देश मंझार नहीं,
आर्य देश उत्तम कुल उपन्यो मध्यम कुल अवतार नहीं।
पूर्ण इन्द्रिय लंबी आयु, देही में रोग विकार नहीं,
इम जाणी जिन धर्म आराधो यह अवसर बारंबार नहीं।

अपने उपदेश को जारी रखते हुए महात्मा ने कहा कि—

जगत का क्या भरोसा है फकत दो दिन का मेला है,
जवानी जिसको कहते हैं यह एक मिट्टी का ढेला है।
बड़े ऊंचे मकां वाले पड़े जब काल के पाले,
तो देखा हाथ में उनके कौड़ी है न धेला है।

हे वत्स ! इस प्रकार यह जीवन नश्वर है और जिस जीवन में धर्म रूपी रंग नहीं होता वह निस्सार होता है, फीका होता है। धर्महीन मानव से तो पशु भी अच्छा होता है। जैसे कवि के शब्दों में ही देखिए क्या कहता है—

"धर्म का जीवन ही जिन्दगी है, बिना धर्म के बेकार जीवन,
मनुष्य जीवन अमूल्य वस्तु, न मिलता ये बारंबार जीवन॥
जो धर्म बच जाए जान देकर, बला से जाए सौ बार जीवन,
एक जीवन तो चीज क्या है, निसार इस पर हजार जीवन॥
है मौत बेशक महा भयानक, ग्रास हर इक का कर रही है,
पर धर्म है इक ऐसी शक्ति, कि मौत भी जिससे डर रही है॥"

धर्म का जीवन ही वास्तव में जीवन है। इसके विना जीवन-जीवन नहीं वह तो केवल पृथ्वी लिए एक भार रूप

है। यदि मानव के जीवन में नियमोपनियम नहीं है तो उसके जीवन में और एक पशु के जीवन में कोई अन्तर नहीं रह जाता। यदि तुम अधिक नहीं तो कम से कम इन सात कुव्यसनों का त्याग करें, जो जीवन के लिए विष के समान हैं। प्रत्येक व्यक्ति को जो जीवन सुख और शान्ति के साथ व्यतीत करना चाहता है उसे तो इन सात बातों से अवश्य ही अलग रहना चाहिए। जैसे कि :—

१. शिकार खेलना। २. जुआ खेलना। ३. चोरी करना। ४. मांस भक्षण करना। ५. मदिरा पान करना। ६. पर स्त्री गमन करना। ७. वेश्या गमन।

प्रत्येक नर-नारी को प्राथमिक साधना की दृष्टि से इन सात कुव्यसनों का आजीवन के लिए त्याग करना ही श्रेष्ठ है। दुर्व्यसनों के त्याग से ही मानव जीवन का उत्थान एवं कल्याण होता है।

गुणपाल ने हाथ जोड़ कर महात्मा को लाख-लाख प्रणाम किया और बोला :—"महाराज आपको सहस्रों प्रणाम, आपने मेरी सोई हुई आत्मा को जगा दिया। मैं आपके बतलाए हुए उपदेशों पर चलूंगा। मैं आज से यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में मैं न अपेय का पान करूंगा न अभक्ष का भोजन करूंगा। सभी को अपने समान मान कर उसका हित साधने का प्रयत्न करूंगा

तथा अपनी विवाहिता के उपरान्त सभी स्त्रियों को माता-भगिनी मान कर चलूँगा । मैं कभी भी किसी का सत्त हरने का प्रयत्न नहीं करूंगा । यथा शक्ति सब की रक्षा करूंगा । महात्मा ने एक वार फिर कहा कि वेटा—

"नियम पे जो जीवन दे, लाखों में एक इन्सान होता है ।
करोड़ों कंकड़ पत्थरों में, ज्यों कोई हीरा एक होता है ।"

गुणपाल हाथ जोड़ कर बोला—

"महाराज क्षत्री हूँ मैं, प्रतिज्ञा पूर्ण निभाऊंगा,
धर्म-कर्म से न कभी, कदम पीछे हटाऊंगा ॥
वचन अपने पर कायम, क्षत्रीय वीर रहते हैं,
जमाना लाख बदले, पर वे हमेशा गंभीर रहते हैं ॥
भले बिजली गिरे उन पर, भले अणुबम बरस जाएँ,
मुसीबत पर मुसीबत हो, वे इमान रहते हैं ॥
सहन कर चोट सीने पर, क्षत्री बढ़ते हैं आगे को,
नहीं हटते हथेली पर, उठाए जान रहते हैं ॥

गुणपाल बोला—"गुरुदेव ! आज का दिन धन्य हो जो कि आप जैसे निस्पृह पथ प्रदर्शक की छत्र-छाया प्राप्त हुई । अब इतनी और कृपा करें कि जो आत्मोन्नति में सहायक हो । आपत्तियों का निवारक हो और सुख शान्ति प्रदायक हो, ऐसा कोई अमोघ मन्त्र प्रदान कीजिए ।" यह सुन कर महात्मा प्रसन्न होकर बोले—हे देवानु- प्रिय ! हम तुम्हारे कथन के अनुसार लो हम तुम्हें एक मंत्र देते हैं, जो हर समय साथ देने वाला है । इससे अध्यात्मिक शान्ति और

मुनि दर्शन



गुरुदेव कोई सुख शान्ति प्रदायक अमोघ मन्त्र दो।

आनन्द मिलता है इसकी महिमा त्रिभुवन तक विस्तृत है। वड़े वड़े महान से महान कष्ट इस मंत्र के जाप से क्षण भर में भाग जाते हैं। इसकीआराधना करने से मरिचि ने तीर्थंकर पद प्राप्त किया। सीता सती ने अग्नि का जल वनाया,मैंना सती ने श्रीपाल का कष्ट दूर किया, सेठ सुदर्शन ने सूली का सिंहासन वनाया। सोमा सती ने सर्प को फूल माला वनाया सुभद्रा सती ने इसी के प्रभाव से कच्चे धागे से छलनी से नीर निकाल कर चंपा के द्वार खोले तथा इसी की अवमानना (असातना) करने से संभूम चक्रवर्ती समुद्र में विनाश को प्राप्त हुआ। इसको तुम विधि सहित ग्रहण करो।" ऐसा कहकर महात्मा ने उसे पूर्ण विधि वता दी।

गुणपाल—गुरुदेव मैं इस मन्त्र का सदैव स्मरण करूंगा तथा इसकी पूर्ण आराधना करूंगा।

इस प्रकार कह कर गुणपाल उस मन्त्र के ध्यान में मग्न होकर शरीर के भा नको भूल गया।



आठ

........चटपटा हवा हो गया

चटपटे का घोड़ा हवा से बातें करता हुआ जा रहा था, और राजकुमारी रो रही थी ! जोर-ज़ोर से चिल्लाह रही थी ! पर सुनने वाला कौन था। रोती हुई राजकुमारी से चटपटा बोला :—बस ! खामोश हो जाओ, क्योंकि अब तुम शेर के पंजे में आ चुकी हो। यहां से किसी भी प्रकार तुम्हारा छुटकारा नहीं हो सकता, संसार की कोई शक्ति आप को नहीं छुड़ा सकती। इस बात को सुन कर राजकुमारी ने एक दांव खेला। कुछ सोच कर राजकुकारी मौन हो गई। राजकुमारी को इस प्रकार चुपचाप व गम्भीर देख कर चटपटा बोला— "क्यों राजकुमारी जी ! आप किस विचार में पड़ गई हो ?" राजकुमारी ने कहा :—आप ने मुझे इस प्रकार चुरा कर मेरी अभिलाषाओं को मिट्टी में मिला दिया, मेरे दिल में एक ऐसे व्यक्ति के प्रति आदर भाव था जो अति शूरवीर है, वैभव सम्पन व गुणियों का आदर रखने वाला है। भले ही वह जँगलों में रहता है। उस को जब पता चलेगा तो वह मुझे पाताल में से भी निकल कर ले

जायेगा।" चटपटा सोचने लगा,—ऐसा व्यक्ति कौन है जो मेरे से भी बढ़ कर शक्ति शाली है और जँगलों में रहता है।

वह पूछने लगा :—वह कौन है ?

राजकुमारी बोली :—वह तो एक शक्ति शाली शूरवीर है चाहे संसार उसे दस्यु के नाम से पुकारता है। उस वीर का नाम 'चटपटा' है! 'चटपटा' नाम उस की अंगूठी से पढ़ लिया था, एक विकट चटपटा अपना नाम सुनते ही खुशी से उछल पड़ा। कह-कहा मार कर कहने लगा राजकुमारी जी धन्य है आप की परख को। आप एक बुद्धि मति, विदुषी राजकुमारी हो। वास्तव में आप ने योग्य व्यक्ति चुना है। जो एक अत्यन्त बलवान् सर्व कलाओं का ज्ञाता शूरवीर है। "मुझे महान् आश्चर्य है आप राज महलों में रहते हुए उसे कैसे जानती हो और क्यों कर उस से प्रभावित हुई।"

राजकुमारी बोली :—गत वर्ष राजधानी पर उस ने आक्रमण किया था। तब उस का सामना शाही सेना के साथ हो गया। उस समय उस ने अनोखी वीरता दिखाई थी। सैकड़ों सैनिकों के साथ अकेला युद्ध करता रहा और 'अभिमन्यु' के समान अपना पराक्रम दिखा कर बहुत से सैनिकों को मृत्यु के मुख में धकेल दिया। बहुत

से भाग निकले कोई भी उस के सामने न टिक सका। तभी से मैं उस के पराक्रम की कायल हूँ, तभी से मैं उस वीर के तराने गाती रहती हूँ। लेकिन मैं उस की तस्करवृत्ति का विरोध करती हूँ। ऐसा लूट आदि का काम नहीं करना चाहिए। वीरता को सही तरीके से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। अगर मैं उस से मिल सकी तो उसे अद्वितीय आदर्श वीर बना दूंगी। लेकिन सख्त अफ़सोस! आप ने मेरी सभी भावनाओं पर पानी फेर दिया? मैं अब भी आप से अनुरोध करती हूँ, मुझे छोड़ दो। कि मुझे मेरे मार्ग पर चलने दो।" राजकुमारी का कथन सुन कर चटपटा मन ही मन में अत्यन्त प्रसन्न हुआ और चेहरे का नकाब उठा कर कहने लगा कि फिर तो तुम्हारी साधना सफल हुई। मैं ही वह चटपटा हूँ। अगर तुम्हें विश्वास नहीं हो तो देखो! यह नामांकित मुद्रिका। मैंने भी जब से तुम्हारे रंग रूप आदि के बारे में सुना था तभी से मैं तुझे प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था। आज वह अवसर भी आ पहुँचा। तेरे कथन के अनुसार तस्करवृत्ति का त्याग कर आदर्शता प्राप्त करने के लिए तैयार हूँ।"

चन्द्रप्रभा बनावटी हँसी हँसते हुए बोली :—वाह, यह तो अति प्रसन्नता की बात हुई। अब पहले मुझे अपना अनुष्ठान पूर्ण करना होगा।

"क्या अनुष्ठान करना है तुमको" ?

चटपटे ने उत्सुकता से पूछा :—"वह क्या ?" "यही की जब आप से भेंट हो जाये तो एक वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूं ! भगवान् की स्तुति करूं और सभी तरह के धार्मिक क्रिया काण्ड करूं । चटपटा बोला :—"वाह खूब एक वर्ष तक इन्तज़ार करूंगा।"

इस प्रकार वार्तालाप करते हुए वह उसे अपने निवास में ले गया और उसे एक महल भी दे दिया । भजन पाठ करने के लिए सामग्री भी दे दी। साथ में दो दासियां भी दी । राजकुमारी ने सोचा, एक वर्ष की अवधि में गुणपाल या मनमोहन मुझे छुड़ा ही लेंगे और वह प्रभु भजन में मग्न हो गई । चटपटा शुक्र मना रहा था कि राजकुमारी मान तो गई । एक वर्ष का क्या है पलक झपकते ही बीत जायेगा "वह मान तो गई।"

उस ओर गुणपाल जो नवकार मंत्र के ध्यान में लीन था उसे काफी समय व्यतीत होने के बाद विद्युत से भी तीव्र प्रकाश नज़र आया और क्षण-भर में ही लुप्त हो गया । उसके मन में एक संन्देह उत्पन्न हुआ कि, "यह प्रकाश किस वस्तु का था और अब कहां चला गया । इन विचारों को लेकर महात्मा के पास आया और प्रणाम करके बोला—हे ! गुरुदेव मुझे एक विचित्र प्रकाश सा दिखाई

पड़ा वह क्या माया थी ?" महात्मा जी बोले—हे देवानु-
प्रिय ! तुम्हारे पूर्व पुण्योदय से अल्प काल में ही तुम्हारी
साधना पूर्ण हुई है। यह प्रकाश पूर्णता का चिह्न है और
तुम्हारे हृदय में सदैव रहेगा और भविष्य में संकट के समय
अनेक सुरासुर तुम्हारी सहायता करने में अपने आपको
सौभाग्य शाली समझेंगे।" गुणपाल महात्मा के वचन सुन-
कर अति प्रसन्न हुआ और महात्मा को वन्दन (नमस्कार)
करके युगल कर जोड़ कर कहने लगा कि—"गुरुदेव !
आपने इस तुच्छ दास पर अति कृपा की है, पर मैं ही
ऐसा भाग्यहीन हूँ कि आपकी कुछ भी सेवा न कर सका।
अच्छा पूज्य गुरुदेव ! अब तो किसी आवश्यक कार्य हेतु
प्रस्थान कर रहा हुँ, फिर कभी मैं आपके चरणों में उप-
स्थित होकर आपकी सेवा का लाभ उठाकर अपने जीवन
को सफल बनाऊँगा।" इस प्रकार निवेदन कर अपने घोड़े
के पास आया और उसकी पीठ पर चढ़ बैठा।

घोड़ा स्वामी के बैठते ही तिलकपुर नगर की ओर
चल पड़ा। जिस समय शहर के मुख्य द्वार के पास पहुँचा
तो गुणपाल ने घोड़े को रोक कर बड़ी धीमी गति से सिंह
द्वार को पार किया तो देखा शहर बहुत सुन्दर ढंग से बसा
हुआ था। कुछ दूर आगे चलकर एक विशाल मैदान दिखाई
दिया जिसमें बहुत से नर-नारी एकत्रित हो रहे थे और

वसन्त महोत्सव के कारण खूब चहल-पहल हो रही थी। जिसे देखकर गुणपाल घोड़े को उसी ओर ले गया। वहाँ जाकर देखा तो उसे एक भीम काय पहलवान दिखाई दिया। जो कह रहा था—"है कोई मां का लाल जो हमारे सामने आए हम उसकी हड्डी पसली एक कर देंगे।" सभी उसकी ओर भय-भरी नज़रों से देख रहे थे, किसी में इतना साहस न था कि उससे दो-दो हाथ करले। वह एक अच्छा तगड़ा नौज़वान था।

वह एक सप्ताह बाद शहर में आता था और लूटमार करके चला जाता था, बेचारे लोग उससे डरते कुछ न बोलते थे। गुणपाल ने उसकी ललकार सुनी तो उसके क्षत्रिय-लहू में एक उबाल आ गया। वह घोड़े से नीचे उतरा और उस भीम काय व्यक्ति से बोला—"महाशय हमारा दिल आपसे दो-दो हाथ करने को चाहता है क्योंकि कई दिनों से मुझे दो-दो हाथ करने वाला नहीं मिला है।" भीम काय पुरुष ने उसकी ओर देखा और बोला—"अरे चूहे की दुम हम नहीं चाहते कि हम तेरी चटनी बनाएँ। जा भाग जा यहां से।"

गुणपाल बोला—

सिर ऊँचा न हमने देखा, होते हुए अभिमान का।
अपने ही ऊपर पड़ता है, थूका हुआ आसमान का॥

× × × ×

उस भीम काय ने क्रोध से गुणपाल की ओर देखा और बोला—"तो तुम यूँ न मानोगे" और वह गुणपाल की ओर बढ़ा। गुणपाल ने उसके पेट में ऐसा घूँसा मारा कि वह उछल कर दूर जा गिरा। उसे गिरा हुआ देखकर लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। भीमकाय अपने वस्त्रों को झाड़ता हुआ खड़ा हुआ और पूरे जोर से गुणपाल की ओर झपटा और अपना एक हाथ गुणपाल के सिर पर दे मारा। गुणपाल भी क्रोध में आ गया और उस भीमकाय पुरुष से जा भिड़ा। भीम काय ने ऐसा हाथ उठाया और जोर से गुणपाल को मारा। गुणपाल एक ओर को हट गया उसका यह दाव खाली गया, यह देखकर भीम काय बड़े जोश के साथ गुणपाल की ओर मुड़ा। गुणपाल ने उसे ऐसा ढकेला कि वह मुँह के वल ज़मीन पर जा गिरा। वह उठते ही फिर जा उलझा। गुणपाल ने समय देखकर दो चार घूँसे उसके मुँह पर रसीद कर दिए। उसके सभी दाँत हिल गए, जोर-जोर से कराहने लगा और देखते ही देखते वह सिर पर पैर रखकर भाग गया। सभी लोग यह देखकर वहुत प्रसन्न हुए और सभी लोगों ने गुणपाल को आ घेरा और आकाश नारों से गूँज उठा। वहाँ पर एक महाजन का पुत्र भी खड़ा था, जिसका नाम था मदन कुमार। वह भी गुणपाल की वीरता देखकर अवाक् रह गया था। जव सभी

लोग चले गए तो वह गुणपाल के पास आया और उससे पूछा कि वह कौन है, किधर से आया है ! यहां किस कारण को लेकर आना हुआ ? गुणपाल ने बात टालते हुए कहा कि वह यों ही आया था। उसने उससे यह भी पूछा कि आप यहां कहां ठहरे हुए हो। गुणपाल बोला—भाई अभी तो इस शहर में आया ही हूँ। अब ठहरने का भी प्रबन्ध करेंगे।

मदन बोला—"आप मेरे साथ घर चलिए मुझे आप जैसे वीर की सेवा करके हर्ष ही होगा।" गुणपाल किसी पर बोझ बनना नहीं चाहता था, इसलिए उसने लाख आना-कानी की, पर विजय मदन की ही हुई, वह उसे अपने घर ले आया। वहां उसकी खूब सेवा की और मदन के पिता धन्ना ने भी उसका बहुत आदर सत्कार किया। सेठ सेठानी बहुत प्रसन्न हुए। गुणपाल कुछ थका हुआ था, इसलिए मदन के शयन-कक्ष में जाकर लेट गया और रात्रि के भोजन के समय मदन ने उसे जा उठाया और भोजन करवाने ले गया। भोजन के पश्चात् दोनों फिर आ कर लेट गए। मदन बोला—"भाई आपने मुझे बताया ही नहीं कि आप किस चक्कर में यहां आए हैं। गुणपाल ने उसे आदि से अंत तक सारी बात बतला दी। गुणपाल की कहानी सुनकर मदन ने उससे सहानुभूति प्रकट की।

गुणपाल बोला—जिस दुष्ट ने भी चन्द्रप्रभा को उठाने की हिम्मत की है। मैं उसे कहीं न कहीं ढूँढ ही निकालूँगा।

मदन बोला—मैं सोचता हूँ संसार से ऐसे दुष्ट प्राणी कब समाप्त होंगे। अभी-अभी कुछ दिन हुए हमारे शहर के पास कला मन्दिर बस्ती में ऐसी ही एक दुर्घटना हो गई। गुणपाल ने उसे सुनाने को कहा। मदन ने यूँ कह सुनाई—

यहीं पर ही इस तिलक पुर नगर में कला मंदिर नाम की एक बस्ती है। वहां पर एक जमींदार शंकर दास रहता है। उसके एक पुत्र तथा एक पुत्री है। जिनके नाम—लड़के का नाम सुन्दर कुमार और लड़की का इन्दु प्रभा है। इन्दु बड़ी सुशीला, सुन्दर तथा कुछ भोली प्रकृति की है। पुत्र की आयु बीस वर्ष एवं पुत्री की बाईस वर्ष की है। सुन्दर कुमार से मेरा अत्यन्त स्नेह है, वह मेरे यहां आता रहता है तथा मैं भी उसके वहां चला जाता हूँ। इस नगर का स्वामी एक ठाकुर है। जिसको लोग योद्धाराम के नाम से पुकारते हैं, परन्तु उसके जीवन का पतन हो रहा है। अनेक अवगुण उसके जीवन में निवास करते हैं। वह शराबी भी है और पर-स्त्री-गामी भी है। अतः बहुत ही आचार भ्रष्ट पुरुष है। सभी लोग उससे भयभीत हैं। कोई भी उसके सन्मुख सिर तक नहीं हिलाता।

एक दिन की बात है कि इन्दु प्रभा बाहर अपने खेतों में खड़ी हुई खेत की हरी-भरी हरियाली को निहार रही थी। उसी समय योद्धा राम भी कहीं से उधर आ टपका। वह घोड़े पर सवार था। इन्दु प्रभा को देखते ही उस पापी की दृष्टि बदल गई। उस पर आसक्त हो गया तथा मन बेईमान हो गया। बस, फिर क्या था वह उसी समय उसकी ओर झपटा तथा उस निःसहाय इन्दु को बलात् उठा ले गया। लड़की बहुत रोई-चिल्लाई परन्तु क्या हो सकता था। जिस समय उसके माता-पिता को ज्ञात हुआ तो वे हाथ मलते ही रह गए। उसी समय सुन्दर कुमार मेरे पास आया और सम्पूर्ण घटना कह सुनाई। मैं तो सुनते ही दंग रह गया। थोड़ी ही देर में यह घटना सारे शहर में बिजली की तरह फैल गई। अब प्रतिदिन सभाएं होती रहती हैं कि क्या करना चाहिए, परन्तु अब तक कुछ भी तय न हो सका। लड़की के माता-पिता कई बार उसके पास जा चुके हैं, परन्तु उन बेचारों को वह डरा धमका कर वापिस लौटा देता है और कहता है कि मैं इस नगर का स्वामी हूँ। यहाँ पर जो भी सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ हैं, उन सब पर मेरा अधिकार है। यह तो वही बात हुई कि—

"बाड़ ककड़ी खले. माँ बालक को मारे
राजा करे अन्याय रैयत किस पास पुकारे।"

यह कहावत उस पर पूरी तरह से चरितार्थ होती है, क्योंकि वह अति कठोर प्रकृति का मानव है यदि उसे मानव न कहकर दानव की संज्ञा दे दी जाए तो अनुचित न होगा। वह कहता है कि जो भी मेरे राह में आएगा उसे मौत के घाट उतार दिया जायेगा, इसलिए किसी के दिल में भी तनिक सा साहस नहीं होता कि उसके विरुद्ध कोई आवाज़ उठाएँ। न जाने ऐसे-ऐसे पापी पुरुषों की मौत कब आएगी। न मालूम वह कहां लुप्त हो रही है।

गुणपाल ने मदन की सारी बातें ध्यान से सुनी। बाद में उसने कहा—"भाई मदन आप किसी बात की चिन्ता न करें मैं प्रातःकाल ही उसके पास जाऊँगा और उसे समझाऊँ-गा। यदि वह फिर भी न समझा तो खता खाएगा और अपने किये की सजा पाएगा।"

इसके उपरान्त और भी कई प्रकार की वार्तालाप चलती रही। अन्त में बातों ही बातों में वह दोनों निद्रा देवी की गोद में चले गए।

प्रातःकाल उठते ही गुणपाल ने जब देखा कि दिवा-कर काफी ऊँचाई पर पहुँच गया है। तब उसने मदन को भी जगाया और दोनों ने स्नान मंजन किया। बाद में नाश्ता आदि कर के दोनों योद्धा राम से मिलने के लिए चल दिए। योद्धा राम एक शूरवीर क्षत्री वीर था। जैसा उसका नाम

था वैसा ही उसका काम था, परन्तु उससे भेंट करना कोई कठिन काम न था। जब वे दोनों उसके स्थान पर पहुँचे तो एक लट्ठ-बाज़ पुरुष उन्हें मिला। पूछने पर पता चला कि वह ठाकुर साहिब का अंग रक्षक था। उसे देख कर मदन तो कुछ भयभीत सा होकर चुपचाप एक ओर खड़ा हो गया। अंग रक्षक रोब से बोला—"क्यों क्या बात है ?"

गुणपाल बोला—बात तो कुछ नहीं मैं रत्नपुर नगर से आया हूँ तो यह ख्याल आया कि चलो इस नगर के स्वामी योद्धाराम से मिलते चलें। अंग रक्षक—अच्छा तो आइये पधारिये, गुणपाल तो उसके साथ चल दिया परन्तु मदन के क़दम आगे न बढ़ सके। वह गुणपाल के कान में कुछ कह कर वापिस चला गया। जब गुणपाल ठाकुर के सन्मुख गया तो उस समय ठ़ाकुर जी एक ऊँची कुर्सी पर विराज़-मान थे और उसके अंग रक्षक भी दायें-बायें बैठे हुए थे। तब अचानक लठ-मार ने जाते ही कहा कि यह व्यक्ति आप से मिलने के लिए आए हैं।

योद्धाराम ने आँख उठाकर गुणपाल को एड़ी से लेकर चोटी तक देखा और बोले—हमने तुम्हें पहचाना नहीं, आप कौन हैं और आप का नाम क्या है ? गुणपाल बोला—नाम तो मेरा गुणपाल है। आप का नाम सुनकर आप से कुछ

कहने आया हूँ। मेरी और आपकी इस जीवन में पहली मुलाकात हुई है। इसी लिए आप मुझे न पहचान सके।" ठाकुर मूँछों को ताव देकर बोला—मुझसे तुमको क्या काम हो सकता है ? गुणपाल बोला—सुना है आप राजपूत हैं और फिर भी आप अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। मैंने आज तक किसी क्षत्री को किसी कन्या का अपहरण करते नहीं देखा। यह बात क्षत्रियों के नाम पर कलंक है। अतः अशोभनीय कार्य को आप त्याग दें तो अतीव कृपा होगी।

ठाकुर (कह-कहा लगा कर)—अच्छा तो तू मुझे उपदेश देने आया है। गुणपाल—मैं तो आप को क्षत्रिय वीरों का कर्त्तव्य बता रहा हूँ।" योद्धाराम (आवेश में)—खामोश, यदि अपनी जिन्दगी चाहता है तो यहाँ से चुपचाप वापिस लौट जा, नहीं तो जो कुछ भी तेरे पास है सब कुछ छीन लिया जाएगा और तुम्हारी वह गत बनाऊँगा कि सारी उमर याद रखोगे।

गुणपाल बोला—

बात करनी चाहिए सदा मुँह सम्भाल कर।
इसका परिणाम क्या निकलेगा जरा ख्याल कर॥

योद्धाराम—अच्छा तो ठहर जाओ, उसने उसी समय अपने अंग रक्षकों को संकेत किया कि इसे घेर लो और

मार-मार कर इसकी ऐसी गत बनाओ ताकि जीवन भर याद रखे।" अंग रक्षकों ने भी गुणपाल को चारों ओर से घेर लिया—

"अपने को घेरा देख कर, आँखों में लाली छा गई।
तलवार ले ललकारा, कि मौत सब की आ गई॥
तूफान सम वह घूमता, जो भिड़ता उसको मारता।
जो भी आया सामने, उसका शीश उतारता॥
जिधर भी वह झुक गया, लाशों के ढेर लग गए।
कुछ मर गए, कुछ गिर गए, कुछ डर के पीछे हट गए॥
उछल कर गुणपाल झट, गया पास योद्धा राम के।
जमीं पर जा पटका उसे, इक मारा मुक्का तान के॥
होश उसके उड़ गए, वह गिर गया गश खाय के।
तब कर हाथ उलटे बांध दिए, गुणपाल ने वहाँ जाय के॥
भाग गए साथी सभी बस वह अकेला रह गया।
मन में सोचने लगा, अब काल मेरा आ गया॥

गुणपाल—(ठाकुर से)—क्यों भाई साहिब ! देखा न कटुक वचनों का नतीजा—

कर्तव्य है यही हर किसी इन्सान का।
अपमान न करे कभी घर आए हुए मेहमान का॥

ठाकुर काँपता हुआ बोला—भाई मैंने अपनी करणी का फल पा लिया। आप मुझे बन्धन मुक्त कर दें। आप की बहुत कृपा होगी। मैं आज से कभी किसी को भी न सताऊँगा और जो आप कहेंगे वही करूँगा। मैंने जीवन में बड़े-बड़े पाप किये हैं। आज उन सब का दण्ड मुझे मिल

करता है उसके लिये तो उस ससय वही भगवान् का रूप बन जाता है। आपने इस संकट में हमारी जो सहायता की और एक मासूम लड़की को घोर संकट से बचाया उसके लिये तो हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम आप के गुणगान करें और फिर जिसमें जो गुण होते हैं उसकी प्रशंसा करनी भी चाहिये। अब मेरी यह प्रार्थना स्वीकृत करें। मेरे माता-पिता ने कहा है कि "गुणपाल को अपने साथ शीघ्र ही घर लेकर आओ।" योद्धाराम जी तपाक से बोले—"यह कभी नहीं होगा, कुछ दिन तक तो श्रीमान् जी मेरे यहाँ विश्राम करेंगे।"

"गुणपाल बोला—ठाकुर साहिब जी, आप का आग्रह तो ठीक है, पर मैं विवश हूँ। क्योंकि इस समय तो मैं किसी आवश्यक कार्य हेतु जा रहा हूँ फिर कभी आप से मिलेंगे।"

योद्धाराम बोला—मेरी तो यही प्रबल इच्छा थी कि मेरे जैसे बुद्धि हीन को भी कुछ सेवा का अवसर प्रदान करते, ताकि मेरे पाप भी आपकी पुण्य सेवा जल से धुल जाते परन्तु अब मैं क्या कहूँ जब आप श्री खुद ही तैयार खड़े हो।

नहीं भाई ऐसी क्या बात है। (दोनों नमस्कार करते हैं)।

गुणपाल जब चलने लगा तो सब ने उसें झुक कर प्रणाम किया। योद्धाराम और उसके साथी मदन, सुन्दर, गुणपाल को मदन के घर तक सम्मान पूर्वक छोड़कर वापिस लौट आये। मदन के माता-पिता ने उसका बहुत आदर सत्कार किया और बैठने को एक सुन्दर आसन दिया तथा भोजन का प्रबन्ध किया। मदन की बहिन गुणमाला ने सोने के दो थाल लेकर भोजन परोस दिया। एक थाल गुणपाल के सन्मुख तथा दूसरा मदन के सन्मुख रख दिया। दोनों ने खाना आरम्भ कर दिया। गुणपाल खाते-खाते सोच रहा था कि अब तक चन्द्रप्रभा का कोई पता न चला। अब किस ओर चलना चाहिये।

इधर तो गुणपाल अपने मन में अतीत की कल्पना कर रहा था; उधर गुणमाला कुछ दूरी पर बैठी हुई गुणपाल को निहार रही थी। आँखें फाड़-फाड़ कर निर्निमेष दृष्टि से देखती जाती थी। एक ओर मदन के माता-पिता यह विचार कर रहे थे कि "गुणपाल तो कोई महान् आत्मा है। कितनी वीरता, गम्भीरता, दयालुता, कृपालुता, सज्जनता अनेक गुणों से सुशोभित है। ऐसा गुणवान् लड़का संसार भर में मिलना असम्भव नहीं तो कठिन जरूर है।"

इस प्रकार की बात चल रही थी। गुणमाला, गुणपाल की ओर देख रही थी और माता-पिता का वार्तालाप भी

सुन रही थी। जिसको सुन कर कभी-कभी मुस्करा देती थी। कुछ देर बाद मदन ने गुणमाला से पानी माँगा। गुणमाला का नाम सुन कर गुणपाल ने गुणमाला की ओर तथा गुणमाला ने गुणपाल की ओर देखा। दोनों एक दूसरे को देखते ही रह गये। गुणमाला ने पानी का गिलास दिया और दोनों के हाथ धुला दिये। खाने के बाद दोनों बैठक में चले गये। बैठक में जाकर बैठे ही थे कि इतने में मदन को उसके पिता जी ने पुकारा। मदन आवाज़ सुनते ही तुरन्त उठ कर चला गया। जाते ही मदन ने देखा सुन्दर तथा उसके माता-पिता और इन्दु भी आये हुये हैं।

सुन्दर ने मदन को देखते ही नमस्कार किया और बोला कि "देखो आप की कृपा से सब काम बन गया है, हमारे सिर पर जो कष्टों का पर्वत टूट पड़ा था बात की बात में वह सब छिन्न-भिन्न हो गया। गुणपाल को लेकर यदि आप न आते तो हम कहीं के भी न रहते। हमारी इज्जत बच गई है। अब हमारी सब की यही हार्दिक अभिलाषा है कि इन्दु का सम्बन्ध गुणपाल से जोड़ दिया जाये, परन्तु यह सब कार्य आप पर निर्भर है क्योंकि गुण-पाल को आप से बहुत प्रेम है। यदि आप चाहेंगे तो इन्दु प्रभा का सम्बन्ध गुणपाल से हो सकता है। गुणपाल आप की बात को कभी नहीं मोड़ेगा। इसलिये हमें आप की

सहयोग की आवश्यकता है। तभी काम वन सकता है अगर आप पूर्णतया साथ दें। इसलिये हम यह प्रार्थना लेकर आपके पास आये हैं।"

मदन वोला—भाई, इस सम्वन्ध में मैं अकेला कुछ नहीं कह सकता। सवसे अच्छा तो यह होगा कि हम दोनों गुणपाल के पास चलें और वहाँ पर सव वात करें। मेरे से जो भी हो सकेगा गुणपाल को समझाने की पूरी-पूरी कोशिश करूँगा। मदन और सुन्दर गुणपाल से मिलने के लिये वैठक की ओर चले।

गुणपाल ने जव उन दोनों को अपनी ओर आते देखा तो उठ खड़ा हुआ और उसने द्वार पर उनका स्वागत किया। सव के यथास्थान पर वैठ जाने के पश्चात् गुणपाल ने कहा—कहिये भाई साहिव कुशल तो हैं, मेरे लिये कोई सेवा हो तो फरमाएँ। मदन वोला—हम आप की सेवा करेंगे या आपसे करवाएँगे। गुणपाल ने उत्तर में कहा—सेवा करना और कराना दोनों ही वातें हो सकती हैं। फिर भी आप की आकृति से ज्ञात होता है कि आप कोई न कोई वात करना चाहते हैं। सुन्दर वोला—जी हाँ आए तो हम आप के पास किसी वात को लेकर ही हैं, हमें आशा है कि आप इन्कार नहीं करेंगे।

गुणपाल वोला—देखिए ! मुझ से जैसा उत्तर वन

पाएगा दूँगा। जहाँ तक हो सकेगा आपकी समस्या का समाधान करने का प्रयत्न करूँगा और मेरे लायक कोई कार्य होगा तो उसे भी करने का भरसक प्रयास करूँगा, आप विश्वास रखें।

दोनों बोले—धन्य हो! वीर हमें आप से ऐसी ही आशा थी। हमें अब विश्वास हो गया है कि आप हमें निराश नहीं करेंगे।

गुणपाल—आप अपनी समस्या तो कहिये तभी मैं कुछ कह सकता हूँ।

सुन्दर बोला—हमारी समस्या तो बस इतनी ही है। हमारे सारे परिवार की भी यही भावना है कि आप......
गुणपाल—कहिए, आप कहते-कहते क्यों रुक गए? जो भी बात हो साफ-साफ कह दीजिए, संकोच की कोई बात नहीं।

मदन बोला—लो मैं ही कह देता हूँ। इनके मन की बात, इन का तथा इनके परिवार का यही विचार है कि यदि इन्दुप्रभा से आप का सम्बन्ध हो जाए तो हमें अति प्रसन्नता होगी।" गुणपाल यह सुनकर कुछ झेंप सा गया और कुछ धीमी आवाज़ से बोला—यह तो आपकी समस्या ऐसी ही है कि इस पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है और दूसरी बात यह है कि मेरा आप से

अधिक परिचय नहीं है। वैसे भी मैं परदेशी हूँ।

सुन्दर बोला—देखिए साहिब, हीरा कभी भी अपनी प्रशंसा नहीं करता, उसकी प्रशंसा तो उसके गुणों से स्वयं हो जाया करती है।

इसलिए आप भी मानव समाज में जगमगाते हीरे के समान हैं। आप के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं। आपने अपनी वीरता, धीरता और सदाचार द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि आप उच्च कुलोत्पन्न नर रत्न हैं। इसलिए हम सबने यह सोच कर निष्कर्ष निकाला है कि यदि आप इन्दुप्रभा से सम्बन्ध स्वीकार कर लेते हो तो हम अपना अहोभाग्य समझेंगे।

मदन कुछ सोच कर यह कहता हुआ उठ कर चला गया कि "आप दोनों कुछ देर यहाँ विराजें मैं अभी आता हूँ।" मदन को आता देख कर सुन्दर के माता-पिता तथा मदन के माता-पिता सोचने लगे कि शायद काम बन गया है, इसलिए हमें सूचना देने आया है। मदन अपने माता-पिता को एक ओर ले जाकर कहने लगा कि "जहाँ तक मेरा अनुमान है गुणपाल इस सम्बन्ध के लिए राजी हो जाएगा। इस पर मुझे बैठे-बैठे ध्यान आया कि गुणमाला और इन्दुप्रभा दोनों का ही सम्बन्ध हो जाए तो अच्छा है, क्योंकि ये दोनों सहेलियाँ हैं और दोनों इकट्ठी रह कर ही

सुखी रहेंगी। दूसरी वात यह है कि सुशील वीर गुण सम्पन्न पुरुष ग्रौर कहीं मिलना ग्रति कठिन है।" मदन के माता-पिता ने भी मदन के स्वर से स्वर मिलाया ग्रौर बोले—"हमें गुणपाल वहुत पसन्द है।" पता नहीं गुणपाल में कौन सा ऐसा जादू था जो उसे देखता था, उसकी ग्रोर ग्राकर्षित हो जाता था। मदन के माता-पिता भी झट इस सम्वन्ध के लिए तैय्यार हो गए।

इस प्रकार मदन ग्रपने माता-पिता की सम्मति लेकर पुनः बैठक में जा पहुँचा ग्रौर मदन ने ग्रपनी वहिन के सम्वन्ध की शुभ सूचना दे दी ग्रौर बोला— इन्दु ग्रौर माला दोनों सहेलियाँ हैं यह इकट्ठी रहेंगी तो प्रसन्न रहेंगी।

गुणपाल ग्रभी एक के वारे में सोच रहा था, माला वाले सम्वन्ध की बात सुन कर वोला—लो भाई, ग्राप यह क्या करने लगे, पहले तो एक प्रस्ताव ग्राया था ग्रव ग्रन्दर जाकर एक ग्रौर ले ग्राए।" कुछ देर तक सोचता रहा ग्रौर फिर ग्रन्त में वह बोला—भाई साहिव, मैं ग्रापको प्रातः इसके वारे में ग्रपनी राय दूँगा, ग्रभी मैं किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा हूँ। ग्राप ने जो सेवा भाव दिखाया है उसका मैं ग्रभारी हूँ। दोनों ने यह बात मान ली ग्रौर चले गये। रात्रि के समय गुणपाल चारपाई पर लेटा-लेटा सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिए! इसी उधेड़-बुन

में वह रोशनी बुझाना भी भूल गया और सो गया।

प्रातः नयी आशायें लेकर आ गई और सुन्दर तथा मदन भी आ गए। उन्हें देखकर लगता था कि वह शायद सारी रात सो न सके थे। उन्होंने गुणपाल से अपने रात्रि वाले प्रश्न का उत्तर चाहा। गुणपाल ने सारी बात चन्द्र प्रभा वाली उनको कह सुनाई और बोला—मैं तो अभी समस्या को हल करना चाहता हूँ और फिर मेरा चन्द्रप्रभा से विवाह होना भी निश्चित हो गया है। मैं चाहता हूँ कि इन्दुप्रभा का और गुणमाला का विवाह प्रसन्नकीर्ति के कुमार मनमोहन से हो जाए। यह मेरे मित्र मुझ से भी सुन्दर और गुण वाले हैं।" पहले तो दोनों ने आना-कानी की पर गुणपाल पर विश्वास किया। वे भी गुणपाल की तरह सुन्दर और गुणवान होंगे। यह सोच कर उन्होंने गुणपाल की बात मान ली। गुणपाल ने अपनी जेब से जब मनमोहन का चित्र दिखाया तो दोनों उसे देखते ही रह गए। सचमुच गुणपाल की तरह ही लगता था।

इधर गुणमाला और इन्दुप्रभा भी बड़ी खुश थीं। गुणमाला इन्दु से कह रही थी, अरी! तेरी बुद्धि की तो मैं तारीफ करती हूँ। जब तुझे योद्धाराम उठा कर ले गया तो कैसे तुम ने बिमारी का बहाना बना दिया था। आगे इन्दु बोली—हाँ बहिन! जब वह मुझे शादी के लिये तंग

करने लगा तो मैंने उसे कह दिया कि मैं विमार हूँ और दवाई खा रही हूँ। "वह वोला—क्या विमारी है?" मैंने कहा दौरे का मामला है। जव दौरा पड़ता है तो मुझे अपने पराये का कुछ भी ध्यान नहीं रहता। मुझ पर पागलपन सवार हो जाता है और मैं इतनी पागल बन जाती हूँ कि अपने कपड़े भी फाड़ने लग जाती हूँ। जो चीज़ हाथ में आती है वही उठा-उठाकर मारने लग जाती हूँ। मैंने एक दिन अपनी सहेली का सिर भी फोड़ दिया था अव उसका इलाज हो रहा है। यह सुन कर वह डर गया और बोला—तो तुम इलाज क्यों नहीं करवाती? मैंने कहा इलाज तो करवा रही हूँ अभी दो मास लगेंगे। जब तक मैं भली-चंगी न हो जाऊँ तब तक मुझे कुछ मत कहो।

ठाकुर योद्धाराम ने सोचा दो मास की ही तो वात है; वह मान गया।

गुणमाला बोली—तभी तो मैं कह रही हूँ कि तुम्हारी बुद्धि तीक्ष्ण है, अभी तो मास भी नहीं हुए थे, वे तुम्हें छुड़ा भी लाए। "अच्छा! तो फिर इसी खुशी में लड्डू नहीं खिलाओगी।

"मैं कब इन्कार कर रही हूँ।"

"तो फिर बुला अपने नौकर मनभाया को।" मनभाया गुणमाला का नौकर था, पर बेचारे को ज़रा ऊँचा सुनता

था।

गुणमाला वोली—"अरे ! मनभाया...मनभाया !'

"जी हजूर अभी आया।" यह कह कर मनभाया भागता हुआ आ गया और उसने अपने हाथ से कान को यूँ आगे की ओर वढ़ा रक्खा था मानो कुछ सुनने की चेष्टा कर रहा हो।

गुणमाला वोली—"क्या कर रहे थे, अब तक" मनभाया को सुना नहीं वोला—क्या कहा माला—माला की क्या ज़रूरत पड़ गई। ओह ! वहरा कहीं का, जा वाज़ार से मिठाई ले आ।

"मलाई—अभी लाया।"

गुणमाला क्रोध से वोली—मनभाया, पहले वाले अन्दाज़ से वोला।

"हजूर अभी आया।"

"वेवकूफ़—हम मलाई नहीं मिठाई कह रहे हैं।" जा वाज़ार से गुलाव जामुनें ले आ।

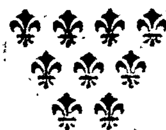
मनभाया अभी आया कह कर चला गया और दोनों सहेलियाँ वातों में उलझ गईं। सोच रही थीं हम दो पक्षी हैं परन्तु हमारा नीड़ एक ही वनने वाला है।

इतनी ही देर में मनभाया हाँफता हुआ आ गया। जिस ने एक हाथ में गुलाव के फूल उठा रक्खे, दूसरे हाथ में जामुनों

के गुच्छे थे। दोनों सहेलियाँ यह देखकर हैरान रह गईं और बोलीं—यह क्या ?

मनभाया बोला—आपने ही तो गुलाब और जामुनें लाने को कहा था, सो मैं ले आया। दोनों उसकी मूर्खता पर हँस-हँस कर लोट-पोट हुई जा रही थीं।

इधर गुणपाल मन ही मन में विचार कर रहा था कि जिस कार्य को मैं असम्भव और कठिन समझता हूँ, वही कार्य क्षण भर में ही सरल एवं आसान हो जाता है और उसको पूरा करने में मुझे सफलता भी शत प्रतिशत प्राप्त हो जाती है, स्वयं सफलता मेरे चरण चूम लेती है। यह सब कुछ महामंत्र नवकार का प्रभाव है जिस पर मेरी आस्था है।



दस

देव प्रदत्त बूटी की प्राप्ति

इसी तरह दिन बीतते गए, तिथियां बदलती गई और गुणपाल ने यहाँ से जाने की सोची। उसने मदन से अपने जाने की बात कही। मदन ने उसे कुछ दिन और रुकने का आग्रह किया, पर गुणपाल चन्दा वाली बात बता कर जाने को कहा और साथ ही उससे कंचनपुर का रास्ता भी पूछा। मदन ने उसे बताया कि कंचनपुर का रास्ता बड़ा भयानक है और रास्ते में भयानक खूंख्वार जानवर रहते हैं और डाकू चोर रहते हैं। वे दिन दहाड़े लोगों को लूट लेते हैं।

गुणपाल बोला—मदन जी आप भूल गए कि मैं क्षत्रिय हूँ। क्षत्रिय इन चोर, डाकुओं से नहीं डरते।

क्षत्रिय पहले वार करते नहीं; जब डट जाते हैं तो मैदान में से हटते नहीं और डाकुओं का भय उन्हें डरा सकता नहीं। यम भी सामने आ जाए तो बच कर जा सकता नहीं।

बहुत कहने सुनने के पश्चात् मदन ने उसे जाने को

कह ही दिया और वहाँ सुन्दर का परिवार भी आ गया। दोनों परिवारों ने उसे भरे दिल से विदाई दी। साथ में मदन भी चल पड़ा, क्योंकि वह एक फकीर से मिलना चाहता था, जो वहाँ से वीस मील की दूरी पर था। वह बोला कि वह फ़कीर जव मैं विद्यार्थी जीवन व्यतीत कर रहा था तव वह भी मेरे साथ पढ़ा करता था। उसका नाम सन्तराम है। कुछ ही मास उसे पढ़ते हुए व्यतीत हुए थे कि उसके पिता परलोक सिधार गये। उसकी माता जी की मृत्यु के पश्चात् वह अति दुःखी हुआ फिर उसका दिल घर में न लगा और वह संन्यासी वन गया।

वह महात्मा आजकल उस रमणीक स्थान में जिसे वनितापुरी भी कहा जाता है, वहीं पर वह रहता है। वहाँ तक मैं आपके साथ चलूँगा, तथा मित्र से मिलाप भी हो जाएगा। वहाँ पर रहते-रहते उसे कई साल व्यतीत हो गये हैं। सो आज की रात्रि हम भी वहीं पर व्यतीत करेंगे। प्रातःकाल ही मैं वापिस लौट आऊँगा और आप कंचनपुर की ओर पधार जाईएगा।

इस पर गुणपाल ने स्वीकृति दे दी तथा दोनों प्राकृतिक सौंदर्य को निहारते हुए आगे बढ़ रहे थे कि अनायास ही एक झाड़ी के पीछे से एक भयानक सिंह की दहाड़ सुनाई दी तथा देखते ही देखते दहाड़ता हुआ भयंकर सिंह

सामने मार्ग पर आ खड़ा हुआ। सिंह को देखते ही मदन के होश उड़ गये और दोनों अश्व भी आगे बढ़ने से रुक गये। गुणपाल उसी समय घोड़े से उतर पड़ा और शेर की ओर बढ़ा। शेर ने अपना पंजा गुणपाल को मारने के लिए उठाया पर गुणपाल ने उसको पंजों से पकड़ लिया और जोर से घुमा कर दूर फेंक दिया। शेर उठा और फिर दहाड़ा। जब तक गुणपाल ने भी अपनी तलवार निकाल ली थी। और उस ने अपनी तलवार शेर पर झोंक दी, शेर अंतिम बार ज़ोर से दहाड़ा और फिर शाँत हो गया। गुणपाल के वस्त्र भी कुछ फट गए थे।

इस दृश्य को देख कर मदन दंग रह गया और उसने सुख की साँस ली। गुणपाल ने घोड़े पर बैठते हुए कहा कि यदि यह काननाधिपति है तो हम भी तो नगराधिपति हैं।

मदन– भैया मेरा तो हृदय काँप गया था, आप के साहस ने बचा लिया, वरना प्राण ही निकल जाते।

गुणपाल– महाजन जन अधिकतर मूंगी की दाल खाते हैं, इसलिए उनके दिल में साहस नहीं होता। यह सुनकर मदन खिलखिला कर हँस पड़ा। थोड़ी देर के बाद कुछ सोच कर कहने लगा कि किसी समय इस पृथ्वी तल पर देवताओं की सभा लगी थी। उनकी सभा में महाजन और क्षत्रिय वीर भी सम्मिलित हुए थे तो इन्द्र ने किसी बात

पर प्रसन्न होकर कहा कि—मैं क्षत्रियों को शारीरिक बल और महाजनों को मानसिक तथा बुद्धि बल प्रदान करता हूँ। इसलिए आप क्षत्रिय पुत्रों को शारीरिक बल प्राप्त हुआ तथा हम महाजनों को बुद्धि मिल गई।

गुणपाल व्यंगात्मक भाषा में बोला—"अच्छा मुझे तो आज पता चला कि आप बुद्धि वाले हैं। इस प्रकार हँसते बोलते उस स्थान पर जा पहुँचे जहाँ पर महात्मा संत राम जी रहते थे। मदन ने दूर से ही देख लिया कि महात्मा जी किसी पुस्तक का अध्ययन कर रहे थे। गुणपाल ने उस स्थान की ओर संकेत करते हुए कहा कि क्या यह वही स्थान है, जहाँ पर हमने विश्राम करने का निश्चय किया हुआ है। उत्तर में मदन ने कहा "हाँ जी।"

उसी समय दोनों घोड़ों से उतर पड़े। एक ओर वृक्ष की शीतल छाया में उन्हें बाँध कर स्वयं महात्मा के समीप पहुँचे और जाते ही दोनों ने सविधि प्रणाम किया। जब उन्हों की ओर महात्मा ने आँख उठाकर देखा तो आश्चर्य चकित रह गये और तपाक से बोल पड़े—मदन आज कैसे भूल कर इधर आना हो गया। मदन ने युगल कर जोड़ कर बड़ी नम्रता से उत्तर दिया—भगवन् क्या कहूँ, हमारा कोई पिछला पुण्य शेष था जो आप श्री के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

महात्मा हैरानगी से बोले—ऐसी क्या बात बन गई थी। उत्तर में मदन ने योद्धाराम और इन्दुप्रभा की सारी घटना कह सुनाई। महात्मा ने प्रश्न किया कि फिर इन्दुप्रभा पर आई आपत्ति कैसे दूर हो गई ?

मदन ने गुणपाल की ओर संकेत करते हुये कहा—यह बहादुर वीर नेपाल नरेश का राजकुमार है। इनका शुभ नाम गुणपाल है। तिलकपुर नगर में वसन्त के मेले पर मेरा इन से परिचय हुआ था। मैं इनको बड़े आग्रह से अपने घर ले गया, रात्रि के समय मेरे पास ही ठहरे। तब मैंने इन्दु के साथ बीती हुई सारी घटना इनके सन्मुख रखी तो इन्होंने कहा कल योद्धाराम से बात करेंगे। सो यह प्रातःकाल ही योद्धाराम से मिले। उसको इन्होंने बहुत अधिक समझाया परन्तु वह इनसे ही उलझ गया फिर ये भी आवेश में आ गये और उसकी शाही सेना को मार भगाया तथा योद्धाराम को छटी का दूध याद करा दिया और उसकी उल्टी मुश्कें बाँध दी। तब उसने क्षमा याचना की और इन्हों की सब बातें स्वीकृत कर इन्दु को उसके माता-पिता को सौंप दिया तब उसको भी छोड़ दिया। अब इनका विचार कंचनपुर जाने का है। मैं तो इनके साथ यहीं तक आया हूँ।

महात्मा जी गुणपाल की वीरता से बहुत प्रभावित हुए और वहां से उठकर उनको अपने साथ अपने डेरे में

ले गए, जहां पर महात्मा जी का निजी स्थान था। वहाँ पर गुणपाल ने देखा, एक कमरा बहुत अच्छे ढंग से बना हुआ था। उसके एक कोने में एक लकड़ी का तख्त पड़ा हुआ था जिस पर महात्मा जी का आसन लगा हुआ था। दूसरे कोने में चार-पांच चारपाइयाँ खड़ी हुई थीं। जो आने वाले यात्रियों के काम में आती थीं। एक कोने में एक काष्ठ का सन्दूक रखा हुआ था जिसमें कुछ ओढ़ने और बिछाने के लिये वस्त्र रखे हुये थे और एक कोने में पुस्तकों से भरी हुई अलमारी खड़ी थी।

मदन ने अलमारी को देखते ही कहा, महात्मन् पुस्तकों का संग्रह तो काफी किया हुआ है। उत्तर में महात्मा जी ने फरमाया—मदन जी ! इन्हीं पुस्तकों के आधार पर हम यहाँ जंगल में पड़े रहते हैं। जब अपनी सन्ध्या आदि से निवृत्त हो जाते हैं तब इन्हीं पुस्तकों द्वारा ही अपना सारा दिन व्यतीत करते हैं। बात को चालू रखते हुए महात्मा अपने आसन पर विराज गए तथा उन्हें चारपाई की ओर संकेत करते हुए कहा कि आप भी बैठ जाइए। (दोनों बैठ गए)। थोड़ी देर के पश्चात् महात्मा का एक शिष्य आया जो गले में झोली लटकाये हुए था। शिष्य ने आते ही गुरु चरणों को स्पर्श किया। गुरु जी ने शिष्य की पीठ थप-थपाते हुए कहा—देखो बेटा ! दो महमान आए हुए हैं ये

रात्रि को हमारे पास ही विश्राम करेंगे इसलिए इनके लिए भोजन का प्रबन्ध करो। इनके घोड़ों को भी सुरक्षित स्थान पर बांध दो और घास-पानी का प्रबन्ध कर दो।

शिष्य—गुरुदेव आप किसी प्रकार की चिन्ता न कीजिए सब कार्य उचित समय पर ही हो जाएगा।

गुरुजी—अच्छा बेटा जाओ अपना कार्य करो। गुरु को प्रणाम करके शिष्य चला गया।

मदन ने महात्मा से प्रश्न किया कि—महाराज यह किस का लड़का है ?

उत्तर में महात्मा ने फरमाया—"ब्राह्मण का" इसका ग्राम कंचनपुर के मार्ग में ही पड़ता है। इसके माता-पिता हमारे परम भक्त हैं। उन्होंने ही इस बालक को हमें सौंप रखा है। सो एक वर्ष हो गया है यह हमारे पास रहता है।

मदन—महाराज लड़का तो बड़े शीतल स्वभाव का जान पड़ता है।

महात्मा जी बोले—हां ! बाल्यावस्था से इसके उत्तम विचार हैं। गुणपाल ने मदन की ओर संकेत करते हुए कहा कि देखो भैया जी इस छोटे से बालक के कितने सुन्दर विचार हैं।

मदन—श्रीमान् जी इस बच्चे के माता-पिता भी धर्म-

मैं आपकी गुण ग्राही वृत्ति को देख कर अत्यन्त प्रभावित हूँ और मैं तुम्हें प्रसन्न होकर एक विचित्र वस्तु प्रदान करता हूँ। (महात्मा अपनी झोली से एक जड़ी निकाल कर देते हैं) लो यह रोगापहारिणी बूटी है। यह मुझे मेरे गुरु ने दी थी। यह देवमयी बूटी कहलाती है। इस बूटी को जरा सा पानी में घोल कर किसी भी रोगी को पिला दो तो उसका रोग शान्त हो जाता है और अन्धे व्यक्ति की आँखों में घिस कर डालने से आँखें ठीक हो सकती हैं।

गुणपाल ने महात्मा से बुटी ले ली और प्रणाम करके पूछा—गुरु जी! बड़े गुरु जी का स्थान बताने की कृपा करें।

महात्मा जी ने कहा—जब तुम कंचनपुर में जाओगे वहाँ पर किसी से भी पूछ लेना कि खीरा नाम का ग्राम किस ओर है। फिर तुम उस ग्राम में चले जाना, खीरा ग्राम में पहुँचने पर पूछ लेना कि सिद्ध श्री जी महात्मा का निवास स्थान कहाँ पर है। वहाँ से आप को पता चल जाएगा। मेरे गुरु जी खीरा ग्राम की एक पहाड़ी पर रहते हैं।

गुणपाल ने महात्मा को लाख-लाख प्रणाम किया और बोला—हे गुरुदेव! आप के आशीर्वाद से मेरा काम हो जाएगा। इस प्रकार बातों-बातों में, वे नींद में खो गए और

एक दूसरी दुनियां में पहुँच गए ।

सुबह हुई महात्मा जी अपने पूजा-पाठ से निवृत्त होकर अपने शिष्य से बोले कि—जाओ भोजन तैयार करो।

गुणपाल बोला—महाराज आप हम लोगों के लिए इतना कष्ट क्यों करते हैं। आपने आगे ही हमारे ऊपर बहुत ऋण चढ़ा दिया है।

महात्मा बोले—नहीं बेटा; कौन किसी की सेवा करता है यह सब अपने शुभाशुभ कर्मो की बात है। किसी ने कहा भी है :—

जो जो पुद्गल स्पर्शना निश्चय फरसे सोय।
ममता समता भाव से कर्म बंध क्षय होय॥

जो कुछ भी बनता बिगड़ता है वह आत्मा की अच्छाई बुराई का ही फल है, जैसे कि कहा गया है—

अच्छाई से हनुमान ने अमर पद पाया,
प्रह्लाद ने अच्छाई से था नाम चमकाया।
बुराई ने रावण का सर्वनाश कर डाला,
बुराई ने कंस पछाड़ा दुर्योधन को मार डाला॥

महात्मा—गुणपाल, तुम्हारी अच्छाइयों से ही सर्व कार्य ठीक हो रहे हैं।

गुणपाल बोला—गुरुदेव ये आप की ही कृपा दृष्टि का फल है। इतने में शिष्य आया और बोला—

गुरुदेव जी ! भोजन तैयार हो चुका है अतः पधारिए।

तीनों भोजन करते हैं और फिर दोनों कुमार चलने की तैयारी करते हैं। गुणपाल और मदन ने चलने के लिए आज्ञा माँगी।

महात्मा बोले—गुणपाल ! यह पथ बड़ा भयानक है। यहाँ यात्रियों को लूट लिया जाता है, तनिक संभल कर जाना।

गुणपाल ने कहा—गुरुदेव ! जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है तो मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। दोनों महात्मा को प्रणाम करके चल दिए।

गुणपाल कंचनपुर की ओर तथा मदन तिलकपुर की ओर चला गया। जिस समय मदन घर पहुँचा तो माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए जब सुन्दर को ज्ञात हुआ तो वह भी मिलने के लिए आया। दोनों गुणपाल के विषय में काफी देर तक बातचीत करते रहे बाद में दोनों अपने-अपने कार्य में लग गए।

इधर गुणपाल का घोड़ा सरपट भागा जा रहा था। कहीं-कहीं घोड़ा स्वयं ही रुक कर धीमी गति से चलने लगता था क्योंकि ऊबड़-खाबड़ भूमि का रास्ता था। जहाँ मार्ग साफ होता वहाँ घोड़ा फिर तेज गति से दौड़ने लगता था। कुछ दूर जाने पर घोड़ा एक सूखी सरिता में प्रवेश करता [illegible] धीरे-धीरे चलता है। अनायास ही पीछे से

एक आवाज़ आई। "ठहर जाओ! ठहर जाओ!! ठहर जाओ!!!"

गुणपाल ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक डाकुओं का गिरोह आ रहा है। गुणपाल ने धनुषवाण को सम्भालते हुए कहा, कौन हो? क्या चाहते हो?

डाकुओं का सरदार बोला—यदि अपने जीवन का बचाव चाहते हो तो जो कुछ तुम्हारे पास है यहाँ रख दो और चले जाओ, नहीं तो मारे जाओगे। गुणपाल निडर था डरा नहीं। बोला—क्या स्त्रियों की तरह धमकियां दे रहे हो। मर्द हो तो सामने आओ। फिर क्या था घमासान युद्ध छिड़ गया। सभी डाकू गुणपाल पर टूट पड़े।

गुणपाल भी क्या था बिजली की भाँति कौंध रहा था। तूफान की भांति फूँकारे भर रहा था। उसने सभी ओर तीरों की वर्षा शुरू कर दी। वहाँ का वातावरण भयानक हो गया। रोने चिल्लाने की आवाजें आने लगीं। सरदार उसकी वीरता देख कर हैरान रह गया। कोई औंधा गिरा हुआ था, कोई भाग रहा था, कोई हाय-हाय कर रहा था। गुणपाल ने आगे बढ़ कर एक वार डाकू पति पर भी कर दिया, वह घायल हो गया और भाग गया। यह देख सभी डाकू रफुचक्कर हो गए और गुणपाल आगे बढ़ गया तथा जंगल की हवा से एक बार फिर उसका

घोड़ा बातें करने लगा। अचानक उसके कानों में किसी अबला की करुण आवाज़ पड़ी, जिसे कुछ व्यक्ति उठाए ले जा रहे थे। वह रो रही थी। अपने आप को छुड़ाने का प्रयत्न कर रही थी, पर उन गुण्डों के पंजे से कैसे निकल सकती थी। गुणपाल के क्षत्रिय लहू ने उछाली मारी। वह उन व्यक्तियों पर टूट पड़ा और बोला, छोड़ दो इसे वरना मार-मार कर मुर्गा बना दूँगा। जब उन व्यक्तियों ने देखा तो कुत्ते की भाँति दुम दबा कर भाग गए। मानो उन्होंने किसी दैत्य को देख लिया हो।

गुणपाल उस अबला के पास आकर बोला, बहिन ! तुम कौन हो ? ये व्यक्ति तुम्हें क्यों उठा लाए। वह बोली, भाई मेरा नाम रूपवती है। मेरे पिता जी का नाम ब्रह्मदत्त है। मैं कंचनपुर की रहने वाली हूँ। मैं अपने उद्यान में भ्रमण कर रही थी कि ये डाकू मुझे उठा लाए।

गुणपाल बोला—मैं भी कंचनपुर ही जा रहा हूँ। आओ मेरे साथ।

रूपवती—भाई साहिब आप उत्तम सज्जन पुरुष लगते हैं। आप ने मेरे शील धर्म की रक्षा की है। मैं इस उपकार का बदला जन्म-जन्म में भी न दे सकूँगी और न ही भूल सकती हूँ।

गुणपाल—बहिन ! मैंने आप पर तो कोई उपकार नहीं

किया, मैंने तो केवल अपने क्षत्रिय-धर्म का पालन किया है। अब तुम बताओ तुम्हारा घर कहां है? मैं तुम्हें वहीं बिना किसी बाधा के पहुँचा दूँगा।

रूपवति—मन ही मन सोचने लगी कि ये कितने शुद्ध विचार वाला मानव है। ज्ञात होता है यह धर्मात्मा पुरुष है यदि इसे मानव न कह कर महामानव कह दिया जाए तो कोई अनुचित नहीं है। जब उसने आँख उठा कर देखा तो उसके तेज प्रताप को उस की आँखें सहन न कर सकीं और बरबस नीचे की ओर झुक गईं।

गुणपाल—बहिन! किसी बात का संकोच न करें। जहाँ आप जाना चाहोगी वहीं पहुंचा दूँगा। इतना कह कर दोनों कंचनपुर की ओर चल पड़े। जब वे कंचनपुर के निकट पहुँचे तो उन्हें रूपवति के नौकर मिले जो रूपवति की ही खोज में भटक रहे थे।

उसके मिलते ही सब प्रसन्न हो गए। कुछ ही देर के बाद रूपवति का भाई रूपलाल भी आ गया। रूपवति अपने भाई को देखते ही उसके गले से लिपट गई और रोते-रोते सारी घटना कह डाली।

गुणपाल वहाँ खड़ा सब माजरा देख रहा था। रूपवती ने उसकी ओर संकेत करते हुए कहा इन्होंने मुझे डाकुओं के चंगुल से छुड़ाया है। रूपलाल बहिन की बात सुन कर

तत्काल ही गुणपाल के पास पहुंचा और नमस्कार किया तथा कहा—हे देवकुमार ! तुम्हें धन्य हो, बारम्बार धन्य हो आप की जननी को जिसने आप जैसे नर रत्न उत्पन्न किए हैं। आप कहाँ से पधार रहे हैं ? श्रीमान् जी आप आगे कहाँ जाने का विचार रखते हैं ?

गुणपाल बोला—मैं तिलकपुर से आ रहा हूँ और अभी आगे जाने का कोई निश्चित् प्रोग्राम नहीं है। रूप-लाल अच्छा आज रात्रि को आप हमारे यहाँ विश्राम कीजिए। आप जैसे महापुरुषों की सेवा से हमारा भी कल्याण हो जाएगा।

गुणपाल—मैं विदेशी हूँ। उत्तर में रूपलाल ने कहा—"भले ही आप कोई हों परन्तु हमारे लिए तो आप पूज्य-नीय हो, वन्दनीय हो, आदरणीय हो। आप की सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है। यदि आप की ऐसी ही भावना है तो चलिए—गुणपाल ने मुस्कराते हुए कहा।

गुणपाल, रूपलाल, रूपवति सब एक साथ चलते हैं। कुछ देर के बाद रूपलाल का घर आ जाता है। रूपलाल ने नौकर से कहा कि आप इनके अश्व को अश्वशाला में ले जाओ तथा घास पानी का प्रबन्ध करो। ब्रह्मदत्त अपने पुत्र की आवाज सुन कर शीघ्र ही नीचे उतर आया और रूपवति को देखते ही प्रफल्लित हो उठा। रूपवति ने भी

पिता को देखते ही उनका यथोचित सन्मान किया ।

सेठानी भी पता लगते ही दौड़ी हुई आई और उसे देखते ही गोद में ले लिया । रूपवति भी अपनी माता जी से लिपट गई और हिचकियाँ भर-भर कर रोने लगी । थोड़ी देर के वाद जव शान्तिमय वातावरण हुआ तव रूपलाल ने गुणपाल की ओर संकेत करते हुए माता-पिता से कहा कि—

"यह है वह वीर जिसने रूपवति के शील की रक्षा की । अत्याचारियों के पंजे से छुड़ाया । हमारा सन्मान सुरक्षित रखा, यदि ये समय पर न पहुँचते तो हमारा सर्व सम्मान धूल में मिल जाता ।"

सेठ ब्रह्मदत्त ने गुणपाल को स्नेह भरी दृष्टि से देखते हुए अपनी ओर खींच कर अपने वक्षस्थल से लगा लिया और कहा—हे वीर युवक ! तू मेरे घर का दीपक वन गया, मेरे लिए तो तू ही भगवान् वन कर आ गया, मेरे कुल की शान वन कर आ गया सो मैं तुम से पूछता हूँ कि—

तुम कोई देव हो अथवा कोई महान हो ।
रक्षक हो दीनों के या कोई भगवान हो ॥

आप इस धरती पर पापियों का संहार करने के लिए तथा दीन दुःखियों का उद्धार करने हेतु पधारे हो ऐसा ज्ञात होता है । किसी ने कहा भी है कि—

महापुरुषों से होता है, सदा उपकार दुःखियों का।
उन्हें ही तो सताता है, हमेशा प्यार दुःखियों का॥
कोई भी नहीं जिनका, महापुरुष उनके बनते हैं।
गिरते पड़ते दीनों को, खुद आकर आप उठाते हैं॥

गुणपाल—सेठ साहिब आप मुझे इतना लज्जित न कीजिये। मेरे अन्दर कोई महानता या विशेषता का गुण नहीं है। मैं भी केवल एक साधारण मानव ही तो हूँ।

सेठ—प्रिय वीर, मेरे लिए तो तू ही सर्वस्व है क्योंकि मेरे प्राण जो संकट में पड़े हुए थे उन को बचा कर मुझे जीवन दान दे कर मुझ पर महान् उपकार किया यही आप की महानता है। किसी ने कहा भी है—

अपना मोल हीरा भी भला कभी मुख से बताता है।
परख जौहरी ही करता है और उसका मोल जताता है।

रूपलाल—पिता जी काफ़ी देर हो गई है अब गुणपाल को ऊपर ले चलें। सेठ जी गुणपाल को ऊपर ले जाते हैं और बड़े स्नेह-पूर्वक अपनी बैठक में बिठाते हैं तथा सेठानी जी को स्वयं भोजन तैयार करने के लिए कहा।

सेठानी भोजन तैयार करने लगी। रूपवति माता की सहायता करने लगी। इधर रूपलाल ने गुणपाल को स्नानादि करा दिया तथा भोजन तैयार हो गया दासी ने आकर इस की सूचना दी। उसी समय सेठ जी, गुणपाल, रूपलाल भोजन करने बैठ गए। रूपवति ने अपने हाथों से भोजन

परोस दिया।

भोजन करने के पश्चात् तीनों भोजनालय से उठ कर बैठक में चले गए। सेठ ने पूछा अय वीर, तुम किसी भूपति के पुत्र रत्न ज्ञात होते हो।

गुणपाल बोला—सेठ जी आपका कहना बिल्कुल सत्य है मैं नेपाल नरेश का पुत्र हूँ। इस बात को सुनकर पिता-पुत्र दोनों आश्चर्य चकित हो गए और बोले—युवराज होते हुए इतनी उदारता ! धन्य है ! क्षत्रिय पुत्र तुम्हें शत-शत बार धन्यवाद।

गुणपाल—इसमें धन्यवाद की कौन सी बात है यह तो मेरा कर्तव्य था सो मैंने निभा दिया।

रूपलाल—आपका कहना तो उचित है परन्तु जरासिंध, कंस, दुर्योधन और रावण भी तो क्षत्रिय वंश में ही उत्पन्न हुए थे।

सेठ जी बोले—पुत्र तुम समझ न सके—

मानव-मानव में होता है अन्तर।
कोई हीरा है तो कोई है कंकर॥

भगवान् राम भी क्षत्रिय कुल में ही उत्पन्न हुए थे। पुत्र सभी कुलों में क्षत्री कुल ही सर्व श्रेष्ठ है।

रूपलाल—हाँ पिता जी ! इसी कुल में बड़े-बड़े अवतार पुरुष अवतरित होते हैं।

ग्यारह

चिन्तातुर नरेश

कंचनपुर नगर का नरेश वलवीर अपने राज सिंहासन पर विराजित धन वैभव के विषय में विचार कर रहे थे और सोच रहे थे कि प्रकृति के खेल भी कितने विचित्र हैं। यह कितना विस्तृत राज वैभव है परन्तु शोक ! महा शोक !! कि इसका उपभोग करने वाला कोई पुत्र रत्न नहीं हुआ। पुत्राभाव के कारण सारा राज वीरान-सा दृष्टिगोचर होता है। यह शल्य उसके कोमल हृदय को बार-बार विदीर्ण कर रहा था परन्तु विवशता के कारण विष को भी अमृत के रूप में समझ कर राजा सब कुछ सहन करता था। वह यह भी जानता था कि यह भी सब कर्मों की ही महिमा है।

मन्त्री जी ने जब राजा के चेहरे की आकृति को देखा तो दोनों हाथ जोड़ कर बोले—हे राजन ! आप चिन्ता के समुद्र में गोते क्यों लगा रहे हैं। क्या बात है ? जो कारण हो स्पष्ट-स्पष्ट कहें। हो सकता है मैं आपकी समस्या को सुलझाने में सहायक बन सकूँ।

राजा बोले—नहीं मन्त्रीवर! वैसे ही बैठे-बैठे किसी बात पर ध्यान चला गया वैसी कोई गहन समस्या व मानसिक चिन्ता नहीं है।

मंत्री—ऐसी कौन सी बात है जिसके कारण हजूर को उदास होना पड़ा।

राजा—क्या तुम नहीं जानते कि सूर्यास्त के पश्चात् प्रत्येक घर में दीपक की ज़रूरत पड़ती है, नहीं तो वहां अन्धकार का साम्राज्य हो जाता है।

मन्त्री—परन्तु देव! आप तो नराधिपति हो, आपको किसी वस्तु का अभाव नहीं है। फिर आप उदास होवें, इसका तो कोई (ज़रूर) विशेष कारण है।

राजा—मंत्री की बात को सुन कर तथा ठंडी साँस भर कर बोले—मंत्री जी, यह तो सत्य है परन्तु जिस घर में बच्चों की चरचराहट और टें-टें नहीं होती, वह घर श्मसान भूमि से अधिक नहीं होता। मैं सोचता हूँ कि मेरी इस विशाल सम्पत्ति, ऐश्वर्य और सुख का उपभोग कौन करेगा। कौन मेरे पश्चात् मेरे वंश को चलाएगा। मंत्री जी, यही चिन्ता मुझे रात-दिन खाए जा रही है।" इसके बाद कुछ देर तक मौन रहे और फिर बोले—आप यह भी तो जानते हैं कि मेरी इतनी विशाल सम्पत्ति और साम्राज्य को संभालने वाला अभी तक कोई भी बेटा उत्पन्न नहीं हुआ। एक ही

पुत्री है वह भी वेगाना धन है। उसे कब तक अपने घर में रखा जा सकता है। आखिर तो उसे किसी न किसी राज-कुमार के साथ अपना घर बनाना ही पड़ेगा। यदि मेरा एक भी पुत्र होता तो मुझे किसी प्रकार का दुःख न होता। इस बात का जब कभी भी ध्यान आ जाता है तो मैं उदास हो जाता हूँ।

मंत्री—राजन्! इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता क्योंकि यह तो प्रकृति की देन है और संयोग की बात है, सम्भव है अब तक आप का किसी जीव से संयोग न बंधा हो फिर हमारी तो यही हार्दिक भावना है और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपकी मनोकामना शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण हो और आपके जीवन में शान्ति आये।

राजा—(ठंडा साँस लेकर) अच्छा जो किस्मत में होगा हो जायेगा। इसी प्रकार का विचार करते हुए वे अपने राज कार्य में उलझ गए।

उधर राजकुमारी ललिता अपनी सखियों के साथ उद्यान में खेल रही थी। कुमारी स्वतन्त्र बाग में इधर-उधर घूम कर आनन्द का अनुभव कर रही थी, पीछे-पीछे सखियाँ भी जा रही थीं और परस्पर एक दूसरी से कुछ कहती जाती थीं।

एक सखी बोली—अरे? उद्यान क्या है सचमुच एक

स्वर्ग का नमूना है।

दूसरी—हाँ बहन यह भी प्रकृति की एक देन है।

तीसरी अरी सुनो तो सही वह देखो, कोयल कैसे राग अलाप रही है।

चौथी सखी—उंगली का संकेत करते हुए इधर भी तो देखो भ्रमर कैसे गुनगुनाते हुए मस्ती में झूम रहे हैं, जैसे कि उद्यान इन्हीं के लिए ही लगाया गया हो। यह सौन्दर्य भी अद्‌भुत है।

पाँचवीं ने कहा—उन पक्षियों को भी तो देखो, जो वृक्षों पर नृत्य कर रहे हैं और जान पड़ता है कि अपनी भाषा में एक दूसरे से कुछ कह रहे हों।

छटी ने हाथ हिलाते हुए कहा कैसे भाँति-भाँति के वृक्ष हैं, भांति-भाँति के फूल, कैसा मौसम सुहावना हम सब के अनुकूल।

सातवीं ज़रा इतरा कर बोली—क्या अनोखी बहार है चारों ओर गुलज़ार ही गुलज़ार है। इस बात को सुनते ही राजकुमारी की दृष्टि अनायास ही खिले हुए मनमोहक फूलों के एक गुच्छे पर जा पड़ी। सखियों को ओर लक्ष्य करके कहने लगी, आओ सखियो! देखो प्रकृति की इस अनुपम शोभा को। प्रकृति ने उन पुष्पों को कितना यौवन सुन्दर रूप एवं भीनी-भीनी सुगन्ध प्रदान की है।

मानो प्रकृति की सम्पूर्ण सुन्दरता यहीं पर एकत्रित हो गई हो। इस प्रकार राजकुमारी सखियों सहित प्रकृति का अवलोकन करती हुई जा रही थी। चारों तरफ से फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध आ रही थी। फूल इतने सुन्दर थे कि स्वयं मन उनकी ओर खिंचा जा रहा था। राजकुमारी एक फूल को देख कर ठिठक गई। फूल अति सुन्दर था, न जाने क्या सोचकर राजकुमारी उसे तोड़ने लगी परन्तु कर्म को कुछ और ही मंजूर था। फूल के समीप ही एक भयंकर नाग फण फैलाए बैठा था। ज्योंहि राजकुमारी फूल तोड़ने लगी उस नाग ने राजकुमारी के हाथ पर डंक दे मारा, उसके हाथ से रक्त की धारा निकल पड़ी। राजकुमारी के मुँह से एक चीख निकली और वह महलों की ओर अंधाधुन्ध भागने लगी परन्तु पैर फिसल जाने पर वह वहीं पर गिर पड़ी और मूर्छित हो गई। ज्योंहि सखियों ने उसकी यह दशा देखी, भागी-भागी उसके पास आईं और उसे उठाकर महलों में ले गईं। जब महारानी को इस बात का पता चला तो वह भी मूर्छित हो गई।

सखियां भयभीत थीं, एक तरफ खड़ी थीं, एक सखी राजा के पास भागती हुई गई और राजा को भी यह अशुभ सूचना दे दी। राजा ने जब यह सुना तो उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया और उसके मुँह से निकल

सर्प दंश



ज्यों ही राजकुमारी फूल तोड़ने लगी उसे नाग ने डस लिया ।

पड़ा—"नही-नहीं ऐसा नहीं हो सकता ।" राजकुमारी को कुछ नहीं हुआ होगा, राजकुमारी को कुछ नहीं होगा। कहाँ है मेरी वेटी । मेरे जीवन का टुकड़ा कहाँ है ? मंत्री जी हमें हमारी वेटी के पास ले चलो और जल्दी से मंत्र-वेत्ताओं और जन्त्र-मन्त्र वालों को वुलाओ जल्दी करो। इस प्रकार का विलाप करता हुआ राजा राजकुमारी के कमरे की ओर भागा । रानी को होश आया तो सही पर वेटी की हालत देख कर वह फिर मूर्छित हो गई । इधर मंत्र विशारद मंत्रिकों ने काफी उपचार किया परन्तु कोई भी यत्न सफल न हो सका । राजा मंत्रिकों के पांव पकड़-पकड़ कर रो रहा था। एक वार मेरी वेटी राजकुमारी को ठीक कर दो, मेरा सारा राज ले लो, वस मेरी राजकुमारी को ठीक कर दो ।

"प्रकृति के खेल भी निराले हैं, वही राजा जो हजारों लाखों नौकरों पर हुक्म चलाता था, वही आज भिखारियों की तरह मन्त्रिकों के पैर पकड़ रहा था। उनकी मिन्नतें कर रहा था परन्तु सभी वैद्यों, हकीमों ने ना के रूप में सिर हिला दिया, देखते ही देखते यह खवर जंगल की आग की तरह सारे शहर में फैल गई, क्योंकि राजकुमारी का प्रेम सब लोगों के साथ था । इसलिए लोग झुण्डों के झुण्ड वनाकर महलों की ओर जा रहे थे । शहर वीरान और

सुनसान हो गया था । बच्चे-बच्चे की आँखों से आँसू गङ्गा-जमुना की भाँति निकल रहे थे और सभी ईश्वर की ओर मुँह उठाये यही प्रार्थना कर रहे थे कि हे भगवान् ! हमारी राजकुमारी स्वस्थ हो जाये ।

फैलते-फैलते यह सूचना ब्रह्मदत्त सेठ के कानों में भी जा पड़ी, ज्योंहि सेठ जी ने यह सुना तो शोक के सागर में डूब गये । सोचने लगे कि बेचारे का कुल ही समाप्त हो गया । गुणपाल भी पास बैठा हुआ था, जब उसने भी यह खबर सुनी तो उदास हो गया ।

उधर राजकुमारी की हालत खराब होती जा रही थी । मन्त्री ने राजा को परामर्श दिया कि शहर में इस बात की घोषणा करवाएं कि जो भी राजकुमारी को स्वस्थ करने में सफल हो जायेगा, उसे भारी पारितोषिक से सम्मानित किया जायेगा । मन्त्री की बात राजा के मन को जच गई और उसने सारे शहर में घोषणा करवा दी कि जो भी राजकुमारी को ठीक कर देगा उसे बड़ा भारी पारि-तोषिक दिया जायेगा ।

गुणपाल जी ने भी उस घोषणा को सुना और सेठ जी से बोला—हमें भी राज भवन में जाना चाहिये । सम्भव है हमारे प्रयत्न से राजकुमारी का विष उतर जाये । सेठ जी ने उसकी बात मान ली और वे राज भवन की ओर चल

पड़े और राजभवन में जा पहुँचे ।

गुणपाल ने राजा से निवेदन किया—महाराज ! मैं भी राजकुमारी के विष निवारण का प्रयत्न करना चाहता हूँ । राजा ने तुरन्त ही आज्ञा प्रदान कर दी ।

गुणपाल को राजकुमारी के पास लाया गया । राजकुमारी मूर्छित पड़ी थी । राजकुमार गुणपाल ने राजकुमारी को बड़ी अच्छी तरह से देखा । वह कभी उसकी नब्ज को देखता तो कभी उसके शरीर को जो नीला हो गया था और फिर मुँह में कुछ बुड़-बुड़ा कर राजकुमारी का इलाज करने में मग्न हो गया ।

शीतल जल ले हाथ में, पढ़ा मंत्र नवकार,
छींटा देते ही तुरन्त, उतरा जहर विकार ।
पल भर में आंखें खोल दीं, बाजे खुशी के बज उठे,
तप्त हृदय शान्त हो गए, दुःख उन्हों के सब मिटे ।

वाह ! वाह !! की झंकार उठी हर ओर से मंगल गान हुआ,
गुणपाल को शीश झुकाएं सब अति वहाँ सम्मान हुआ ।

थोड़ी देर के पश्चात् राजकुमारी आँखें मलती हुई उठ कर बैठ गई । मानों कोई स्वप्न देखकर उठी हो और अपने पिता जी को और माता जी को पास देख कर बोली— "पिता जी, क्षमा करना, आज मुझे उठने में देर हो गई और इसके पश्चात् आँखें फैला कर बोली—"पिता जी, आज मैंने एक भयंकर स्वप्न देखा । स्वप्न में मैंने देखा

मुझे एक भयंकर नाग ने काट खाया।" यह सुन कर राजा की आंखों से हर्ष के आँसू वह निकले और अपनी प्यारी बेटी को प्यार देते हुए बोले—"बेटी यह स्वप्न नहीं हकीकत है। तुझे सचमुच ही एक नाग ने काट खाया था। यह तो भगवान् की तुम पर अपार कृपा है जो गुणपाल जैसा होनहार नौजवान तुम्हारी रक्षा के हेतु यहां पहुँच गया। फिर राजा ने गुणपाल का हाथ चूम कर तथा सिर पर प्यार देते हुए कहा—बेटा ! हम तेरे अत्यन्त आभारी हैं। तुम ने हमारी डगमगाती नैया को खिवैया बन कर बचाया।

"तुम्हें वैद्य कहूँ, देव कहूँ या महा इन्सान कहूँ।
सोच रहा हूँ रक्षक कहूँ या साक्षात् भगवान् कहूँ॥"

यह सुनकर गुणपाल बोला—महाराज ! मैं तो केवल एक साधारण सा व्यक्ति हूँ। न मैं देव हूँ, न भगवान्।

राजा—अरे! राम भी तो मानव ही थे जिन्हों ने दुःखियों का दुःख मिटाया था और सब जगह दुनिया में धर्म का झण्डा लहराया था। आज सारी दुनिया उन्हीं के नाम का स्मरण करती है। वह दुनिया का उद्धार करने आये थे और आपने मेरा उद्धार किया है। राम संसार के लिए सर्वस्व थे आप मेरे लिये सर्वस्व हैं। इसलिए मैं आप के सन्मान में क्या शब्द कहूँ। कुछ समझ नहीं आता। मेरे मन के भाव तो यही हैं कि :—

मेरे मन के तुम देवता हो, वगिया की मस्त वहार तुम्हीं,
मोती-लाल-जवाहर हो, मेरे जीवन की पतवार तुम्हीं।
गर तुम न आते तो, डूब जाती यह नैया,
ठीक मंझधार में आकर, मिले हो तुम खिवैया।
किस कुल के तुम उजियारे हो, किस नृप के राज दुलारे हो,
शुभ नाम अपना फरमाएँ, किस नगर से आप पधारे हो।

गुणपाल ने नम्रता से उत्तर दिया—राजन् ! मैं नेपाल नरेश का पुत्र हूँ। मेरा नाम गुणपाल है। मैं अपनी राजधानी से रत्नपुर नगर में आया था। वहाँ पर राजकुमार मनमोहन से मेरा स्नेह हो गया मैं वहीं पर ठहरा हुआ था कि अचानक प्रसन्न कीर्ति नरेश की पुत्री का किसी ने अपहरण कर लिया, सो मैं उसकी खोज करता हुआ रत्नपुर से यहां तक आ पहुँचा हूँ। यह सुन कर राजा खुशी में झूम उठा और कह उठा वाह ! मेरा तो हर प्रकार से निस्तारा हो गया, अन्धेरा था जिस राज में उजियारा हो गया। अब आप मेरा पारितोषिक अवश्य स्वीकार करें :—

पारितोषिक लेकर मेरे जीवन का उद्धार करो,
राजकुमारी का डोला और अर्धराज स्वीकार करो।

गुणपाल—राजन ! मैं इस समय विवश हूँ, इस पारितोषिक को स्वीकार करने में असमर्थ हूँ, क्योंकि मैं जिस कार्य के लिए निकला हूँ उसकी सिद्धि हुए विना कहीं भी किसी प्रकार के वन्धन को स्वीकार नहीं कर सकता हूँ।

हाँ केवल इतना कह सकता हूँ कि कार्य सिद्ध होने पर मैं आपके इस आदेश का पालन अवश्य करूँगा परन्तु इस समय मैं स्वीकृति के अतिरिक्त कुछ और करने में विवश हूँ क्षमा करें।

राजा—शाबाश, बहादुर नौजवान, मुझे तुमसे यही आशा थी। जिस कार्य के लिये आप घर से निकले हो उस कार्य में हम आपको पूर्ण सहयोग देंगे। हम आप के इस उपकार को कभी नहीं भूल सकते। गुणपाल की स्वीकृति मिलने पर राजा ने उसका खूब मान-सम्मान किया और निशानी के तौर पर उसे एक हीरों का हार तथा हीरा जड़ित मुद्रिका प्रदान की। चारों ओर से जयकारों के मध्य सभा को विसर्जित किया गया। जनता अपने-अपने आवासों की ओर प्रस्थान कर गई।

सेठ ब्रह्मदत्त गुणपाल आदि भी अपने-अपने मकान की ओर अग्रसर हुए। चारों ओर राजकुमारी के स्वस्थ हो जाने पर मंगल गान होने लगे। राज महल एक उत्सव स्थल बन गया। राजकुमारी के लिए गुणपाल की स्वीकृति मिलने पर विशेष प्रसन्नतामय वातावरण बन गया। इस प्रकार प्रसन्नता से भरा हुआ जन समूह राज परिवार आदि सब अपने-अपने काम में लग पड़े।

सेठ ब्रह्मदत्त जब घर पहुँचा, सेठानी ने उसका बहु-

आदर सत्कार किया और पूछा—कहिये प्राणनाथ, कहाँ से आ रहे हैं ?

सेठ—रूप की माँ क्या कहूँ, आज सारे शहर में गुणपाल का गुणगान हो रहा है जिस समय हम राज भवनों में गए उस समय वहाँ पर जाकर देखा कि सब वैद्यों और मंत्र वेत्ताओं के उपचार निरर्थक हो चुके थे परन्तु गुणपाल ने पानी हाथ में लेकर पता नहीं क्या मन्त्र पढ़ा और राजकुमारी पर छींटा डाला तो वह बात की बात में उठकर खड़ी हो गई। राजा ने खुशी में अर्धराज और राजकुमारी का डोला पारितोषिक के रूप में उसे भेंट किया।

युवक क्या है, गुणों की एक गुथली है। मेरे विचार में तो यह बात आई कि यदि रूपवती का सम्बन्ध उसके साथ हो जाए तो कैसा रहे।

सेठानी सेठ जी, मैं तो बहुत दिनों से यही सोच रही थी कि यदि यह बात बन जाए तो सोने में सुगन्ध वाली बात हो जाए।

सेठ ने दासी को संकेत किया, रूपलाल को बुला लाओ। दासी रूपलाल को बुला लाई।

रूपलाल पिता जी के चरण स्पर्श करता हुआ बोला—कहिए पिता जी, मेरे लिये क्या आज्ञा है ?

सेठ - पुत्र यह तो तुम्हें ज्ञात ही है कि गुणपाल जैसा

गुणपाल—अच्छा तो आप सब ने अन्दर जाकर यही प्रस्ताव पास किया है। आप तो जानीजान हो रूपलाल ने मुस्कराते हुए कहा।

अनायास ही सेठ ब्रह्मदत्त जी आ धमके तो दोनों ही स्वागत के लिए खड़े होते हुए आदर सत्कार करते हैं।

सेठ ने अपने यथा स्थान पर बैठते हुए कहा—राजकुमार जी आपने जैसे नरेश की बात का समर्थन किया, वैसे ही हमारी बात की ओर भी ध्यान दो। हम तो आप से पूरी-पूरी आशा रखते हैं कि आप हमारी विनती को कभी नहीं ठुकरा सकते।

गुणपाल—सेठ जी आपकी बात तो मैं समझ गया परन्तु अभी मेरा कोई निश्चित स्थान नहीं है इसलिये इस विषय में अभी कुछ नहीं कह सकता।

"जब आपका सब कार्यक्रम सफलीभूत हो जाये, उस समय तो आप स्वीकृति दे सकते हैं" सेठ ने कहा।

गुणपाल ने मुस्कराते हुये कहा—सेठ जी, यह लड़की तो अब मेरी बहिन बन चुकी है। दुष्टों के पँजों से छूटते हुए इसने मुझे भाई शब्द से सम्बोधित किया था। मैंने भी भाई का कर्तव्य पालते हुये इसकी रक्षा की थी। अब मैं इसे पत्नी के रूप में ग्रहण करना अधर्म समझता हूँ। आप का आग्रह देखते हुये मैं अपने मित्र के सन्मुख ऐसा प्रस्ताव

रख सकता हूँ। मुझे आशा है कि मेरा मित्र मेरे इस आग्रह को अस्वीकार नहीं करेगा।

गुणपाल की बात सुन कर सेठ जी का हृदय गद्गद् हो उठा। रूपवती ने आगे बढ़ कर गुणपाल के रक्षाबन्धन किया। गुणपाल इन कच्चे धागों से प्रेम तथा कर्तव्य की दृढ़ जंजीरों में बन्ध गया। परिवार के सभी सदस्य प्रसन्न थे।



जो मुख से बोल निकालते हैं, मुख में पहले तोलते हैं।
फिर आगे कदम बढ़ाते हैं, कभी न पीठ दिखाते हैं।

सेठ—जिस प्रकार हमें छोड़ कर जा रहे हो उसी प्रकार आकर सम्भाल भी लेना क्योंकि आप ही हमारे सब कुछ हो। गुणपाल बोला :—

प्रेम भाव तो दोनों ओर से एक ही जैसा होता है।
एक मोल का एक ही तोल का बराबर पलड़ा होता है।
एक ओर हो प्रेम की ज्योति दूसरी ओर भी हो जाती।
एक तरफ हो आग लगी तो दूसरी ओर भी लग जाती।

इस बात को सुन कर सब खिलखिला कर हंस पड़ते हैं।

गुणपाल—(हाथ जोड़कर) अच्छा तो अब हम चलते हैं, सुख रहा तो शीघ्र ही मिलेंगे। इतनी बात कहते ही उसने अश्व को एड़ लगाई और अश्व हवा में उड़ता हुआ नज़र आने लगा। राजा, सेठ आदि उसको तब तक निर्निमेष दृष्टि से देखते रहे जब तक वह आँखों से ओझल न हो गया। जब आँखों की दृष्टि से दूर निकल गया तब वापिस अपने घर लौट आए।

गुणपाल की कीर्ति और यश भूलोक पर ही नहीं बल्कि स्वर्ग लोक में भी फैला हुआ था। एक दिन ऐसे ही इन्द्रलोक में भी गुणपाल की बात चल पड़ी। इन्द्र गुणपाल की, देवताओं के सन्मुख खूब प्रशंसा कर रहा था कि

एक देव के मन में गुणपाल की वीरता और उदारता के प्रति सन्देह हुआ और उसने सोचा—'देखना चाहिए कि यह गुणपाल अपनी वीरता और उदारता में कहाँ तक सही उतरता है।" यह सोच कर उसने झट अपने शरीर को एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में बदल लिया और जिधर से गुणपाल जा रहा था उसी पथ के बीचो बीच बैठ गया। उसके शरीर से बदबू आ रही थी। शरीर पर जगह-जगह पर घाव पड़े हुए थे जिसे देखते ही कै आने को होता था। शरीर पर मक्खियाँ भिन-भिना रही थीं। उसके मुँह से हाय-हाय की ध्वनि निकल रही थी। जिसकी आवाज़ दूर-दूर तक जा रही थी। जब गुणपाल ने उसे देखा तो वहीं रुक गया और उसका दिल दया से पिघल गया। शायद कोई और मनुष्य होता तो वहाँ से नाक पर हाथ रख कर भाग जाता परन्तु गुणपाल ने ऐसा नहीं किया। वह अपने घोड़े से उतरा और उसके पास जाकर बोला—"महानुभाव, क्या बात है ? आप यूँ क्यों कराह रहे हैं, जो भी आपको कष्ट हो बिना किसी संकोच से कहो।"

वह कराहता हुआ बोला—मैं यहीं पास के गाँव में रहता हूँ। मैं खीरा गाँव को जा रहा था कि रास्ते में मुझे डाकुओं ने लूट लिया और मेरी...मेरी यह हालत बना दी। उसकी करुणा भरी कहानी सुनकर गुणपाल का

दिल पिघल गया और उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो उसे एक झरना दिखाई दिया। गुणपाल ने उसे बड़े प्यार से उठाया और उसे झरने के पास ले जाकर उसके घाव को धोकर साफ किया। उसके वस्त्र उतारे और नये वस्त्र पहनाये और तब उसके घावों पर देव प्रदत्त बूटी लगाई पर यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस बूटी का उन घावों पर कोई असर न हुआ।

गुणपाल हैरान था और सोच रहा था कि यह क्या बात है। सोचते-सोचते उसे ख्याल आया कि हो न हो यह कोई देव है क्योंकि देव प्रदत्त बूटी देवताओं पर कोई असर नहीं करती और वह दोनों हाथ जोड़ कर उस देव से बोला—"हे देव और अब न तरसाएँ और दास को अपने दर्शन देकर भाग्यवान बनाइये।" इस बात का कहना ही था कि देव अपने असली रूप में आ गया और उसने गुणपाल को आशीर्वाद देते हुए कहा—"गुणपाल हम तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे, जैसा हमने तुम्हारे बारे में सुना था उस से कई गुणा अधिक पाया। हम तुम से वहुत प्रसन्न हैं और तुम्हें इनाम स्वरूप एक तलवार देते हैं, जिसका कोई बार कभी खाली नहीं जाता और साथ ही उसने गुणपाल को यह भी बता दिया कि खीरा गाँव में पहुँचते ही सराय के पास एक बट वृक्ष है उसके पास ही ज़मीन में

अपार धन-सम्पत्ति है वह भी ले लेना ।

इतना कह कर वह देव अदृश्य हो गया और गुणपाल उस तलवार को देखता हुआ खीरा गाँव की ओर चल पड़ा और देखते ही देखते उसका घोड़ा उसे खीरा गाँव ले भी गया । गुणपाल देव की बताई हुई सराय के पास पहुँचा । खीरा गाँव देखने से पता चल रहा था कि यह गाँव बड़ी दीन अवस्था में है । चारों तरफ के खंडहर और उड़ती हुई धूल रो-रो कर उस गाँव की कहानी को ब्यान कर रही थी ।

इतने में गुणपाल के पीछे खड़खड़ाहट सी हुई । गुणपाल ने देखा थोड़ी दूरी पर दो परछाईयाँ चली आ रही थीं । जब वह पास आ गईं तो गुणपाल ने देखा, वह दो किसान थे । गुणपाल ने उनसे गाँव के और लोगों के बारे में पूछा । दोनों ने गाँव की और वहाँ के लोगों की दीन अवस्था का वर्णन किया और बताया कि कभी-कभी जब यहाँ वर्षा नहीं होती तो हमें खाने के लाले भी पड़ जाते हैं । गुणपाल को उनकी दर्दनाक कहानी सुन कर तरस आ गया और उसने उनको साथ ले जा कर वह खजाना खुदवाया जिसका देव ने वर्णन किया था । गाँव वाले उस अजनबी अतिथि को भगवान् समझ रहे थे और गुणपाल

सोच रहा था—

'कवित'

तकदीर देती साथ हो तो, लोहा भी सोना बने,
उल्टी हो तकदीर तो, न खाने को मिलते चने।
रत्नपुर में एक दिन मैं, फिर रहा था दीन सा,
तरसता था आसरे को, हाल जल बिन मीन सा।
अब वहाँ पर नाम मेरे की बड़ी प्रधानता,
बाल बूढ़ा हर कोई मुझ को वहाँ पर जानता।
आज मेरे सामने अनुपम यह धनराशि पड़ी,
सोई किस्मत थी मेरी आज सारी उठ खड़ी।
रेख कर्मों की निराली भेद इस का न मिला,
पहचान लेता जो इसे, महापुरुष वोही है भला॥

गुणपाल ने उन ग्रामवासियों को माँस भक्षण न करना तथा मदिरा सेवन न करने का हितोपदेश दिया। सब लोगों ने प्रतिज्ञा की कि "जब तक जीवन है तब तक इन वस्तुओं का भक्षण नहीं करेंगे।" उस दिन की रात्रि गुणपाल ने वहीं पर बितायी। लोगों ने गुणपाल की जितनी हो सकी सेवा की।

सुबह हुई तो गुणपाल ने एक वृद्ध से पूछा कि मुझे आप बताएँ यहाँ सिद्ध श्री महात्मा जी कहाँ पर रहते हैं।

उस वृद्ध ने कहा—"यदि आप उन्हीं से मिलना चाहते हैं तो मैं आपके साथ वहाँ तक चलूँगा।" वह वृद्ध गुण-

पाल को साथ लेकर सिद्ध श्री की कुटिया की ओर ले चला। रास्ते में यह भी बता दिया कि इस सिद्ध श्री बाबा ने कुछ ही दिन हुए मौन व्रत पूर्ण किया है, जो इन्होंने सोलह वर्षो से रख छोड़ा था। बातों-बातों में सिद्ध श्री का निजी स्थान आ गया। गुणपाल ने महात्मा को देखते ही नमस्कार किया और तन-मन से सिद्ध श्री जी की सेवा की। महात्मा गुणपाल को देख कर बोले, तू मेरे शिष्य की प्रेरणा से ही यहाँ तक पहुँच गया।

गुणपाल—महाराज! आपकी वाणी कभी मिथ्या नहीं हो सकती। मन ही मन में विचार करने लगा अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि इन्हीं की कृपा से मैं अपने कार्य में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करूँगा।

सिद्ध श्री महात्मा उसकी वीरता और उदारता से पहले ही प्रसन्न थे।

गुणपाल ने सिद्ध श्री से राजकुमारी के मिलने का मार्ग पूछा।

सिद्ध श्री बोले—यहाँ से जब तुम दीपनगर पहुँचोगे तो तुम्हें वहाँ पर एक संन्यासी से भेंट होगी, पर कहीं तुम धोखा न खा जाना, वह संन्यासी नहीं है, वह खटपटा होगा। "खटपटा"...गुणपाल हैरान होकर बोला—"हाँ।"

वह चटपटा चोर का भाई है, जिसने राजकुमारी का अपहरण किया हुआ है। उससे चटपटे का पता पूछना यह तुम्हारा काम है। यह सुन कर गुणपाल ने महात्मा को बार-बार प्रणाम किया और उनसे आज्ञा लेकर वहीं से दीपनगर की ओर प्रस्थान कर दिया।



तेरह

........देवी से भेंट विद्या प्राप्ति,

गुणपाल का घोड़ा अति तीव्र गति से दौड़ा जा रहा था, उस समय गुणपाल की दृष्टि एकाएक किसी बाग पर पड़ी। वह बाग मार्ग से कुछ हट कर था। बाग को देख कर उस के दिल में ख्याल आया इस बाग में पानी का साधन अवश्य होगा। गला भी प्यास के मारे सूख गया और होंठ भी खुश्क हो गये। इस प्रकार विचार करते हुए घोड़े को बाग की ओर ले गया। उद्यान के पास जाकर देखा तो पानी के फुव्वारे चल रहे थे, उद्यान की शोभा इतनी मनमोहक थी कि गुणपाल ने वड़ा आश्चर्य किया। थोड़ी देर तक बाग की सुन्दरता ही निहारता रहा। उस ने अश्व पर से उतर कर स्वयं भी पानी पीकर प्यास शांत की तथा अश्व को पानी पिलाया। जो एक छोटा सा नाला वन कर वह रहा था। जव घोड़ा पानी पी चुका तो उसे किसी एक वृक्ष की शीतल छाया में वाँध दिया और स्वयं उस उद्यान में भ्रमण करने लगा, और मन ही मन में विचार

कर रहा था कि स्वर्ग के मानिन्द इतना सुन्दर उद्यान कभी देखने में नहीं आया, परन्तु यहां पर कोई मानव भी तो देखने में नहीं आता। यह अति आश्चर्य की बात है।

इस प्रकार का विचार करते हुए वह उद्यान के दूसरे छोर पर जा निकला। चलते-चलते वह एकाएक खड़ा हो कर ध्यानपूर्वक देखने लगा कि एक बहुत ही सुन्दर चबूतरा है। उस के चारों ओर घने छायादार वृक्ष हैं और उन के बीच-बीच में अनेकानेक फूलों के बड़े मनमोहक झाड़ हैं, जिन में हर प्रकार के फूल अपने पूर्ण यौवन पर मस्ती में झूम रहे थे। मन्द-मन्द पवन बह रही थी। चारों ओर मनोमुग्धकारी वातावरण था। उसी रमणीय स्थल के मध्य में बने हुए चबूतरे पर एक अत्यन्त रूपवती स्त्री बैठी थी जिसे गुणपाल ने देखा। वह स्त्री इतनी सुन्दर तथा नव-यौवना थी कि भू-लोक में उस जैसी खूबसूरत कोई अन्य स्त्री दिखाई नहीं देती थी। उसके शरीर में से प्रकाश की रश्मियां सी निकलती हुई दिखाई पड़ती थीं, उस के मुख मण्डल का तेज अति प्रभावशाली सूर्य की भाँति दृष्टिगोचर हो रहा था। वह वहां बैठी अपनी मन्द-मन्द मुस्कान बिखेर रही थी।

गुणपाल को उद्यान में घूमते फिरते हुए उसने देखा तो वह भी उसके शरीर की सुन्दर शोभा और बनावट

को देर तक देखती रही। थोड़ी देर देखने के पश्चात् जब परस्पर एक दूसरे ने देखा तो देखते ही रह गये। उस स्त्री ने संकेत द्वारा गुणपाल को बुलाया। गुणपाल धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ उसके सन्मुख जा खड़ा हुआ। उस स्त्री ने दृष्टि भंग करते हुए पूछा—हे! वीर, आप कहां से पधार रहे हैं, किस कारण से आप का यहां आगमन हुआ?

गुणपाल बोला :—मैं कई नगरों में भ्रमण करता हुआ आज यहां पर आया हूँ और किसी विशेष कारण को लेकर इधर उधर घूम रहा हूं।

आप का नाम क्या है? युवती ने पूछा तथा किस विशेष कारण से घूम रहे हैं।

उत्तर में गुणपाल ने कहा, मुझे गुणपाल के नाम से पुकारते हैं। इस प्रकार अपना परिचय देते हुए अपनी बीती समस्त कहानी सुना डाली और पूछा कि आप भी अपना नामोंनिशान बताएं।

युवती बोली—मैं यहाँ के नराधीश की राजदुलारी हूँ, मेरा नाम उमा है, मैंने जब से आपको देखा है तब से मैं अपना सर्वस्व आप को समर्पण कर चुकी हूँ।

गुणपाल—मन ही मन में सोचने लगा कि यह राज-कुमारी तो दिखाई नहीं देती, कोई न कोई धोखा है, मुझे

सावधान रहना चाहिए। यदि यह राजकुमारी होती तो साथ में कोई न कोई सखी सहेली अथवा दासी भी तो दृष्टि-गोचर होती। चाहे कुछ भी हो मुझे इसके फंदे में नहीं फंसना चाहिए। अरे! यह तो आँख भी नहीं झपकती, साथ ही शरीर का प्रतिबिम्ब भी दृष्टिगोचर नहीं होता। इन आकारों से तो ज्ञात होता है यह कोई देवी ही है। गुणपाल को विचारों के समुद्र में डूबा हुआ देख कर वह युवती बोली—

'कविता'

मान ले कहना मेरा तो, सुख सभी भरपूर हों,
सम्पत्ति त्रिलोक की, आ मिले दुःख दूर हों।
दासी बन कर मैं रहूँगी, हर तरह सेवा करूँ,
दुनिया में जो नवीन वस्तु, तेरे सन्मुख ला धरूँ।
गर नहीं मानेगा तो यह शीश काटूँगी तेरा,
दुनियां से नाता सभी समाप्त कर दूंगी तेरा।

× × × × × × ×

गुणपाल हाथ जोड़ कर बोला—

माता मुझको छोड़ दे, मैं बच्चा नन्हा सा तेरा,
तुझ जैसी माता मेरी, पर स्त्री का नियम मेरा।
क्षत्री पुत्र कहलाता हूँ, नियम कभी नहीं तोड़ूँगा,
प्राणों की परवाह नहीं, पर सत न अपना छोड़ूँगा।

युवती—(मन ही मन में) यह मानव अन्न का कीड़ा हो-कर अपने नियम पर इतना अडिग होने का साहस करता है,

देखती हूँ कितना साहस है इसमें। कहाँ यह और कहाँ मैं। इसका और मेरा मुकावला क्या! एक चुटकी में उड़ा सकती हूँ इसे।" उसी समय उसने वैक्रियमय (अपना शरीर और शक्ल देवता और देवी इच्छानुसार बना सकते हैं) महाभयानक रूप बनाया और एक हाथ में त्रिशूल तथा दूसरे में खाँडा उठाया।

चारों दिशाओं में एक दम घनघोर अन्धेरा छा गया मानों एक भयंकर तूफान आया हो, बहुत से वृक्ष जड़ से उखड़ गये, विद्युत की भाँति कड़कड़ाती हुई उसकी ओर झपटी और गुणपाल इस प्रकार का दृश्य देख कर मन ही मन नवकार मंत्र का स्मरण करने लगा—

गुणपाल भी मन ही मन में नवकार मन्त्र को पढ़ते हैं।
जिसके आगे देवी-देव क्या इन्द्र तक भी डरते हैं॥
निडर वीर वह खड़ा रहा, नहीं जरा भी भय खाया।
धर्म गुरु का ले शरणा नवकार मन्त्र में चित्त लगाया॥
पुण्य प्रभाव देख कुमार का, देवी की तबीयत दहल गई।
एक दम पीछे लौट गई, वह मन ही मन में सहम गई॥

तूफान आदि का जो ताण्डव हो रहा था उस देवी के वापिस लौटते ही एक दम शाँत हो गया और गुणपाल की स्तुति करती हुई देवी अपने असली रूप में प्रकट हो गई और कहा—

गुणपाल! मुझे इस बात का अनुभव नहीं था कि

तुम सत् के पुजारी हो और प्रण पर मिट जाने वाले हो। अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि आप अपने धर्म और प्रण पर पूर्णतया अडिग हो। मैंने तुम्हारे से जो कहा था कि मैं किसी नरेश की पुत्री हूँ, उस बात में कोई तथ्य नहीं था और मैंने जिन कुचेष्टाओं का प्रदर्शन किया है वह सब तुम्हारी परीक्षा थी। मैं इस जंगल में निवास करने वाली उमा नाम की एक देवी हूँ।

मैं तुम्हारे सुदृढ़ विचारों से अति प्रसन्न हूँ, मैं तुम्हें दो विद्याएँ देती हूँ। एक तो रूप परावर्तिनी (रूप बदलने वाली), दूसरी रूप अलोपनी (रूप छिपाने वाली) ये दोनों विद्याएँ अति उत्तम हैं।

गुणपाल ने उपर्युक्त दोनों विद्याएँ विधि पूर्वक ग्रहण कर लीं। दोनों विद्याओं को पाकर गुणपाल का हृदय गद्-गद् हो गया और विनय भाव दर्शाता हुआ वापिस अपने स्थान पर लौट आया। वह मन में सोच रहा था कि जितनी जल्दी हो सके दीपनगर पहुँच जाऊँ और राजकुमारी को वापिस लाकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँ। इसी सोच में वह घोड़े पर भागा चला जा रहा था कि अचानक उसके कानों में किसी के कराहने की आवाज़ आई। गुणपाल ने देखा कि एक व्यक्ति औंधा पढ़ा कराह रहा है। उसके कपड़े फटे पड़े हैं। गुणपाल उसे देख घोड़े से उतर

पड़ा और उसके पास जाकर बोला—"भाई, आप कौन हैं?" पर वह व्यक्ति वैसे ही औंधा पड़ा रहा। लगता था उससे हिला-जुला नहीं जा रहा था। गुणपाल ने स्वयं उसे उठाया। ज्यों ही उसने उसका मुंह देखा, उसके मुंह से निकल पड़ा—"त...तुम!"

गुणपाल के सामने उस के मन्त्री का लड़का कंठाराम पड़ा हुआ था। गुणपाल ने झट से समीप के तालाव से पानी ले कर उस के घावों को धोया और कपड़े वदले तथा देव प्रदत्त वूटी से उसके घावों को ठीक कर दिया। उसके सचेत होने पर उसके इधर जंगल में आने का कारण पूछा। कंठाराम ने उसे वताया कि आपकी प्रसिद्धि नेपाल में जा पहुँची है और आपको आपके पिता जी ने माफ कर दिया है और मैं आप ही को ढूँढने आया हूँ। गुणपाल कंठाराम का जिगरी मित्र था। उसने कंठाराम को अपनी सारी कहानी सुनाते हुए कहा -"मैं तो अव राजकुमारी को ढूँढ कर ही वापिस आऊँगा।"

कंठाराम एक हंसमुख स्वभाव का व्यक्ति है। वह हंसने-हंसाने को ही जीवन समझता है। वह कद का ठिगना है। प्रत्येक वात में 'एसौ' शब्द कहना न जाने क्यों उचित समझता है।

गुणपाल कंठाराम को देख कर वड़ा प्रसन्न हुआ।

कंठाराम ने गुणपाल को यह भी बता दिया कि डाकुओं ने इसे किस तरह घायल कर के फैंक दिया था और उसका घोड़ा साथ लेकर चले गए थे। गुणपाल से कंठाराम आप बीती सुना रहा था कि इतनी देर में उन्हें उसका घोड़ा आता हुआ दिखाई दिया। बस, फिर क्या था—"अन्धे को क्या चाहिए दो आँखें" वाली कहावत घटित हो गई। कंठाराम अपने घोड़े पर सवार हो गया। अब दोनों यात्रा पर इकट्ठे ही चल पड़े।

मार्ग में गुणपाल की दृष्टि एक वृद्ध पर पड़ी। गुणपाल ने देखा वृद्ध बाबा का शरीर बहुत ही कृश तथा जीर्ण-शीर्ण हो गया है, चलते समय पांव लड़खड़ा रहे हैं। यह इस भयंकर अटवी में कैसे आ गया और कहां जाना चाहता है। इस प्रकार का विचार करते हुए गुणपाल ने वृद्ध को सम्बोधित किया कि—बाबा जी ! आप किधर से आ रहे हैं और कहाँ जाने का विचार रखते हैं। वृद्ध ने आँख उठा कर देखा तो देखते ही रह गया और कुछ साहस कर के बोला—बेटा ! मैं एक गरीब ब्राह्मण हूँ। इसी निकट वाले ग्राम से आ रहा हूँ और दीपनगर को जा रहा हूँ। मेरे एक ही पुत्र था उसकी मृत्यु हो गई अतः घर खाली हो गया। अब ग्राम छोड़ कर दीपनगर में अपनी पुत्री के घर जा रहा हूँ परन्तु मेरे पाँव नहीं चलते इसलिए मैं अति

दुःखी हूँ।

इस कहानी को सुन कर गुणपाल का कोमल हृदय दुःख से भर आया। गुणपाल ने वृद्ध से कहा—बाबा जी! आप मेरे घोड़े पर सवार हो जाएँ, मैं आप को दीपनगर में आपकी पुत्री के घर पहुँचा दूँगा क्योंकि मैं भी दीप नगर को ही जा रहा हूँ।

इन शब्दों को सुनकर वृद्ध का कण्ठ भर आया और गद्-गद् स्वर से बोला—युवक! तुम्हें धन्य है, अपरिचित और अकिंचन के साथ इतनी सहानुभूति प्रकट की।

गुणपाल—बाबा जी! इसमें धन्यवाद की क्या आवश्यकता है, यह तो हर मानव का कर्त्तव्य है। गुणपाल ने अश्व से उतर कर वृद्ध को उठाकर अश्व पर बैठा लिया। कुछ ही देर में दीपनगर दिखाई देने लगा। बात की बात में दीपनगर जा पहुँचे। सिंह द्वार को पार कर के गुणपाल का घोड़ा उस वृद्ध पुत्री के घर के आगे जा खड़ा हुआ। उसी समय एक नवयुवक ने आकर वृद्ध के चरणों का स्पर्श किया। वृद्ध ने उसे देखते ही गुणपाल से कहा—यह है मेरा दामाद! नन्दिनी ने भी आते ही अपने पिता जी का बहुमान सत्कार किया।

वृद्ध ने अपने जामाता और पुत्री को संकेत करते हुए कहा—बेटा! यह देवकुमार के सदृश क्षत्रिय पुत्र हैं, जिस

के कण-कण में करुणा का श्रोत वहता है, इसने ही मेरे को यहां तक पहुँचा दिया। यदि ये इधर न आते तो मेरा मार्ग में ही दम टूट जाता। इस बात को सुनते ही कपूर चन्द शर्मा ने आगे बढ़कर गुणपाल के अश्व की वागों को सम्भालते हुए कहा—हम गरीबों का घर भी तो पवित्र कीजिएगा! हम पर आपने बहुत बड़ा उपकार करके हमें कृतार्थ किया। हम आपके अत्यन्त आभारी हैं। इस-लिए कम से कम चन्द रोज आप हमारे यहाँ विश्राम करें ताकि हम आप की सेवा का लाभ उठा सकें। गुणपाल ने जब देखा कि सब के सब बहुत ही आग्रह कर रहे हैं तो उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और चन्द दिन ठहरने के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी और प्रेम भाव के साथ गुण-पाल और कंठाराम सुख शान्ति पूर्वक रहने लगे।



चौदह

......वृद्ध वैद्य

हीरे पन्नों से जड़ित एक सुन्दर भवन है, जिसके अनेक द्वार हैं और प्रत्येक द्वार पर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित प्रहरी गण सतर्कता पूर्ण खड़े हुए हैं किंतु उन सबके चेहरे पर उदासी छाई हुई है। इससे ज्ञात होता है कि ये किसी महाशोक-सिंधु में डूबे हुए हैं। सब की आंखें उस महल के मध्य भाग में रखे हुए रत्न-जड़ित स्वर्णमय पलंग की ओर लगी हुई हैं। जिस पर एक व्यक्ति पड़ा हुआ है। देखने में ऐसा ज्ञात होता है जैसे कोई अस्थि पिंजर हो। पलंग के चारों ओर स्त्री-पुरुषों का जमघट लगा हुआ है। पलंग की दाहिनी ओर राजा चतुरसेन विराजित हैं, दूसरी ओर महारानी इन्द्रा बैठी हुई है। रानी अपने पुत्र की ओर टकटकी लगाये हुए है। थोड़ी देर के बाद मन्त्री जी राज वैद्य के साथ प्रवेश करते हैं, साथ में कई देश देशान्तर के प्रमुख वैद्य और प्रसिद्ध मन्त्र वेत्ता और बड़े-बड़े

सभी ने अपने-अपने अनुभव के

परन्तु सब प्रयत्न निरर्थक गये।

एक दिन नरेश ने दुःखी हृदय से कहा– वैद्यराज ! राजकुमार की शारीरिक अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है, आप को तथा अन्य वैद्यों को चिकित्सा करते-करते काफी समय व्यतीत हो गया परन्तु आज तक कोई अन्तर दिखाई न दिया, क्या आप राज वैद्य कहलाने के अधिकारी हैं ? यदि मेरे जितेन्द्र को कुछ हो गया तो तुम भी अपने आपको जीवित न समझना ! याद रखना ! इसका परिणाम आपके लिये बड़ा भयंकर होगा। राज वैद्य—(हाथ जोड़ कर) राजन् ! मेरे पास ऐसी औषधियां हैं कि बहते पानी को भी बर्फ बना सकती हैं परन्तु राजकुमार को मैंने बहुमूल्य औषधियाँ दीं फिर भी कोई आराम वाली सूरत नज़र नहीं आई, इसलिए मुझे इस बात का स्वयं आश्चर्य है कि क्या कारण है जो औषधियों ने कोई अपना प्रभाव नहीं दिखाया।

दीर्घ श्वास भरते हुए राजा ने मन्त्री से कहा—मन्त्री जी ! राजकुमार का जीवन खतरे में है, तुम्हीं कोई उपाय सोचो। मन्त्री बोले–महाराज आज तक इसी बात का पता नहीं चला कि रोग क्या है ? तो चिकित्सा क्या होगी। राजा ने वैद्य की ओर संकेत करते हुए मन्त्री से कहा—यह राज वैद्य भी कुछ न कर सका, इससे ज्ञात होता है कि

इस के पास कुछ नहीं है अब तक मुफ्त के वेतन से ही मौज उड़ाता रहा। वस, मैं इसे केवल एक सप्ताह की अवधि और देता हूँ, यदि इस की औषधि ने कोई चमत्कार न दिखाया तो इन सब का सिर उड़ा दिया जाएगा। यह आज तक हमें यों ही धोखा देते रहे और मीठी-मीठी वातों का शरवत चटाते रहे।

इस वात को सुन कर सभी वैद्य भय के मारे कांपने लगे। इस अवस्था को देखते हुए मन्त्री जी ने हाथ जोड़ कर राजा से निवेदन किया—महाराज ! आप तो सव के मां-वाप हो, कर्मों की रेखा वड़ी प्रवल है, इस के आगे वड़े-वड़े अवतार पुरुष—यहाँ तक कि अरिहन्त और तीर्थंकर तक भी झुक गए। किसी ने क्या ही सुन्दर और मार्मिक शव्दों में कहा कि—

इस भाग्य ने है राम को, वन-वन फिराया था,
महासति अंजना को भी, नाना कष्ट दिखाया था।
भाग्य की ही ठोकरों से, द्वारिका में जल उठी ज्वाला,
नारायण प्यासे मरे वन में, न था कोई पूछने वाला ॥

इसलिए महाराज पुरुपार्थ करना मानव का परम कर्त्तव्य है, फल का प्राप्त होना न होना यह सव कर्माधीन है। मैं तो आप को यही परामर्श दे सकता हूँ कि आप सारे शहर में यह घोपणा करवा देवें कि जो राजकुमार

को स्वस्थ कर देगा उसे भारी पारितोपिक दिया जाएगा। राजा को यह बात जच गई। आखिर और कोई मार्ग भी तो नहीं था, इसलिये राजा ने यह घोषणा करवा दी कि जो राजकुमार को ठीक कर देगा उस के साथ राजकुमारी स्नेहलता का विवाह किया जाएगा और राज सभा में मान सन्मान दिया जाएगा। इस प्रकार की घोपणा दीपनगर के कोने-कोने में होने लगी।

जिस समय घोषणा करने वाला कपूरचन्द शर्मा के घर के द्वार के निकट पहुंचा तो गुणपाल और कण्ठाराम ने भी सुनी! गुणपाल के मन ही मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यदि नरेश का कुमार ठीक हो जाएगा तो मेरा राजा से परिचय हो जाएगा तब खटपटा चोर को पकड़ लेना मेरा बाएं हाथ का खेल होगा।

इस प्रकार विचार करते हुए गुणपाल ने कपूरचन्द्र शर्मा से कहा कि घोषणा के अनुसार मुझे राजमहल में जाना चाहिए। कपूरचन्द शर्मा बोले—क्या आपने भी आयुर्वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन किया है।

गुणपाल—हाँ जी, गुरुदेव की कृपा से कुछ जानता हूँ!

कपूरचन्द—तो क्या? मैं भी आपके साथ चल सकता हूँ?

गुणपाल—हाँ! हाँ!! क्यों नहीं पर एक बात का

ध्यान रखना होगा कि जिस समय मैं दीपनगर को आ रहा था उस समय जंगल में एक देवी से भेंट हो गई थी उसने दो विद्याएँ (रूप परिवर्तिनी) रूप को बदलने वाली तथा रूप आलोपिनी (रूप को छिपाने वाली) मुझे भेंट स्वरूप प्रदान की थीं। सो मैं रूप परावर्तिनी के प्रताप से एक वृद्ध का रूप धारण करूंगा फिर तुम मेरी सोटी पकड़ कर राजा के महलों तक पहुँचा देना। यदि कोई पूछे तो कह देना कि यह मेरे पिता जी हैं।

शर्मा—मैं तो हर प्रकार से आप के साथ हूँ, परन्तु राजा इस प्रकार के क्रिया-कलाप से कहीं कोप न हो जायें।

गुणपाल—इस बात की आप चिन्ता न करें हमें तो केवल यह देखना है कि नरेश अपनी प्रतिज्ञा पर कितना दृढ़ है।

शर्मा—तब तो ठीक है! सत्य की परीक्षा तो होनी ही चाहिए।

गुणपाल ने उसी समय एकान्त में जाकर रूप परावर्तिनी विद्या का स्मरण किया। विद्या ने उसी समय गुणपाल का साथ दिया और गुणपाल वृद्ध के सदृश दिखाई देने लगा। उसके सभी केश सफेद हो गए। सफेद दाढ़ी, वक्षस्थल तक चली गई, आँखें पोस्त के डोडे की भाँति और नाक लाल मिर्च की तरह दिखाई देने लगी। पिचका हुआ पोपला मुख,

डगमगाती हुई ग्रीवा, थर-थर कांपने वाले हाथ, पीछे की ओर झुकी हुई कमर दृष्टिगोचर होने लगी। अब उसने श्वेत चोला धारण किया और हाथ में लाठिया लेकर शर्मा और कण्ठाराम के सन्मुख आ गया। वृद्ध की सचमुच आकृति देखकर कपूरचन्द शर्मा और कण्ठाराम ने भी आश्चर्य किया। बूढ़े ने सोटी के नीचे का भाग शर्मा की ओर बढ़ाते हुए कहा कि मुझे शाही महलों में ले चलो। उसी समय शर्मा जी और कण्ठाराम वृद्ध की सोटी पकड़ कर राज महलों की ओर अग्रसर हुए। जब सिंह द्वार के सन्मुख पहुंचे तो पहरेदार ने डांटते हुए कहा कौन हो तुम? जो ऊंट की भांति मुंह उठाए जा रहे हो।

शर्मा—अजी यह तो मेरे पिता जी हैं, राजकुमार की चिकित्सा करने के लिए जा रहे हैं।

पहरेदार- वाह! वाह!! खूब आए बाबा जी।

अरे बाबा यदि तुम इतने श्रेष्ठ वैद्य हो तो पहिले अपनी झुकी हुई कमर तो सीधी कर लो और इस पोपले मुखमंडल की आकृति को ठीक करके कुछ चमत्कार दिखलाईए।

दूसरा पहरेदार बोला—अरे भाई इस बाबा जी को मत छेड़ो ये तो पूरे सिद्ध बाबा हैं! अगर ये चाहें तो अभी-अभी बीस वर्ष के युवक बन सकते हैं या तेरे को अपने जैसा

वृद्ध बना सकते हैं।

कुछ दूरी पर खड़ा हुआ एक कुबड़ा राज सेवक उन सब की बातें सुन रहा था, झटपट सामने आ कर बोला—महाराज ! आप राजकुमार की चिकित्सा तो पीछे करिए, पहले मेरे इस कुबड़ेपन की चिकित्सा करें, मैं इससे बहुत दुःख पा रहा हूँ। इस प्रकार कहकर, अपने टेढ़े-मेढ़े पाँवों को नचाते हुए हंसने लगा। तब तो रंगीले वैद्य दादा ने उसे अपने पास बुलाया और देवप्रदत्त बूटी का पानी जो पहले से घिस कर रक्खा हुआ था; वह एक चमचे में डाल कर पीने को कहा ! उसके पानी पीने पर उस की पीठ पर एक हाथ रख कर दूसरे हाथ से कमर को ज़ोर से झटका दिया; झटका लगने की देर थी, वहां एक अद्‌भुत दृश्य दिखाई दिया।

अब वैद्य के सामने एक हृष्ट-पुष्ट नवयुवक दिखाई देने लगा और वह युवक अपने शरीर को निर्निमेप दृष्टि से निहारने लगा। सभी पहरेदार भूमि के साथ सिर लगा कर बारम्बार उस वृद्ध को प्रणाम करने लगे और वाह : वाह कहने लगे।

कुछ समय पश्चात् वह नवयुवक दौड़ा-दौड़ा राजमहल में घुस गया और राजा के सामने दोनों हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। राजा ने उससे पूछा कि वह कौन है ?

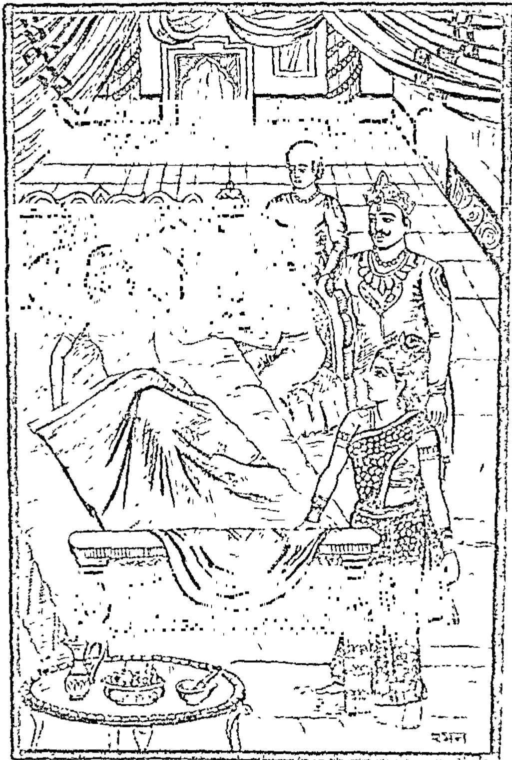
युवक—महाराजाधिराज, गरीब प्रवर, मैं आप का वही पुराना कुबड़ा सेवक हूँ। अब तो राजा आश्चर्य चकित हो कर उस सेवक की ओर देखने लगे और हैरान होते हुए बोले—वह तेरा कुबड़ापन कहां चला गया, यह सुन्दरता कैसे प्राप्त हुई ?

युवक -महाराज राजकुमार की चिकित्सा करने के लिए एक वृद्ध वैद्य जी बाहर खड़े हैं और उन्होंने क्षण भर में ही मुझे यह सुन्दरता प्रदान की। वह अन्दर आने के लिए आपकी आज्ञा चाहते हैं।

इतनी बात सुनते ही नरेश स्वयं उसी समय उठ कर द्वार की ओर भागे और वृद्ध वैद्य को छाती से लगा कर बड़े आदर सत्कार सहित अन्दर ले आए। राजकुमार की ओर संकेत करते हुए राजा ने कहा—यह है मेरे जीवन का सहारा, आप इसे अच्छी तरह से देखिए कि क्या रोग है। वृद्ध वैद्य एक सिंहासन पर बैठते हुए राजकुमार से बोले—बेटा हमें अपना हाथ दिखलाओ।

राजकुमार का हाथ वृद्ध वैद्य ने अपने हाथ में लेते हूए कुछ सोच कर बोले—अरे ! यह तो बहुत पुराना रोग हो गया है (राजा कुछ सहम कर) क्यों ? कुछ आशा भी है या टू...?

वृद्ध वैद्य (उदासी से) क्यों बताऊँ यदि एक घंटा हम



वृद्ध वैद्य ने बीमार राजकुमार को देखा ।

यहां पर और न आते; तो जीवन की बाजी हाथ से निकल जाती, परन्तु अब आप चिंता न करें, राजकुमार बिल्कुल स्वस्थ हो जाएँगे। इस बात को सुन कर नरेश को कुछ ढाढस हुआ।

राजा ने वैद्य जी से कहा—आप को जिस सामग्री की आवश्यकता हो फरमाईए।

वृद्ध वैद्य जी बोले—हमें केसर, कस्तूरी, चन्दन, केवड़ा और गुलाब मंगवा दीजिए। साथ ही मोती, मूंगा, हीरा एवं स्वर्ण-रजत की भस्में और अनेक जड़ी-बूटियों के नाम गिनवा दिए। कण्ठाराम जी बीच में ही बोले—ज़रा थोड़े से फल भी मंगवा देना, दवाई में डालने के लिए चाहिएं।

राजा ने पास में बैठे हुए राज वैद्य से, बाजार से सभी वस्तुएं लाने को कहा। थोड़ी देर के पश्चात् राज वैद्य ने सभी वस्तुएं ला कर वृद्ध बाबा के सन्मुख रख दीं। बाबा ने एक जड़ी राज वैद्य को दी और कहा कि आप इसे रगड़िए, किसी को केसर, कस्तूरी रगड़ने के लिए दिया, किसी को कुछ और किसी को कुछ दिया और आप चन्दन ले कर घिसने लगे। इधर कण्ठाराम जी आँख बचा कर अपनी पेट पूजा करने लगे, यानि चुपके से फल खाने लगे। एक सैनिक ने उन्हें फल खाते हुए देख लिया और वह उस से बोला—"अरे ! यह दवाई के फल क्यों खा रहे हो ?"

कंठाराम बात बना कर बोला—ऐसो, मैं तो स्वाद देख रहा हूँ कि कौन सा फल दवाई में पड़ना है, कौन सा नहीं। इतने में सभी वस्तुएं तैयार हो गईं; केसर-कस्तूरी, चन्दन इनकी गोलियां बना ली गईं और कुश्ते-भस्म आदि का मिश्रण कर दिया गया तथा शेष जड़ी-बूटियों को घिस कर हाथ-पाँव पर लेप कर दिया गया और गोलियों को उसे सुंघाया गया, फिर चन्दन, केवड़ा, गुलाब जल में डाल कर स्नान करवा दिया गया।

इस सर्व क्रिया-कलाप के पश्चात वैद्य ने देवमयी बूटी का एक चमच राजकुमार के मुख में उंडेल दिया और अपने हाथों से बूढ़ा बाबा राजकुमार की पीठ को सहलाने लगा। राजकुमार की सारी बिमारी क्षण भर में शाँत हो गई। सूखी हुई चमड़ी में तरुणाई आ गई। समस्त शरीर विद्युत की मानिंद चमचमाने लगा और राजकुमार का मुखमंडल सूर्य की भाँति प्रकाशमान प्रतीत होने लगा।

राजकुमार उसी समय उठ कर खड़ा हो गया। राजा ने यह दृश्य देखा तो राजकुमार को उसी समय छाती से लगा लिया। सब के हृदय में प्रसन्नता छा गई—

"खुशी के बाजे बजने लगे, सब मिलकर मंगल गाते हैं।
बन्धन मुक्त किए सर्व कैदी, राजा हर्ष मनाते हैं॥
चहुँ ओर से झंकार उठी! बूढ़े बाबा की जै बोलो।
बूढ़े बाबा की चरण रज को, अपने मस्तक पर ले लो॥

सब झूमझूम कर हर्ष मनाते, बाबे के गुण गाते हैं।
बाल, बूढ़े सब नर-नारी, वृद्ध को शीश झुकाते हैं ॥

राजा, रानी, सभी आनन्द विभोर हो कर अपनी स्मृति को खो बैठे। कुछ समय पश्चात् होश आने पर राजा ने हाथ जोड़ कर वृद्ध वैद्य से प्रार्थना की कि—

जो इच्छा है सो मांग लीजिए, सो ही मैं दे दूंगा।
क्षण भर की भी देर नहीं, जो कहा सो कर दिखला दूंगा ॥

बूढ़ा बाबा यह सुन कर अपनी सफेद दाढ़ी को सहलाने लगे और मुस्कराहट से बोले—"जो माँगूंगा दे दोगे।"

"हाँ! अवश्य हम कभी भी अपने वचन से नहीं फिरते।" कंठाराम जी गुणपाल के कान के पास मुँह ले जाकर बोले—ऐसौ—सोना मांग लो! सोना बड़ा महंगा है।

गुणपाल ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और बोले—राजन्! भगवान् की कृपा से बाकी तो सब कुछ मेरे पास है पर जिस दिन से मेरी बुढ़िया की मृत्यु हो गई—(रोने लगता है) हाय! मेरी बुढ़िया। राजा उसे रोता देख कर बोले—

"हाँ! हाँ!! कहिए" फिर बूढ़ा आँखें पोंछता हुआ बोला—हाँ! हां!! तो जिस दिन की मेरी बुढ़िया की मृत्यु हो गई उसी दिन से मुझे [illegible] ख-शान्ति [illegible] ती

देने वाला नहीं रहा। "मुझे अपने हाथों से रोटी पकानी पड़ती है।" साथ में कण्ठाराम भी रोने लगता है—"हाय! हाय!! मेरी अम्मां तू कहाँ चली गई।" वृद्ध बाबा कंठा राम को धैर्य देते हुए बोले—बेटा चुप रहो। अभी आजकल में ही तुम्हें नयी मां मिल जाएगी। इसके पश्चात् राजा की ओर मुख उठा कर वृद्ध बाबा बोले—आप मुझे अपने वचन के अनुसार अपनी राजकुमारी दे दीजिए, ताकि मेरे शेष दिन सुख से गुज़र जाएं और इसको भी नई मां मिल जाए।

"सुन कर बात वृद्ध वैद्य की राजा का दिल हिचकता है।
मन ही मन में सोच रहा, नहीं मुख से बोल निकलता है।
सोच विचार अनेक करी पर निर्णय नहीं कर पाता है।
दुःख से हृदय दुःखी हुआ, राजा का सिर चकराता है"।

राजा को सोच में डूबा देख बूढ़े बाबा बोले—क्यों राजन! चुप क्यों हो गए, आपने ही तो कहा था जो मांगोगे सो ही दे दूँगा; अब पीछे क्यों हटते हो, क्या यही क्षत्रिय धर्म है? क्षत्रिय तो प्रण की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान भी कर देते हैं, पर आप पर मुझे क्षत्रिय होने का सन्देह है। किसी ने कहा है कि—

शरण में आए को दे नहीं शरणा, क्षत्रि का यह कर्म नहीं।
वचन से अपने फ़िर जाए यह, क्षत्रि वीर का धर्म नहीं।

देकर वचन जो फिर जाते, वह कुल को दाग लगाते हैं।
इस लोक में निन्दा होती है, परलोक में दुःख उठाते हैं।

इन शब्दों को सुन कर राजा का सिर झुक गया, इस प्रकार की दशा देखकर मंत्री जी बोले—

वैद्य जी आप जो कहते हैं कि वचन पूर्ण निभाना ही क्षत्रिय का धर्म है यह तो सब ठीक है परन्तु बूढ़े के साथ नवयौवना सुन्दर राजकुमारी का सम्बन्ध जोड़ देना यह कौन सा क्षत्रियों का कर्म है।

मंत्री की बात सुन कर बूढ़े वैद्य जी ने अपनी बूढ़ी आँखें मंत्री जी की तरफ उठाई और बोले—य...य...य यह तो आप को घोषणा करवाने से पहले सोचना चाहिए था। यदि आप लोग अपने वचन को पूर्णतया नहीं निभा सकते तो मैं चला जाता हूँ।

राजकुमारी स्नेहलता दरवाजे पर खड़ी सब बातें सुन रही थी। वह एक दम वृद्ध बाबा के आगे आ खड़ी हुई और बोली—

"श्री रामचन्द्र के वचन पिता का, पूर्ण कर दिखलाया था।
राज पाट वैभव सारा, क्षण भर में ठुकराया था॥
मैं भी उसी कुल में जन्मी हूँ, पिता का वचन निभाऊंगी।
दासी बन कर रहूं साथ में, तुम चरणों से नेह लगाऊंगी"॥

उसकी बातें सुन कर वृद्ध भी नेत्र फाड़ कर उसको देखता रह गया। मन को संतुलित करके बोला—राज-

कुमारी ! हम तुम से बहुत प्रसन्न हैं। मैंने तो समझा था कि इस राज्य में क्षत्रियत्व का अंश ही समाप्त हो गया है। तुम्हारे विचारों का मैं आदर करता हूँ। मैं तो तुम्हारी परीक्षा ही ले रहा था। तुम परीक्षा में पास हो गई हो, अब मुझे जाने दो, मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं रही। उसकी बातें सुन कर स्नेहलता बोली—नहीं नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता, कुलीन स्त्रियों का संसार भर में एक ही पति होता है। यदि आप मुझे यहाँ छोड़ जाएंगे तो यह शरीर तो यहीं रह जाएगा परन्तु प्राण आप के साथ जाएंगे।

राजकुमारी के इस हठ को देख कर राजा, रानी उसे समझाने लगे परन्तु राज कन्या ने किसी की भी परवाह न की। वृद्ध वैद्य जी भी इस बात को देख कर चकित रह गए और बोले—कि राजकुमारी ! तुम्हें अपने माता पिता की आज्ञा शिरोधार्य करनी चाहिए (जरा खांस कर) मुझ बूढ़े का क्या पता कब चल बसूं।

राजकुमारी बोली—"हे स्वामी ! मुझे अधिक न रुलाओ और इतना कठोर हृदय न बनाओ" इस तरह कहती हुई राजकुमारी वृद्ध के चरणों में जा पड़ी।

उसी समय वृद्ध बाबा भी अपने असली रूप में प्रकट हो गया। देव कुमार सा वह दिव्य रूप देख कर सारे

आश्चर्य करने लगे और सबने दाँतों तले उंगली दबा ली। राजा ने भी दौड़ कर गुणपाल को छाती से लगा लिया।

महारानी इन्द्रा ने भी हैरानी के साथ उससे पूछा कि बेटा ! तुम किस नरेश के राजकुमार हो अथवा शक्रेन्द्र सभा के दिव्य देव हो, क्योंकि तुमने जो यह आश्चर्यकारी चमत्कार दिखाया, यह किसी साधारण मानव का काम नहीं है।

रानी की बात सुनकर गुणपाल बोले—मैं कोई देव नहीं हूँ न शक्रेन्द्र हूँ, मैं केवल नेपाल अधिराज का पुत्र हूँ।

राजा इस बात को सुन कर गद्-गद् हो उठा और कहने लगा—

तुम ही हो बस देव हमारे, शान्ति रस की धारा भी।
पूज्य हमारा जीवन सहारा, सबका प्राण प्यारा भी।
तू ही उठैया तू ही खवैया, तू मेरे सुख का निर्माता।
गर आज न आते मेरे दर पर, मेरा दीपक बुझ जाता।

राजा—हे कुमार ! आज तो मेरे लिए बहुत अधिक प्रसन्नता का दिन है। जिस की मुझे स्वप्न में भी आशा नहीं थी। उसे मैं आज प्रत्यक्ष रूप में देख रहा हूँ। तुम तो मेरे घनिष्ट मित्र के पुत्र हो ! मेरे दिल में तो बहुत चिर से यह आशा थी कि अपनी स्नेहलता का संबन्ध आप से जोड़ दूं। पिछले वर्ष मैंने अपना गुप्तचर आपके

पिता के पास भेजा था कि मैं अपनी कुमारी का सम्बन्ध गुणपाल के साथ करना चाहता हूँ, परन्तु आपके पिता ने यह कह कर टाल दिया कि गुणपाल राज को छोड़ कर किसी अन्य स्थान पर चला गया। उसका कुछ पता नहीं चलता कि वह इस समय कहाँ पर है। मैं तो अपना मन मार कर बैठ गया था परन्तु मेरे भाग्य ने मेरा साथ दिया जोकि घर बैठे-बिठाए अनायास आप से भेंट हो गई। यह मेरें परम सौभाग्य का फल है।

इसीलिए तो मैं बार-बार कहता हूँ कि तुम मेरे सब कुछ हो। अब आप स्वतंत्र हो। मेरी इस स्नेहलता का पाणी ग्रहण करें।

इस बात को सुन कर गुणपाल बोले—राजन्! इस समय मैं, एक बड़ी विकट समस्या में उलझ रहा हूँ। जब तक उसका समाधान नहीं हो जाता तब तक मैं आपकी बात स्वीकार करने में विवश हूँ। हां! अपने लक्ष्य की पूर्ति के पश्चात् आप के आदेश का पूर्णतया पालन कर सकूंगा। इस समय तो आप मुझे क्षमा ही करें।

समस्या की बात सुन कर राजा बोले—ऐसी क्या कठिन समस्या जो आप के सन्मुख आ गई? उत्तर में गुणपाल ने चन्द्र प्रभा की सारी कहानी ज्यों की त्यों कह सुनाई।

सारी कहानी सुन कर राजा के मुंह से स्वयं निकल पड़ा कुमार ! तुम धन्य हो, दूसरों की भलाई के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न करते हुए जीवन की आहुति दे डालते हो । इस महान वलिदान के लिए मेरे पास कोई ऐसा दृष्टान्त नहीं जिससे आपकी तुलना कर सकूं । राजा ने जी भर कर गुणपाल की प्रशंसा की और कुछ दिन अपने यहाँ ठहरने के लिए कहा ।

गुणपाल ने कहा कि आपके कहने के अनुसार मैं कुछ दिन के लिए ठहर जाता हूं परन्तु मुझे रहने के लिए मकान विल्कुल एकान्त में चाहिए । राजा ने हाथ का संकेत करते हुए कहा कि वह जो सामने सुन्दर महल है वह अभी-अभी तैयार हुआ है ।

उस महल का निर्माण राजकुमार जितेन्द्र के निमित्त ही किया गया है । वह इस समय खाली है । आप चल कर देख लीजिए । राजा, रानी, जितेन्द्र, मंत्री सभी गुणपाल के साथ गए । गुणपाल ने देखा कि वह सप्त खण्ड महल स्वर्ग के तुल्य वना हुआ है । राजा ने उसे सभी कमरे दिखा दिए । प्रत्येक कमरों में यथा योग्य स्थानों पर हर प्रकार की सजावट हो रही थी और सर्व प्रकार के उपकरण परिपूर्ण थे । राजा ने पाँच परिचारक और दो परिचारिकाएं

गुणपाल के लिए निश्चित कर दिए। अब गुणपाल कण्ठाराम के साथ उस महल में रहने लगा। राजा, रानी, जितेन्द्र, मंत्री, कपूर चन्द शर्मा वापिस अपने आवासों की ओर प्रस्थान कर गए।



पन्द्रह

········सौदागर खटपटा

एक युवक जिस की छाती चौड़ी है, भव्य ललाट है, जिस पर शितेज चमक रहा है, बड़ी-बड़ी आंखें हैं। जो गज समान मस्तानी चाल से चल रहा है। जिसे देखते ही अनायास ही हृदय में आदर का भाव उत्पन्न होता है और मस्तक नत हो जाता है, परन्तु सौदागर का किसी व्यक्ति की ओर ध्यान नहीं है। जिसके तन पर वेश कीमती वस्त्र और जवाहरात के आभूषण पड़े हैं जो उस के धन वैभव को सूचित कर रहे हैं। वह राज पथ पर चलते हुए उस नगर के प्रमुख जौहरी रामजीलाल की आलीशान दुकान के सामने जा खड़ा हुआ। उसे देखकर रामजीलाल ने किसी देश का भूपति समझ कर उसका बहुमान करते हुए उसे राजोचित आसन पर बैठाकर युगल कर जोड़ कर नम्रता-पूर्वक प्रश्न किया कि—कहिये ! मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ। आपने यहां पधार कर मुझे दर्शन देकर कृतार्थ किया, कृपा कर आज्ञा फरमावें।

इस प्रकार उस की प्रार्थना सुनकर सौदागर बोला— सेठ जी मैंने आप की बहुत प्रशंसा सुनी है, आपके यहां एक से एक बहुमूल्य रत्नों का संग्रह है। क्या कुछ रत्न दिखाने की कृपा करेंगे ! मुझे कुछ रत्नों की आवश्यकता है।

यह बात सुनकर जौहरी ने अपनी रत्न-मंजूषा खोल कर उस में से रखे हुये कुछ रत्नों की प्रशंसा करने लगा, जिसे सुनकर सौदागर मुस्करा कर कहने लगा—"सेठ जी बस कीजिये, इन साधारण कंकरों की प्रशंसा के पुल न बांधिये।"

इस प्रकार कह कर अपनी जेब से एक मंजूषा (डिब्बी) निकाल कर उस में रखे हुए चन्द्रकांत मणि, सूर्यकांत मणि, रूड़ा मणि, वज्रहीरा तथा बहुमूल्य लाल जौहरी के सामने रखे। उन रत्नों की प्रभा से सारा भवन आलोकित हो उठा।

करोड़ों के मूल्य के रत्नों को देखकर जौहरी आश्चर्य चकित होकर एक टक से निहारने लगा। उस समय सौदागर ने कहा—सेठ जी मुझे ऐसे रत्नों की आवश्यकता है। यदि इन से भी श्रेष्ठ हो तो दीजिये, आप की अति कृपा होगी। मुझे बहुमूल्य रत्नों का संग्रह करने का एक व्यसन सा है।

उत्तर में सेठ ने कहा—इन से बहुमूल्य तो क्या इन

जैसे रत्न भी मेरे पास नहीं है। "अच्छा चलो कोई बात नहीं आपके पास पंच कल्याणी घोड़ा भी है, क्योंकि जब मैं अन्दर आ रहा था, तो एक पंच कल्याणी घोड़ा अपने बँधन तुड़ा कर द्वार से भाग रहा था !" बात बनाते हुये सौदागर ने कहा।

घोड़े की बात सुनते ही सेठ जी की अकल के तोते उड़ गये। वह घोड़ा सेठ जी को अपने प्राणों से भी प्यारा था। सेठ जी ने घबराते हुये सौदागर से पूछा।" किस दिशा को गया है ?

"पूर्व की ओर जा रहा था सौदागर ने ग्रीवा हिलाते हुये कहा।"

सेठ जी उधर ही चल दिये।

थोड़ी देर के बाद ऊपर की मंजिल से एक बीस वर्षीय युवती नीचे उतरी। जिस के शरीर पर नाना प्रकार के रत्नालंकार उसकी सुन्दरता को बढ़ा रहे थे। उसने उतरते ही सौदागर से पूछा—"जौहरी साहिब कहाँ गये ? सौदागर—अजीं क्या बताऊं बताने योग्य बात नहीं है। इस से सेठानी के मन में कौतूहल उत्पन्न हुआ और कहा ऐसी क्या बात है आप मुझे अवश्य बताएं। सौदागर बोला—यहां पर अभी-अभी एक नटखटी युवती आई थी। उसने आते ही सेठ जी को संकेत किया, उस का संकेत पाते ही सेठ जी

उसके पीछे-पीछे चल दिये। आगे मुझे ज्ञात नहीं कि क्या गिट-मिट है !

सेठानी तनिक आवेश में क्रोध से होंठ काटती हुई बोली—अच्छा यह बात है।

खूब धोखा दिया वाह रे लाला।
तन तो सफेद पर मन है काला॥
आज तक तूने मुझे झमेले में डाला।
आज करूंगी तेरा भी मुंह काला॥

सेठानी ने सौदागर से पूछा वह सत्यानाशी किधर को गया है।

वह पूर्व की ओर गया है—सौदागर ने नाक चढ़ाते हुए कहा।

यह सुनते ही सेठानी उसी ओर को चली गई।

थोड़ी देर के बाद सेठ घोड़े को लेकर आ गया उसे ठिकाने बाँध कर दुकान पर आया तो सौदागर को किसी गम्भीर विचार धारा में लीन देखा। सेठ ने आते ही कहा "आप क्या विचार कर रहे हैं।"

सौदागर—सेठ जी क्या बताऊं प्रकृति के नियमोप-नियम भी कुछ अज़ीब ढंग के हैं। आज के युग में तो भले बुरे की पहचान भी असंभव है। 'ऐसी क्या बात हो गई तनिक मैं भी तो सुन पाऊं!' सेठ ने आश्चर्य के साथ पूछा।

सौदागर–जब आप घोड़े की खोज के लिए गए थे तभी एक नवयुवक आया था वह इधर-उधर देखकर ऊपर चला गया और उल्टे पाँव वापिस उतर आया। सेठानी भी उसके साथ थी। वह सेठानी से कह रहा था–"बहुत दिनों के पश्चात् आज समय मिला है, अब तुम शीघ्र गति से कदम बढ़ाओ। सेठ जी आ गये तो समस्या उलझ जाएगी।" तभी से मैं इसी विचार धारा में बह रहा हूं कि हे प्रभो! जब बड़े-बड़े घरों की ऐसी वृत्ति है तो अन्य घर वालों की क्या दशा होगी। सेठ आश्चर्य चकित होता हुआ बोला– अन्धेर! अन्धेर!! महाअन्धेर!!! सच कहा है किसी ने :—

स्त्री का भेद किसी ने भी नहीं पाया, इनके आगे तो देव भी हार गए और ब्रह्मा ने भी धोखा खाया।

वह बेसहूरी किस ओर को गई है–सेठ ने दांत पीसते हुए पूछा। यहाँ से तो वह पूर्व दिशा की ओर गई है सौदागर ने आँख टमका कर कहा।

सेठ–मैं उसे अभी ढूंढ कर ले आता हूं आप यहीं पर विराजिए।

जब सेठ चला गया तो सौदागर ने तिजोरी के ताले बात की बात में तोड़ डाले और सब हीरे जवाहरात ले अश्व पर बैठ कर चम्पत हो गया। इधर सेठानी सेठ जी को ढूंढ कर वापिस आ रही थी और सेठ जी जा रहे

थे । जब सेठानी जी ने सेठ को अपनी ओर आते देखा तो उस का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया और सेठ जी भी मारे क्रोध के उछलने लगे । दोनों एक दूसरे की तरफ ऐसे बढ़े आ रहे थे मानों दो पहलवान अखाड़े में खड़े एक दूसरे को गिराने की सोच रहे हों । एक दूसरे के पास पहुंचते ही सेठ ने सेठानी के और सेठानी ने सेठ को एक-एक झांपड़ मार दी ।

सेठानी बोली—सीधी तरह से बता दो वह डायन कौन थी, नहीं तो ले ! मैं अपने मायके चली जाऊंगी ।

सेठ जी बोले—"अरी ! डायन तो तूँ है जो मेरे पल्ले पड़ गई बता वह लफङ्गा कहां है नहीं तो मैं तेरे बाल नोंच लूंगा ।"

सेठानी बोली—वाह ! वाह !! क्या कहने, एक तो चोरी उपर से सीना ज़ोरी—बताइए वह स्त्री कौन थी जो तुमारे साथ थी ।

सेठ जी गुस्से में बोले—

"तुमसे किस ने कहा मेरे साथ कोई स्त्री थी ।"

सेठानी बोली—"जो दुकान पर बैठा है ।"

हत् तेरे की, उसी ने तो मुझे कहा था कि सेठानी एक युवक के साथ भाग गई है । ज़रूर कोई बात है । यह कह कर वह अन्धा धुंध दुकान की ओर भागे और जब दुकान

से हीरे गायब देखे तो सिर पीट लिया और बैठ कर रोने लगे–

"लुट गया-भगवान् ! हाय ! मैं लुट गया" और सेठानी भी उसके सामने बैठ गई, दोनों एक दूसरे के आंसू पूंछते जाते थे और रोते जाते थे। आखिर मनको ढाढस देकर राज दरबार में पहुँचे और राजा से अपने दिन दहाड़े लुट जाने का समाचार देकर उसे गिरफ्तार करने की प्रार्थना की।



सोलह

........सेठ-खटपटा

दूसरे दिन खटपटा ने सेठ का भेष बना लिया। जिसने अपने शरीर पर सोने-चांदी की तारों में गजमुक्ता मोतियों से मण्डित एक रेशमी चोला धारण किया, गले में हीरे पन्ने व लालों जड़ित कंठा पहन लिया, हाथों में कंगन, बाज़ार के मध्य भाग में से हो कर अपने वैभव की धुन में वह चला जा रहा था।

चलते-चलते उसने देखा कि एक सेठ का पुत्र हीरे-जवाहरात के हार पहने हुए चार घोड़ों की बग्घी में बैठ कर पाठशाला की ओर जा रहा था।

जब कोचवान लड़के को पाठशाला में पहुंचा कर वापिस आने लगा तब उसे रोक कर एक सेठ ने पूछा, भाई तुम्हारा क्या नाम है ?

कोचवान—"मेरा नाम रामू है।"

सेठ—तुम किस के यहाँ नौकरी करते हो !

उत्तर में कोचवान ने कहा—

"सेठ साधू राम जौहरी के यहां काम करता हूं।"

"सेठ साधू राम के कितने भाई हैं ?

कोचवान ने अपनी दाढ़ी को सहलाते हुए कहा—दो भाई हैं। बड़े तो सेठ जी हैं उनके छोटे भाई ज्ञानचन्द जी हैं जो कई साल से कंचनपुर में दुकान करते हैं।

सेठ जी के पुत्र का क्या नाम है ?

नाम तो मोतीलाल है किन्तु प्यार से सब उसे विट्टू राजा कहते हैं। यहाँ पर संस्कृत पाठशाला में पढ़ता है। जहां पर उपाध्याय विष्णुदत्त शास्त्री पढ़ाते हैं।

सेठ ने कहा—मैंने भी अपने छोटे भाई को पढ़ाने के लिए दाखिल कराना है इसलिए तुम से पूछा है। इसके पश्चात् कोचवान और सेठ अपने अपने मार्ग से चल दिये।

एक घंटे के पश्चात् ही चोर पाठशाला में पहुंच गया और जाते ही आवाज़ दी—

"शास्त्री जी !"

कौन है भाई ! अध्यापक महोदय अपनी ऐनक को नाक पर चढ़ाते हुए बोले—क्षमा करना मैंने आपको पहचाना नहीं।

अरे ! भाई—मैं ज्ञानचन्द हूं विट्टू का चाचा।

मेरी कंचन पुर में दुकान है। फिर जरा धीमी आवाज़ करता हुआ बोला—

"मास्टर साहब सुना है कि किसी चोर ने सेठ साधू राम को लूट लिया—इस लिए मेरा दिल डर गया, आखिर मेरे विट्टू बेटा ने भी तो कीमती गहने पहन रक्खे हैं यही सोच कर कहीं गहने तो जाएं भाड़ में, विट्टू बेटा ठीक रहे यही सोच कर के आया हूं ।"

" अब आप ही बताइए हमें क्या करना चाहिए ।"

मास्टर जी के मन पर उसकी बातों की मोहर लग गई और बोले—क्या खूब सोचा है वर्तमान समय को देख कर बालकों को आभूषण नहीं पहनाने चाहिए, बालक का सच्चा आभूषण केवल विद्या है । आप स्वयं या तो विट्टू को साथ ले जायें या आभूषण ।

सेठ—आभूषण ही ठीक रहेंगे, आप विट्टू राजा को बुलाएं

मास्टर जी ने विट्टू को आवाज़ दे कर कहा—अरे विट्टू ! चलो सारे गहने उतार कर दे दो अपने चाचा को ।

बिट्टू उस अजनबी को देख कर रोने लगा ।

सेठ विट्टू को धमकाते हुए बोला कि—गहने उतारते हुए रोता है—यह लाड़ साधूराम कर सकते हैं या तेरी मम्मी, मैं नहीं । ऐसा कह कर विट्टू के गहने उतार ले गया, विट्टू काफी समय तक रोता ही रहा ।

अध्यापक उसे रोता देख कर बोले—

अबे ! रोता क्यों है ? फिर तेरे गहने तुझे घर जाने के बाद मिल जाएंगे ।

विट्टू रोता—रोता बोला—नहीं मास्टर जी मुझे नहीं पता वह कौन था । मैंने आज तक उसको कभी अपने घर में नहीं देखा ।

यह सुनकर मास्टर जी का ऊपर का स्वाँस ऊपर ही रह गया और बोले—तो बेवकूफ तूने पहले क्यों नहीं कहा ?

विट्टू आंखें पोंछता हुआ बोला—उसकी भयानक शक्ल देखकर मैं डर गया था । इसलिए डर के मारे मैं कुछ नहीं बोला।" अब तो मास्टर जी को दिन में तारे नज़र आने लगे। उन्होंने उस के पिता जी को बुलवाया । उस के पिता जी सारी घटना सुन कर भागे-भागे स्कूल आये और बोले—क्या कहा ? मेरा भाई ज्ञानचन्द आया था, अरे उसे तो दो महीने हुये बीमार हुये को, वह तो चल फिर भी नहीं सकता, मास्टर जी ! मुझे तो यह सारी चालाकी आप की ही लगती है ।

जब मास्टर जी ने यह सुना तो उन का दम ऊपर का ऊपर ही रह गया । बड़ी मुश्किल से थूक को गले से नीचे उतारते हुये बोले-क्या कहा मेरा...हे ! भगवान् !! यह मैं क्या सुन रहा हूँ । (सेठ जी से) सेठ जी ! मैं आप के बच्चे का गुरु हूँ—उसे ऐसी बातें मैं सिखाऊंगा क्या आप

को यकीन आ रहा है, अगर मुझ पर यकीन नहीं तो आप अपने बेटे से ही पूछ लें। विट्टू ने भी सारी बात को साफ-साफ बता दिया। सेठ जी को उस चोर पर क्रोध आ रहा था पर खून का घूंट पीकर रह गये और एक ठंडा स्वाँस छोड़ते हुए बोले—गहने गए भाड़ में, बच्चे की जान बच गई यही काफी है। बाहर से तो सेठ जी ने यह कह दिया, पर उन के मन में अभी तक उन गहनों की झनझनाहट आ रही थी जो व्यर्थ में ही खो गए थे। सोच रहे थे कि बच्चों को गहने पहनाना भी मौत को दावत देना है।

इधर मास्टर जी को पसीने पर पसीना आ रहा था और बार-बार भगवान् से हाथ जोड़ कर यही प्रार्थना कर रहे थे कि हे भगवान ! मेरी लाज न चली जाए मैं निर्दोष हूँ कहीं कनक के साथ घुन की तरह न पीसा जाऊं।

इसके पश्चात् सेठ साधु राम अपने पुत्र को और विष्णुदत्त शास्त्री को लेकर राज दरबार में गया। वहां सारी घटना राजा को सुना कर प्रार्थना की कि आप उस दुष्ट के दुष्कृत्य का अवश्य दण्ड दें।



सतरह

………लो जौहरी भी लुट गए

जब से शहर में यह दो घटनाएँ हुईं शहर में सभी ओर आतंक सा फैल गया था और सभी सेठ डर के मारे सूख रहे थे। उन्होंने अपनी-अपनी तिजोरियों के पास ही सोना शुरू कर दिया था। जहाँ तक कि जब वह बाज़ार में निकलते तो अपनी जेब पर हाथ रख कर निकलते कि कहीं हमारी जेब ही न गोल हो जाए।

कण्ठाराम भी उधर डर के मारे सिकुड़ा बैठा था। सोच रहा था कैसे शहर में आ फंसे हैं। किसी ने कण्ठा राम को बता दिया था कि यह खटपटा चोर केवल आदमियों को लूटता ही नहीं, कतल भी कर देता है। बस अब तो कण्ठाराम का रहा-सहा हौंसला भी टूट गया। सोच रहा था कि कहीं अपना नम्बर न आ जाये।

गुणपाल भी हैरान था कि वह चोर जो दिन दिहाड़े लोगों को लूट लेता है, जिस ने हज़ारों सुहागनों को विधवा बना दिया, हज़ारों माताओं की गोद सूनी कर दी,

हजारों वस्तुओं के माल छीन लिये, उसको पकड़ने वाला कुछ भी वीर दीपनगर में नहीं है। गुणपाल सोच रहा था कि अगर राजा उसे आज्ञा दे दे तो वह भी चोर को पकड़ने की कोशिश करे और शहर में फैले हुए आतंक को समाप्त करे, परन्तु वह स्वयं इस आग में नहीं कूदना चाहता था। शहर के प्रत्येक भाग में खटपटा चोर की चर्चा चल रही थी। जहां देखो लोग वहीं खटपटे का नाम ले रहे थे और खटपटा शान से आता और चोरी करता फिर शान से चला जाता।

दीपनगर के सदर बाजार में जहां जौहरियों की प्रसिद्ध दुकानें थीं वहां भी कुछ जौहरी इकट्ठे बैठे इसी बात पर विचार कर रहे थे कि कहीं हमें भी खटपटा लूट न ले। इतने में उन्हें दूर से आवाज आती सुनाई दी—खबरदार! होशियार! राजकुमारी की सवारी आ रही है। सभी जौहरियों ने जो सिर उठा कर उधर देखा तो दूर एक शाही बग्घी भागी चली आ रही थी। साथ में कुछ सिपाही आगे और कुछ सिपाही पीछे थे। बग्घी उन जौहरियों के पास आ कर रुक गई। उस बग्घी से एक सुन्दर राजकुमार उतरा और जौहरियों के पास जा कर बोला—आप के पास कुछ विशेष रत्न जड़ित आभूषण व सुच्चे नग हैं, राजकुमारी बग्घी में बैठी हुई हैं—विदेश यात्रा पर जा रही हैं

और अपने देश के कीमती हीरे-मोती रत्नादि साथ में ले जा रही हैं ताकि हम जहां भी ठहरें वहाँ के राजाओं को उचित उपहार के रूप में दे सकें।

जब जौहरियों ने यह सुना कि राजकुमारी जी बग्घी में स्वयं आई हुई हैं तो वे भागे-भागे अपनी दुकानों की ओर हीरे-मोती लेने गए, क्योंकि वे जानते थे कि उन्हें मुंह मांगे पैसे केवल यहीं से मिल सकते हैं और देखते ही देखते उस राजकुमार के आगे हीरे-पन्ने और मोतियों का ढेर लग गया। राजकुमार ने सभी हीरे-मोती उठाए और बोले—"मैं राजकुमारी को दिखला आऊं, जो बग्घी में बैठी हैं।"

यह कहकर वह बग्घी में सारे हीरे-मोती तथा आभूषण ले गया। बग्घी के चारों ओर मोटे-मोटे परदे लगे हुए थे। उस राजकुमार ने सारे आभूषण, हीरे-मोती बग्घी के अन्दर रखी हुई झारी में डाल दिये और फिर जौहरियों के पास आकर बोला—"क्षमा करना राजकुमारी ने जल मांगा है।" मैं इस झारी में अभी-अभी लेकर उपस्थित हुआ।

सभी जौहरी एक साथ बोले—हजूर! हम जल ले आते हैं हमें हुक्म करें।"

वह राजकुमार मुस्कराया और बोला—आप का धन्य-

वाद । जल अगर किसी से मंगवाना होता, तो मेरे पास नौकर थे पर राजकुमारी ने आजकल व्रत रक्खे हुए हैं। वह अपनी पुष्करणी के सिवा किसी स्थान का अथवा अन्य किसी के हाथ का जल पीना पसन्द नहीं करती, सो मैं अभी जल लेकर हाजिर हुआ । यह कह कर वह राजकुमार चला गया और जब एक-दो घंटे बीत गए वह वापिस न आया, तो जौहरियों के मन में सन्देह हुआ । कुछ जौहरी उत्साह करके उस बग्घी के पास गए । बग्घी को अन्दर से बिल्कुल खाली पाया । यह देखकर सभी जौहरियों के होश उड़ गए और वे भागे-भागे कोचवान के पास गए और बोले—"क्यों भाई कोचवान, वह तुम्हारा राजकुमार किधर गया ।

"किसका राजकुमार और कौन राजकुमार" कोचवान ने हैरानगी से पूछा ।

"वही जो अभी-अभी राजकुमारी के लिए जल लेने गए हैं ।" जौहरियों ने एक साथ पूछा ।

"मगर आपने देखा नहीं बग्घी में कोई राजकुमारी नहीं ।"

"और फिर वह बग्घी भी तो उसकी नहीं ।"

"क्या ? यह बग्घी उसकी नहीं"—जौहरी हैरानी से बोले ।

"हाँ" कोचवान मुस्करा कर वोला—यह वग्घी सेठ चांदमल जी की है और मैं उसका पुराना नौकर हूँ और यह शख्स उनसे वग्घी और मुझे किराया पर लाया था ?"
"और यह सिपाही" एक जौहरी ने सिपाहियों की ओर इशारा करके पूछा ।

वह स्वयं ही वोल उठे "अजी, घवराइए मत हम भी किराए पर ही आए हैं ।"

अव तो सभी जौहरी सिर पीट कर रह गये और उधर भागे जिधर वह नौजवान पानी लेने गया था पर सव व्यर्थ हुआ, क्योंकि चिड़िया हाथ से उड़ चुकी थी । जव वह नकली राजकुमार कहीं भी न मिला तो सभी राजा के पास पहुँचे जहाँ सेठ रामजी लाल और साधुराम पहुँचे हुए थे । सभी ने राजा से रो-रो कर यूं फरियाद की—

दोहा—दिन दिहाड़े लुट गए, करो ख्याल सरकार ।
वरवाद हम हो गए, बन्द हुआ व्यापार ॥
चौवोला—ऐसी हालत रही गर तो, नगर आपका छूटेगा ।
प्रेम आपका और हमारा, क्षण भर में सव टूटेगा ॥
प्रवन्ध करो ए राजन कुछ, खतरे में जान हमारी है ।
मार्ग हमें मिला न कोई, अव लीनी शरण तुम्हारी है ।

राजा ने सभी को देखा और वोला—"क्या वात है ? क्यों चिल्ला रहे हो किसने तुम्हें सताया है । सारी वात

साफ-साफ कहो।"

सभी जौहरी एक साथ बोल उठे—बड़ा भारी लुटेरा आया हुआ है, जो दिन दिहाड़े लूट मचा रहा है। वह बहु-रूपिया है, हर प्रकार के भेष बना लेता है। कभी वह सौदागर तो कभी सेठ और कभी राजकुमार बन जाता है और लोगों को लूटता है। सारी प्रजा उससे तंग हो गई है। पहले दिन उसने सेठ रामजी लाल को छकाया, दूसरे दिन साधुराम के बच्चे के गहनों को चुराया, तीसरे दिन वह हम सब का कर गया सफाया—

"अब जीवन की नैया डावां डोल हो गई।
पूंजी थी जो हमारी, सभी गोल हो गई"।

"अब आप ही बताएं हम कौन से कुएं में जाएं।"

राजा उनकी दशा देख कर गहरी सोच में पड़ गया। कुछ देर के बाद मंत्री से बोले—"मंत्री जी बुलाओ उस कोतवाल को।"

मंत्री—"प्रजापालक अभी लाया"

कुछ ही समय के पश्चात् मंत्री कोतवाल को साथ ले कर आ गए।

कोतवाल को देखते ही राजा बोले—तुम्हारा क्या इन्तज़ाम है। शहर भर में दिन दिहाड़े डाके पड़ रहे हैं। तुम कहां पर सोये रहते हो। क्या तुम्हें अपने कर्त्तव्य का

कुछ भी ध्यान नहीं। भविष्य में यदि कोई ऐसी घटना घट गई तो समझ लेना तुम्हारी जान नहीं।

कोतवाल—राजन्! मैंने उसको पकड़ने के लिए दुगना इन्तज़ाम किया था किन्तु वह हाथ नहीं आया, अब मैं स्वयं प्रतिज्ञा करता हूँ कि चौबीस घंटे के अन्दर-अन्दर उसे पकड़ कर आप के चरणों में हाज़िर करूंगा। मूंछों पर ताव देता हुआ बोला—

अब मैं पाताल से भी निकाल लूंगा, उस धूर्त शैतान को।
एक ठोकर से उड़ा दूंगा, उसके सभी अभिमान को॥

राजा—अच्छा जाओ। यदि तुम उसे बाँध ले आओगे तो बहुत सा पारितोषिक पाओगे।

कोतवाल ने राजा के सामने यह प्रतिज्ञा तो कर ली परन्तु बेचारे को क्या पता था कि मेरे बुरे दिन आ गए हैं और वह दरबार से निकल कर खटपटे चोर को पकड़ने के उपायों में उलझ गया।



अठारह

........उल्टा चोर कोतवाल को डांटे

उधर खटपटे को भी पता चल गया कि कोतवाल साहब ने मुझे पकड़ने की भरे दरबार में प्रतिज्ञा कर ली है। खटपटा भी आखिर चटपटे का भाई था। उसने सोचा अगर कोतवाल को भी छटी का दूध न याद दिला दूं तो खटपटा नाम नहीं।

कुछ ही समय के पश्चात् खटपटा घर से बाहर निकला और बाज़ार में आकर उसने एक छोटी सी दुकान किराए पर ली और एक चनों की बोरी खरीद ली और देखते ही देखते खटपटे ने एक बुढ़िया का भेष धारण कर लिया। पूरी अस्सी वर्ष की बुढ़िया लग रहा था, चेहरे पर नकाब इस ढंग की थी देखने वाले को मालूम होता था कि चेहरे पर झुरियाँ यों पड़ी दिखाई देती थीं कि मानो वह बुढ़िया पड़पोतों वाली हो। इसके साथ ही उसने जो एक बोरी चने लिये थे कुछ रात बीत जाने के पश्चात् उन्हों के पीसने में लग गई।

जब चक्कर लगाते-लगाते रात को कोतवाल साहब उधर आ निकले तो देखा कि एक बुढ़िया चने पीस रही है। कोतवाल ने उस बुढ़िया से पूछा अरी ! बुढ़िया इतनी रात बीत गई तू चने पीस रही है।

वह बुढ़िया रूपी चोर मुस्कराया और बोला—

हाँ ! कोतवाल साहिब, मेरी बेटी के बेटे की शादी जो है—वहीं पर पीसकर भेजूंगी, शुक्र है भगवान का जो ये दिन देखना नसीब हुआ पर कोतवाल साहिब मुझे आप का इन्तजाम पसन्द नहीं। "क्यों ?" कोतवाल हैरानी से बोला—

"क्यों जी क्या बात है।" आप पहरे पर भी हैं और चोर को भी पकड़ना चाहते हैं, फिर भी वह चोर बार-बार मेरे पास आता है और मुझे सताता है।"

"क्या तुमने आज चोर को देखा ?"

"अजी अभी तो मेरे पास से गया है, और अब फिर आयेगा।"

"हूँ" कोतवाल अपनी मूंछों को सहलाता हुआ बोला—बुढ़िया तूं मुझे अपनी दुकान के अन्दर छुपा ले, ज्यों ही वह आयेगा, मैं उसे पकड़ लूंगा।

बुढ़िया उसकी बात सुनकर हंस पड़ी और बोली—मेरी दुकान में ! अजी—कोतवाल साहिब मेरी दुकान में

छुपने की जगह कहाँ है। वह तो आप को देखते ही भाग जायेगा।

"तो फिर क्या करूं ?" कोतवाल ने उत्सुकता से पूछा।"

बुढ़िया अपनी चुनरी को सिर पर ओढ़ती हुई बोली— "अगर आपने उसे पकड़ना ही है तो एक ही रास्ता है।"

"वह क्या ?" कोतवाल एकदम बोला—

"आप मेरे कपड़े पहन लीजिये और अपने उतार दीजिये।"

"तुम्हारा मतलब है मैं बुढ़िया बन जाऊं" कोतवाल ने हिचकिचाते हुए कहा।

"वह तो आप को बनना ही पड़ेगा।" मरता क्या न करता।

कोतवाल बुढ़िया बन गया और खटपटा जी उसके कपड़े और घोड़ा लेकर बोला—देखो चक्की चलाते रहना कहीं छोड़ न देना।" कोतवाल के कपड़े चोर ने पहन लिये और उसने दूर जाकर सीटी दी सभी सिपाही उसके पास आ गये।

नकली कोतवाल साहब बोले—देखो दूसरे मोड़ पर खटपटा चोर बुढ़िया के भेष में चक्की पीस रहा है। उसे गिरफ्तार कर लो और मैं बाकी सिपाहियों को लेकर आ

रहा हूँ, ज़रा उसकी खूब पिटाई करना। यह कह कर चोर साहब चम्पत हो गये।

उधर सिपाहियों ने असली कोतवाल को आ घेरा और वहां पर बहुत से लोग जमा हो गये। सिपाहियों ने उस की पिटाई शुरू ही की थी कि वह बोला—अरे! मुझे मत मारो मैं कोतवाल हूँ कोतवाल।

यह सुनकर सिपाहियों ने जोर का ठहाका लगाया और उसके तीन चार बेंत लगाकर बोले—ये हमारा कोतवाल है! तभी तो हम तुम्हारी सेवा कर रहे हैं। कोतवाल बहुत चीखा चिल्लाया आखिर उसने ऊपर के कपड़े उतार फेंके, अगर कोतवाल कपड़े न उतारता तो न जाने बेचारे का क्या हाल होता। इतने में राजा साहब भी वहां आ गये उन्होंने जब कोतवाल को स्त्रियों वाले कपड़े उतारते देखा तो उनकी हंसी छूट गई और बोले—"कोतवाल साहब यह क्या? ऐसा लगता है कहीं से नाच कर आ रहे हो।"

कोतवाल साहब मारे शर्म के पानी हुआ जा रहा था। वहां लोगों की भीड़ में कंठाराम जी भी खड़े हुए थे, उससे भी न रहा गया, कोतवाल पर उसने भी व्यंग कस दिया—एसो—कोतवाल साहब आप स्त्रियों के भेष में बहुत सुन्दर लगते हैं। जरा एक ठुमका तो लगाओ? उस की

चिल्लाती हुई बोली—

"लुट गए—हम तो लुट गए।

मंत्री ने उसे ऊपर से लेकर नीचे तक गौर से देखा और बोला—"ए क्या बात है? क्यों यूं रो-रो कर सारे शहर को सिर पर उठाए जा रही हो।" वह आंखें पोंछती हुई बोली—क्या बतायें सरकार रास्ते में हमें वह दुष्ट चोर मिल पड़ा जिसे लोग खटपटा कहते हैं।

"क्या कहा खटपटा?" मंत्री जी एक दम से बोले।

हां सरकार! हमारे गहने भी कुछ उतार के चम्पत होई गयो। मंत्री तो उसके रूप पर मुग्ध हो कर बोला।

अच्छा हम उसे पकड़ लेंगे—यह तो बताओ तुम्हारा नाम क्या है?

"वीणा" वह मुस्कराहट से आंखें तरेरती हुई बोली।

"मंत्री—वाह! कितना मीठा नाम है?"

वह हंसती हुई बोली—बाबू हमारा नाम कोई गुड़ शक्कर नहीं। जो मीठा बतावत हो।

"तुम्हारी तो आवाज़ भी मीठी है वीणा।"

"अच्छा यह तो बताओ काम क्या करती हो।"

वह दूध का वर्तन दिखाती हुई बोली—"दूध बेचती हूँ, मीठा ताज़ा, जो पीवत सो बने राजा।"

"अच्छा तुम्हारा दूध इतना बढ़िया है?" क्या तुमने

आप कभी नहीं पिया।"

"सरकार मैं वेचत हूं पीवत नाहीं।"

"अच्छा तब तो हमें भी थोड़ा सा पिलाओ, शायद हमारी किस्मत का चक्कर चल ही जाए।

वीणा ने वर्तन से थोड़ा सा दूध निकाल कर मंत्री जी की ओर बढ़ा दिया। मंत्री जी ने दूध एक ही सांस में पी डाला और बोले—"सचमुच दूध बड़ा स्वादिष्ट है।"

वीणा उन रस्सों और हथकड़ियों को उठाकर बोली—"सरकार यह क्या है ?"

मंत्री जी मुस्कराकर बोले—ये गहने हैं सरकारी गहने।

"गहने" वीणा हैरानगी से बोली।

"तो फिर तुम इन्हें काहे नाहीं पहनत हो।"

मंत्री बोला—"तू भी भोली ही है, इन्हें चोरों और डाकुओं को पहनाया जाता है।"

"चोर डाकू काहे पहनत—मैं पहनत हूँ। जरा हमारे पहना के दिखाईयो।

"अरी ! वीणा तू भी ज़िद करने लग पड़ी, पहन कर ही देखने हैं तो मेरे पहना कर देख ले यह मर्दों के गहने हैं स्त्रियों के नहीं।"

वीणा ने उसी समय वह हथकड़ियां और वेड़ियां मंत्री जी के लगा दीं। मंत्री जी का दिमाग चक्कर खा रहा था

क्योंकि दूध के वे बेहोशी की दवा जो पी चुके थे। वह मंत्री जी को हथकड़ियां पहना कर तालियां वजा-वजा कर नाचने लगी और बोली—बाबू तोहार यह गहने बहुत फाबत हैं। इन्हें मत उतारियो।" मन्त्री जी तो बेहोश हुये जा रहे थे और वे एक तरफ को लुढ़क गये। उस दूध बेचने वाली ने उसी समय कैंची निकाल कर मन्त्री जी की एक मूंछ काट दी और मुँह पर काला रंग भी पोत दिया और उन्हें एक बोरी में बन्द कर के ऊपर से सी दिया। आप वहाँ से यह आवाज़ लगाती हुई चली गई—"दूध ले लो जी कोई दूध।"

उधर कंठाराम जी को मन्त्री जी के पास गुणपाल ने किसी कार्यवश भेजा। कण्ठाराम जी सीधे मन्त्री जी की बैठक में पहुँच गये। जब उस ने वहां पर बोरी की गांठ को हिलते हुए देखा तो डर के मारे उस की घिग्गी बंध गई और वह चिल्लाता हुआ सड़क की ओर भागा—भूत—भूत—भूत।

वहाँ पर हज़ारों लोग इकट्ठे हो गए। राजा और कोतवाल भी वहां पर आ गए और कण्ठाराम से पूछा, "क्या बात है ?"

कण्ठाराम जी—"ऐसौ मैंने भूत देखा है।"

कहां ! राजा ने पूछा ?

"मन्त्री साहब की बैठक में।"

"कण्ठाराम धीमे से बोले।

सभी मन्त्री साहब की बैठक की ओर भागे। देखा तो वहां एक बोरी सचमुच गांठ सी बनी पड़ी है। कण्ठाराम हाथ में एक छड़ी लेकर बोरी की ओर बढ़ा तो बोरी उसी समय हिली। कण्ठाराम उल्टे पांव दौड़ा और धड़ाम से गिर पड़ा वह गिरते ही चिल्लाया, मुझे पकड़ लिया छुड़ाओ—छुड़ाओ यही भूत है।

सब लोग हैरान थे।

बोरी के अन्दर से मन्त्री जी बोले—"मैं हूँ मैं मंत्री।" राजा ने आवाज़ पहचान ली और बोले—यह तो मन्त्री है इन्हें बाहर निकालो।

कण्ठाराम बोला—ऐसो महाराज ! मन्त्री नहीं यह भूत ही है, मन्त्री साहब कैसे इतनी छोटी सी बोरी में आ सकते हैं। पर सैनिकों ने बोरी को खोल दिया, अन्दर से मन्त्री साहब निकले। कण्ठाराम ने जब उस की एक मूँछ और काला मुँह देखा तो बोल उठा—देखा मैंने कहा था न भूत है। यह एक मूँछ वाला मन्त्री थोड़े ही है। उधर मन्त्री जी मारे शर्म के ज़मीन में गढ़े जा रहे थे। राजा जी की ओर देख कर बोले—हजूर ! चोर सचमुच ही खतरनाक है। गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

राजा—इसी लिये तो अब मैंने घोषणा करवाने का विचार किया है कि जो चोर को पकड़ेगा उसे भारी पारितोषिक दिया जायेगा।

मन्त्री—"मुझे तो आशा नहीं कि वह पकड़ा जायेगा।" फिर आज्ञा लेकर कपड़े बदलने चले गए, अन्य लोगों ने भी अपने-अपने घर की राह ली। चतुरसेन भी राज भवन की ओर प्रस्थान कर गये।



बीस

........आखिरी दाव

प्रात:काल स्नान मंजन से निवृत्त हो कर भोजन किया तथा हर रोज की भांति जितेन्द्र और गुणपाल को साथ ले कर महाराजा चतुरसेन राजसभा की ओर चल दिये । जब राजा सिंहासनारूढ़ हुए तो मन्त्री जी भी तशरीफ ले आये, तथा धीरे-धीरे सभी राज-अधिकारी पधार गये ।

उसी समय नरेश ने पान का बीड़ा डालते हुये घोषणा की कि जो क्षत्रिय वीर उस निडर, निर्भीक दुष्ट चोर की मुश्कें बांध कर ले आयेगा तो वह पारितोषिक के रूप में अर्ध-राज्य का स्वामी होगा ।"

इस घोषणा को सुन कर कई वीर नरों के मुँह में पानी भर आया परन्तु जब चोर की दुष्टता की ओर ध्यान गया तो सभी को मौत सामने खड़ी नज़र आने लगी । इस लिये सभी मन मसोस कर मूक रह गये ।

गुणपाल ने जब चारों ओर दृष्टि डाली तो देखा कि सभी ओर सभी के चेहरों पर निराशा के बादल छाये हुये

थे। इस अवस्था को देखते ही गुणपाल की भुजाएं फड़क उठीं, मस्तिष्क की भृकुटी तन गई, आँखों में लाली छा गई, होंठ फड़फड़ाने लगे और वह क्रुद्धसिंह की भाँति गर्जा। देखते ही देखते उस ने बीड़ा उठा कर चवा लिया और वोला—

"दुर्बुद्धि उस मानव को, मैं ऐसा पाठ पढ़ाऊंगा,
सर के बल वह आएगा, मैं ऐसी कला सिखलाऊंगा॥
तीस मुहूर्त के अन्दर-अन्दर, उसे पकड़ कर लाऊंगा,
नहीं तो चुल्लु भर पानी में, मैं डूब कर मर जाऊंगा॥

उस वीर क्षत्रिय की घोर प्रतिज्ञा को सुन कर सभी अधिकारी पुरुषों ने उस की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की तथा वहाँ वैठे जनसमुदाय ने तालियां बजाबजा कर प्रतिज्ञा का स्वागत किया। सभी ने एक स्वर से कहा कि—"आप की प्रतिज्ञा पूर्ण होगी, ऐसी हमें आशा ही नहीं बल्कि हमें विश्वास है और हम सब की हार्दिक शुभ कामना आप के साथ है।"

उसी समय गुणपाल राजसभा से उठकर अपने निवास स्थान को चला गया और वहां पर बैठे-बैठे विचार करने लगा कि चोर को पकड़ने के लिये इधर उधर भटकना निरर्थक है। जब उसे ज्ञात होगा कि मैंने प्रतिज्ञा की है तो वह किसी न किसी वेश में मेरे मकान पर आयेगा। इस

लिये मुझे चाहिये कि जो भी पहरेदार व नौकर हैं सब को अवकाश दे दूँ। उस के उपरांत रूप अलोपिनी विद्या का स्मरण करके अपना रूप छिपा कर एकांत स्थान में बैठ जाऊँ जब भी वह चोर आयेगा उस समय जो कदम उचित होगा उठाऊँगा।

इस प्रकार विचार कर गुणपाल ने सभी सेवकों को छुट्टी दे दी। सेवक सभी अपने-अपने घर चले गये। कंठाराम जी भी राजा के पास जा पहुँचे। गुणपाल ने उसी समय अस्त्र-शस्त्र लगाकर रूप अलोपिनी विद्या को स्मरण किया। कुछ ही देर के पश्चात् उस की शरीराकृति लोप हो गई—(छिप गई)।

गुणपाल सब को देख सकता था, परन्तु उसे कोई नहीं देख पाता था। वह ऐसे स्थान पर बैठा हुआ था, जहाँ से मकान का प्रत्येक भाग दिखाई पड़ता था। इधर जब खटपटे को पता चला कि अब गुणपाल ने मुझे पकड़ने का बीड़ा उठाया है तो वह कुछ डर सा गया क्योंकि गुणपाल की वीरता के बारे में उसने भी सुन रखा था।

उधर चोर ने झट उसी समय संन्यासी का भेष धारण किया और वह सोच कर गुणपाल के मकान की ओर चल दिया। वह अपने मन में सोच रहा था कि जहां मैंने इतने बड़े-बड़े आदमियों को छका दिया, वहां ये छोकरा मेरा

क्या बिगाड़ेगा । इधर गुणपाल के पास भी बुद्धि की कमी नहीं थी । उसके पास भी रूप छिपाने वाली विद्या थी । वह अपने महल में अपना रूप छिपाये हुये बैठा था । चोर जानता था कि गुणपाल साधु-सन्तों का खूब आदर करता है । जब वह मेरा आदर सत्कार करने आयेगा तो उसे ऐसा पाठ पढ़ाऊंगा कि बच्चा सारी उमर याद रखेगा कि किसी से पाला पड़ा था । यह सोच कर वह गुणपाल के महल में जा पहुँचा, परन्तु उस ने वह महल खाली देखा तो गुणपाल की मूर्खता पर हंसने लगा और सोचने लगा यही है उस की बुद्धिमानी, महल को यूँ ही खाली छोड़ दिया ।

उधर गुणपाल सोच रहा था कि यह साधु इतना हृष्ट-पुष्ट है, ऐसा साधु मैंने इतने दिन हो गए दीपनगर में नहीं देखा, हो न हो यही खटपटा लगता है । गुरु जी महाराज ने भी फरमाया था कि खटपटा संन्यासी के भेष में मिलेगा तुम्हें । देखना चाहिये यह करता क्या है । इधर खटपटा यों महल में घुमने लगा मानों उस का अपना महल हो और उस के मुँह से निकल पड़ा—"यह छोकरा मुझे क्या पकड़ेगा ?" अब तो गुणपाल को पूरा-पूरा यकीन हो गया कि यही खटपटा है । खटपटे ने महल में जो मिला सभी आभूषण अपनी झोली में डाल लिये । गुणपाल को ये बातें

उसे पकड़ने के लिए बाध्य कर रही थीं। एक तो वह उसे साधु के भेष में नहीं पकड़ना चाहता था, दूसरे वह सोच रहा था कि जरूर इस का गिरोह भी होगा, साथ में उस को भी पकड़ लूं तो अच्छा है। यह सोच वह सब कुछ देखता रहा। जब खटपटा साहिब ने अपनी झोली अमूल्य आभूषणों से भर ली तो वह चुपचाप मुस्कराता हुआ चल दिया। गुणपाल भी उस के पीछे-पीछे चल पड़ा। वह खटपटा भजन गाता हुआ शहर से बाहर निकल पड़ा।

"रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम, सब को सन्मत्ति दे भगवान ॥" भजन गाते-गाते वह एक पर्वत की गुफा के सामने आकर रुक गया। इधर-उधर देखकर उस ने गुफा के आगे पड़े पत्थर को हटाकर अन्दर घुस गया।

गुणपाल भी उस के पीछे-पीछे था। गुफा बड़ी लम्बी थी और अन्दर घोर अन्धेरा था। गुफा को पार कर के गुणपाल ने अपने आप को एक सुन्दर भवन में पाया, यही उस खटपटे का मकान था। उस भवन में जाकर खटपटे ने अपने वस्त्र उतार दिए और अब उस ने एक दूसरा ही भेष धारण कर लिया। वह इस भेष में एक नौजवान लग रहा था। उस ने झोली से आभूषणों को निकाला और जब उस भवन में पड़ी हुई एक मूर्ति को हटाया तो नीचे

देख कर गुणपाल हैरान हो गया, उस के नीचे खज़ाने ही खज़ाने गड़े हुए थे और उस के वाद खटपटा उठा, उस ने एक वटन दवाया देखते ही देखते एक दीवार एक ओर को सरक गई और सामने का दृश्य देख कर दिल दहल जाता था। सामने एक जेलखाना सा था जहां पर कई कैदी वंद किये हुए थे। कैदी अच्छे-अच्छे घरों के लगते थे।

अव गुणपाल से न रहा गया वह ज़ोर से चिल्लाया—खवरदार ! खटपटे, अव तेरी मौत आ गई है। खटपटे नें इधर-उधर देखा उसे कोई नजर न आया। वह वोला—अरे ! कायर; तू कौन है ? अगर तेरी भुजाओं में इतना वल है तो सामने आ। तत्काल गुणपाल भी प्रत्यक्ष रूप में आ गया। इधर खटपटे ने अपने चालीस-पचास जवानों को वुला कर कहा—"इसे पकड़ लो।" किन्तु इधर तो गुणपाल पहले ही उन सव पर टूट पड़ा—

"कर में ले तलवार को, वीर सन्मुख अड़ गया।
बाज जैसे पक्षियों पर, एकदम से पड़ गया ॥
झुक जाता वह जिधर भी, मैदान खाली हो गया।
आ अड़ा जो सामने, वह देह खाली कर गया ॥
खटपटा आगे वढ़ा तो, झपट के गुणपाल ने।
पटका पकड़ भू पै उसे, क्षणिक से ही काल में ॥
मुश्कें बांधीं खैंच कर, तो खटपटा घबरा गया।
मन ही मन में सोचता, अब काल मेरा आ गया।"

खटपटा के बन्दी होते ही उस के सब अंगरक्षक भाग निकले और चटपटा से जा मिले।

गुणपाल बोला—ओ ! मूढ़ बुद्धि के धनी ! तनिक से बल पर इतना अकड़ता था। मेंढक की तरह उछलता था, जो किसी को भी अपने तुल्य नहीं समझता था। जिन को तू अपना हितैषी मानता था तनिक नैन खोल कर देख ! उन्हों में से कौन तेरे साथ है, तूने कितना जुल्म ढाया, अमीर देखा न गरीब सभी को लूट खाया, इस में मेरा कोई दोष नहीं जो तूने कर्म किया वही तेरे सन्मुख आया।

खटपटा शर्म से सिर झुका कर बोला—हे ! वीर सत्य है जो तूने कहा झूठ नहीं इस में राई, कुकर्मों ने ही आज मेरी यह ऐसी गत बनाई। अब आप को यह अधिकार है जो इच्छा सो कीजिए मुझे वही स्वीकार है।

गुणपाल बोला—अधिकार मुझे नहीं—महाराज चतुर-सेन को है वह जो उचित समझेंगे वही सज़ा देंगे। अब आप मेरे साथ राजसभा की ओर चले। खटपटा उठ खड़ा हुआ रास्ते में गुणपाल ने खटपटे को समझाया कि अगर भविष्य में ऐसे कार्यों का त्याग कर ले तो हो सकता है महाराज तुम्हें क्षमा कर दें। जिन लोगों को तूने लूटा है उन से क्षमा माँग कर प्रायश्चित करें, क्योंकि प्रायश्चित से बड़े-बड़े पाप भी धुल जाते हैं। खटपटे पर गुणपाल

पाप भी नहीं ठहर सकता ।

राजा बोले—वाह ! वाह ! राजकुमार तुमने तो हमारी आँखें खोल दीं और हमें पाप के गढ़े में गिरने से बचा लिया । यदि यह व्यक्ति जीवन भर के लिए सभी दुर्व्यसनों का त्याग कर दे तथा जिन लोगों का धन चुराया है उन्हें ही वापिस कर दे और अपने किए पर पश्चाताप कर के सब से क्षमा याचना करे तो मैं इसे बन्धन मुक्त कर सकता हूँ ।" गुणपाल खटपटे से बोला—"क्यों खट-पटा जी ! जो-जो बातें महाराज ने कही हैं, क्या आप को स्वीकार हैं ?" खटपटा ने खुशी-खुशी सारी बातें स्वीकार कर लीं और भविष्य में इस पथ की ओर पैर न रखने की प्रतिज्ञा करते हुए कहा कि मैंने जिस-जिस की जो-जो वस्तुएं चुराई हैं उन्हें वापिस कर दूँगा । राजा ने खटपटे की बातें बहुत गौर से सुनीं और उसे बन्धन मुक्त कर दिया । बन्धन से मुक्त होते ही खटपटे ने समस्त समुदाय से हाथ जोड़ कर क्षमा याचना की । इस के पश्चात् जो भी चुराई हुई वस्तुएं उस के पास थीं, गुणपाल ने वह सारा धन माल उस की गुफा से उठवा कर उन लोगों को लौटा दिया और वहां पर बन्धन पड़े कैदियों को भी छुड़ा दिया ।

सब लोग गुणपाल की महिमा गाने लगे । घर-घर में

गुणपाल की ही चर्चा हो रही थी। उसी की प्रतिभा के गीत गाये जा रहे थे।

उधर खटपटा ने सर्वकुव्यसनों का त्याग कर दिया और गुणपाल का मित्र बन गया। यह देख कर सभी लोग आश्चर्य करने लगे।

खटपटे का जीवन एकदम बदल गया था, अब उस का खान पान भी बहुत सुधर गया था, उस का उठना-बैठना भी भले पुरुषों के पास ही होता था। उस की भलीवृत्ति देख कर गुणपाल ने राजा से कह कर वहीं राजसभा में किसी कार्य पर नियुक्त करा दिया।



इक्कीस

........चटपटे की खोज

एक दिन चतुरसेन राजा ने अपनी घोषणा के अनुसार गुणपाल को आधा राज देने के लिए कहा। गुणपाल ने उत्तर दिया कि जब तक मैं चन्द्रप्रभा को ढूँढ न लूँगा तब तक कुछ भी नहीं लूँगा और साथ ही उसने जाने की आज्ञा मांगी और यह भी कहा कि खटपटा भी कुछ दिनों के लिए साथ जाने के लिए आग्रह करता है। राजा ने उसे रोकने के लिए काफी प्रयत्न किए परन्तु गुणपाल ने क्षमा मांगते हुए कहा कि मुझे अब अवश्य ही आज्ञा दे दी जाए।

अन्त में राजा ने आज्ञा देते हुए कहा कि यदि खटपटा की भावना भी साथ जाने की है तो मुझे कोई इन्कार नहीं।

उधर गुणपाल को विदाई देने के लिए बाज़ारों को सजाया गया। गुणपाल ने खटपटे को पकड़ा था इस लिए उस को सब लोग प्यार करने लगे थे। जब लोगों ने सुना कि वह जाने के लिए तैयार है तो सभी के दिल भर आए

तथा सब लोगों ने गुणपाल से आग्रह किया कि वह कुछ दिन के लिए और रुक जाएं, परन्तु उसने कारण बताते हुए उन से क्षमा मांगी ।

गुणपाल के विरह वियोग से सारा नगर विह्वल हो उठा। नगर निवासियों की आंखों से अश्रु धारा वह निकली । सब की ऐसी दशा हो गई जैसे पानी के अभाव में मीन की होती है । राजा, मन्त्री, रानी, कुमार, सेना-पति आदि तथा अन्य अधिकारी गुणपाल के साथ ही साथ चल रहे थे, शेष जन-समुदाय पीछे-पीछे चलता हुआ इस प्रकार का स्वर अलापने लगा—

दीपनगर के बाग का, यह आज माली जा रहा ।
मुरझा गए हैं पुष्प सारे, ये नेक नामी जा रहा ॥
बहार थी जिस बाग में, वह आज पतझड़ हो गया ।
पक्षी सारे बिल बिलाते, ये जीवन स्वामी जा रहा ॥
एक इसका आधार था, हम को इस संसार में ।
सिरताज हमारा प्राण प्यारा, सब का हामी जा रहा ॥
विनती हम सब की स्वामी, शीघ्र वापिस पधारना ।
हम सब की नैया का खिवैया, ये विज्ञानी जा रहा ॥

गुणपाल ने जब सिंह द्वार को पार किया तो एक बहुत बड़ा मैदान आ गया उस ने वहां पर खड़े होकर सारे जनसमूह को वापिस लौट जाने के लिए कहा तथा साथ यह भी कहा कि आप लोगों का प्रेम भाव भुलाया नहीं जा सकता, जब कभी समय मिला तो फिर मिलेंगे ।

राज परिवार के अतिरिक्त सभी लोग गुणपाल की जय-जयकार बुलाते हुए वापिस लौट गए। राजा ने गुणपाल से शीघ्र ही वापिस लौटने की प्रार्थना की। गुणपाल ने उत्तर देते हुए कहा कि अपनी तरफ से पूरी-पूरी कोशिश करूँगा।

रानी गुणपाल से बोली—बेटा तुम्हें छोड़ कर वापिस लौटने को दिल नहीं मानता परन्तु परवश सब कुछ करना पड़ता है, स्नेहलता तो आज बहुत उदास हो गई है, प्रदेश में जाकर इसे न भूल जाना।

गुणपाल माता जी दिल में प्रेम-भाव होना चाहिए तो मानव दूर होते हुए भी निकट ही होता है। यदि प्रेम-भाव नहीं होता तो मानव निकट होते हुए भी दूर होता है और हमारे को तो ऐसे बन्धन में बांध दिया कि हम आप से कभी भी पृथक् नहीं हो सकते। किसी ने कहा भी है कि—

जैसे पानी का शीतल गुण, कभी जुदा नहीं होता है।
वैसे ही प्रेम का दीपक, कभी नहीं गुल होता है।

गुणपाल की बातें सुन कर राजा, रानी बहुत प्रसन्न हुए।

राजा ने बड़े स्नेह के साथ कहा कि अगर किसी अंग रक्षक की और आवश्यकता हो तो कहिये। गुणपाल ने

उत्तर देते हुए कहा कि मुझे किसी जवान की ज़रूरत नहीं है। खटपटे को भी इस लिये साथ ले लिया है कि इसे जंगल के सब मार्ग मालूम हैं। अच्छा अब मुझे आशीर्वाद दीजिये फिर कभी मिलेंगे। राजा तथा रानी ने गुणपाल को आशीर्वाद दिया। चलते समय खूब हार्दिक भाव से मिले। अन्त में सब राज-परिवार निजी भवन की ओर लौट आया।

गुणपाल, कण्ठाराम तथा खटपटा ने भी अपने घोड़ों को आगे बढ़ाया। तीनों घोड़े एक ही गति से चले जा रहे थे, उस समय गुणपाल ने खटपटे से पूछा—कहिए भाई साहब इस जंगल के जितने भी पथ हैं उन सब के विषय में तो आप को अच्छी प्रकार से जानकारी होगी। "खटपटा नम्रता से सिर झुका कर बोला"—बेशक इस बात में कोई सन्देह नहीं, इन रास्तों से मेरा गमनागमन होता ही रहता था। इस प्रकार वार्तालाप करते-करते एक चौराहा आ गया। गुणपाल ने अपना अश्व रोकते हुये कहा यह चारों मार्ग चार दिशाओं को जाते हैं। इन में से जो मार्ग चटपटा की राजधानी को जाता हो उसी मार्ग से हमने चलना है सो आप बतलाएं वह कौन सा पथ है।

इस बात को सुनते ही खटपटा आश्चर्य चकित रह गया और बोला—क्या आप की चटपटा से कभी मुठभेड़

हुई है।

गुणपाल बोला—कि मेरी और उस की आज तक मुलाकात तो नहीं हुई, परन्तु अब की बार अवश्य करूँगा। खटपटा बोला--मगर आप उसे क्यों खोज रहे हैं ?" गुणपाल ने कहा कि उसने राजा प्रसन्न कीर्ति की राजकुमारी चन्द्रप्रभा को उठाया है। मैं उसे सजा देना चाहता हूँ।

खटपटा उस की बातें सुन कर बोला परन्तु वह चटपटा बहुत कठोर स्वभाव का व्यक्ति है। बड़ा ज़ालिम है। आप को होशियारी से काम लेना होगा, किन्तु आप भी एक बहादुर हैं। आप ने मेरी दाल न गलने दी तो वह आप के सामने क्या चीज़ है। गुणपाल बोला- आप इस बात का ख्याल न करें कि उस की शक्ति बहुत है या उस के अंगरक्षक अधिक हैं। आत्मा को गिराने के लिए तो आत्मा का पाप ही काफी होता है। रावण तथा जरासिंध भी तो अधिक शक्तिशाली थे, परन्तु उन्हों के ही कुकर्मों ने उन्हों का नाश कर डाला। आप तो मुझे उसका निजी स्थान दिखला दीजिए फिर तो मैं स्वयं ही निपट लूँगा ! गुणपाल ने दृढ़ स्वर से कहा।

खटपटा हाथ का संकेत करते हुए कहने लगा वह देखिये ! उत्तर दिशा की ओर जो पर्वत नज़र आता है वह यहाँ से वीस कोस की दूरी पर है, उस की जड़ों में ही

पद्म नाम का एक सरोवर है। वहां से एक मार्ग जाता है। जहाँ पर वह मार्ग समाप्त होता है वहाँ पर ही दाईं ओर एक वांसों का झुरमुट है। झुरमुट के मध्य भाग से एक पथ जाता है। वही पथ चटपटा की राजधानी में चला जाता है। मैं आप को वांसों के झुरमुट तक पहुँचा दूँगा। आगे जाने में मुझे संकोच इस वात का है कि चटपटा मुझे देखते ही समझ जायेगा कि मैं ही आप को यहाँ तक लाया हूँ, क्योंकि मेरे अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति उस की राजधानी का भेद नहीं जानता। गुणपाल उस की स्पष्ट वातों से बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला—अच्छा तो आप मुझे वाँसों के झुरमुट तक ही पहुँचा देवें।

गुणपाल कंठाराम और खटपटा तीनों के घोड़े उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। जिस समय अश्व अपनी चाल से चल रहे थे उस समय गुणपाल ने खटपटे से कहा हे मित्र तुमने और तुम्हारे भाई चटपटा ने आर्थिक व्यवस्था के जो साधन जुटाये हैं ये कार्य तुम्हारे पूर्वजों का नहीं, जहाँ तक मेरा ख्याल है। क्या मह वात सत्य है?

खटपटे ने एक ठंडी साँस ली और वोला—आप की वात विल्कुल सत्य है। पर ये सव हमारे पिता का कसूर है। "कैसा कसूर" गुणपाल हैरानी में डूवता हुआ वोला।"

"क्या करोगे मेरी दर्दनाक कहानी सुनकर।" "नहीं खटपटे जो बात तुम्हारे साथ बीती है सारी साफ-साफ कहो!" गुणपाल उत्सुकता से बोला। खटपटे ने थोड़ी देर गुणपाल की ओर देखा और फिर बोला—भाई साहिब हम अपने पिता के दो ही पुत्र थे परन्तु अभी मेरी उमर ग्यारह वर्ष के पास ही पहुँची थी कि मेरी माता हमें छोड़ कर चली गई। मैं और मेरा भाई चटपटा रो धो कर ही रह गये किन्तु अभी हमारे आँसू भी नहीं सूखे थे कि हमारे पिता ने दूसरी शादी कर ली। हम बेवश थे कुछ नहीं बोले।

लोगों ने हमारे पिता जी को दूसरी शादी करने से बहुत रोका परन्तु हमारे पिता जी पर न जाने कौन सा भूत सवार था उन्होंने किसी की भी न सुनी। हमारी नई मां ने घर में कदम रखते ही घर का नक्शा बदल दिया। हमारी पहली माँ का चित्र उतार कर अपना लगवा लिया। हमें स्कूल जाने से बन्द कर दिया और हमें घर का सारा काम करना पड़ता था। बर्तन, कपड़े और खाना भी हमें ही तैयार करना पड़ता था। मुझे अभी तक याद है एक दिन मेरा भाई चटपटा बिमार हो गया उससे हिला जुला भी नहीं जा रहा था। डाक्टर ने उसे पूरी तरह से आराम करने के लिये कहा था परन्तु मेरी उस ज़ालिम मां ने उसे चार-पाई से उठा कर खाना बनाने के लिये लगा दिया। वह

खाना वनाते-वनाते वेहोश हो गया ।

उसकी कमीज को आग लग गई अगर उस समय मैं उसे न वचाता तो वह परलोक सिधार गया होता । बातें सुनाते-सुनाते खटपटा की आंखों में आंसू आ गये और वह फिर वोला—वह हमें वार-वार मां कहने से भी रोक देती थी । हमें न समय पर खाना मिलता न हमें कोई संवारता, हम दो प्यार के शव्द भी सुनने के लिये तरस गये । हमारा सिर एक प्यार भरा हाथ चाहने के लिए व्याकुल हो उठा ।

लोगों के मां वाप को अपने वच्चों से इतना प्यार करते देख हमारे मन में भी एक टीस सी उठती और हम अपनी पहली मां की तस्वीर के आगे जा कर फूट-फूट कर रो पड़ते और उससे पूछते मां तू हमें किस के विश्वास पर यहां छोड़ गई । मां मरने से पहले हमें क्यों न साथ ले गई । देख आज तेरे वच्चों की क्या हालत हो गई । जिन वच्चों को तुम धूप में नहीं वैठने दिया करती थी आज वही तेरे वच्चे सारा-सारा दिन आग में वैठे रहते हैं। तुम तो कहा करती थी कि मैं तुम्हें जज वनाऊँगी, वकील वनाऊँगी, वही आज तेरे वच्चे मजदूर वनने को भी तरस रहे हैं परन्तु भाई साहिव हमारी मां भी शायद हमसे रूठ गई थी । वह भी हमें कभी पूछने न आई कि तुम किस हाल में हो ।

"मगर तुम चोर कैसे बन गए ?" गुणपाल ने खटपटे से पूछा ; जिसकी आंखों में आँसू आए हुए थे, खटपटा बोला—एक दिन मेरी मां ने मुझे बाज़ार से कोई चीज़ लाने के लिए भेजा, रास्ते में हमारा पड़ोसी बलवीर सिंह घोड़े पर तेज़ी से जा रहा था। उसका रुपयों से भरा बटुवा गिर पड़ा। मैं उसको बटुआ देने उस के पीछे भागा पर वह दूर जा चुका था। मैं वापिस घर आया और अपनी मां को सारी बात बता कर बोला—माता जी मैं बलवीर सिंह का बटुआ देकर अभी आया।

पर वह बोली—"नहीं अब वह बटुआ हमारा है, उसे मुझे दे दो !"

"मैं बोला—मगर माता जी यह तो पराई चीज़ है और मेरी पहली मां कहती थी कि कभी पराई चीज़ को घर में न रक्खो इसलिए......

पर वह मेरी बात काटती हुई बोली—भाड़ में गई तेरी माँ और यह कह कर उसने बटुआ छीन लिया और बोली— "अगर तुम इसी तरह बाज़ार से पैसे उड़ा कर लाते रहे तो खाने को बहुत सा दूंगी।" और उसने उस दिन हमें बहुत सा खाने को भी दिया।

वह हमारा पहला दिन था, जब हम ने पेट भर खाना खाया और उसी प्रकार हम दोनों भाई चोरियां, डाके

मारने लगे और हमारी मां हमें खाने को दे देती। जिस दिन हम कुछ न चुरा कर लाते उस दिन हमें भुखा मरना पड़ता। इसी प्रकार एक दिन हमें पुलिस ने पकड़ लिया, जव कि हम चोरी कर रहे थे। हमने पुलिस को साफ-साफ कह दिया कि हमें हमारी मां ने चोरी के लिए बाध्य किया था परन्तु हमारी मां ने ठीक समय पर धोखा दिया और उस ने पुलिस से कह दिया यह सव झूठ बकते हैं। बस फिर क्या था पुलिस ने हमारी खूब पिटाई की। इस के बाद तो हमारी चोरी की आदत ही बन गई। खटपटा इतनी कहानी सुनाकर आँखों को पोंछता हुआ बोला—भाई अगर सच पूछो तो यह हमारे पिता जी की गलती थी, जिस ने दूसरी शादी की। अगर वह दूसरी शादी न करते तो हमारी जिन्दगी बरबाद न होती, हम चोर डाकू न बनते।"

गुणपाल उस की कहानी सुनकर बोला—"ठीक है भाई" दूसरी शादी करने से घर बरबाद हो जाता है, बनता नहीं।"

इस प्रकार की बातें करते-करते वह बासों के झुर-मुट के पास पहुँच गए और खटपटा ने गुणपाल को आगे का रास्ता बतला कर जाने के लिए आज्ञा मांगी। गुणपाल ने खटपटे को अपना घोड़ा देते हुए कहा कि यहीं पर तुम

सातवें दिन सुध लेने आ जाना, या तो सातवें दिन तुम से मैं मिलूंगा, या "चटपटा"। वह हंसता हुआ बोला—यह तो मैं जानता हूँ कि मुझे सातवें दिन कौन मिलेगा। यह कह कर उसने गुणपाल को प्रणाम किया और कण्ठाराम व गुणपाल का घोड़ा साथ ले चला गया।



बाईस

........चटपटे का अन्त

उधर गुणपाल और कण्ठाराम दोनों ही उस मार्ग की ओर बढ़े। थोड़ी दूर चलने पर एक गुफा नज़र आई, दोनों ही उस गुफा में प्रवेश कर गए, जब वह तीन मंजिल के लगभग नीचे की ओर गए तो उन्हें बहुत ही सुन्दर नगर नज़र आया जिसे देखकर गुणपाल व कण्ठाराम आश्चर्य करने लगे। गुणपाल ने देखा कि शहर तो अधिक बड़ा नहीं है परन्तु जिन्हों ने इस का निर्माण किया है वे लोग अपनी कला में निपुण अवश्य होंगे। बहुत सुन्दर ढंग से इस शहर की रचना की गई है, इस प्रकार विचार करते हुए उसकी दृष्टि नगर के मुख्य द्वार की ओर गई। उसने देखा द्वार पर पांच व्यक्ति हाथ में नंगी तलवार लेकर पहरा दे रहे हैं। उसने विचार किया कि मेरा इन्होंने क्या बिगाड़ा जो मैं इन बेकसूर लोगों पर हाथ उठाऊँ, मुझे तो शीघ्र ही राजधानी में पहुँच जाना चाहिए, उसी समय गुणपाल ने रूप आलोपिनी विद्या का स्मरण किया। कण्ठाराम को भी उसने वही विद्या का स्मरण करने को कहा। गुणपाल ने

उसका विधि विधान उस को पहले ही बता दिया था।

गुणपाल तथा कण्ठाराम का शरीर बात की बात में लोप हो गया। अपने रूप को छिपा कर वे आगे बढ़े और मुख्य द्वार को पार कर शहर में पहुँच गए और इधर-उधर घूमने लगे मानो वह शहर उनका अपना हो। घूमते-घूमते यह विचार उत्पन्न हुआ कि पहले चन्द्रप्रभा से ही मिलें। इसलिए वह शाही महलों की ओर चल पड़ा, कण्ठाराम भी पीछे था। जब वह शाही महलों के निकट पहुँचा तो देखा मुख्य द्वार पर दो दासियां परस्पर वार्तालाप कर रही थीं, एक दूसरी से कह रही थीं कि वह चन्द्रप्रभा को अन्दर भोजन दे आए पर दूसरी बोली—"भोजन क्या लाकर दूं" जिस दिन की वह आई है न अच्छी तरह से खाती है न पीती है। सूख कर कांटा हो गई है। आज कह रही है कि मेरे सिर में दर्द है। "दर्द कैसे न हो जब कुछ खाना ही नहीं।"

पहली दासी जिस का नाम मीनो था बोली—चतुरो मुझे यह तो बता यह चटपटा महाराज के महल में क्यों नहीं रहती—पृथक यहाँ क्यों रह रही है? दूसरी हंसती हुई बोली—"अरी तुझे यह भी नहीं पता, चन्दा ने चटपटा महाराज से एक वर्ष अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन करने का वचन लिया था। जबकि चटपटा महाराज जी इसे शादी के लिए

कह रहे थे । आज दस मास हो गए हैं । दो मास शेष रह गए हैं । पहली दासी हैरानी से बोली—क्या महाराज ने इस बात की आज्ञा दे दी थी ; जबकि वह स्वभाव के बड़े कठोर हैं । दूसरी बोली—अगर आज्ञा न देते तो वह अपनी जान को त्याग देना चाहती थी इसलिए महाराज ने आज्ञा दे दी ।

इस प्रकार बात सुनकर गुणपाल के हृदय में चन्दा के प्रति और भी मान बढ़ गया । जब चतुरो दासी चली तो गुणपाल भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा । दासी शाही महलों को पार करती हुई एक सुन्दर महल में प्रवेश कर गई । जिस समय गुणपाल ने अन्दर जाकर देखा तो चन्द्रप्रभा प्रांगण में एक शैय्या पर बैठी हुई है, चेहरे पर उदासी के बादल छाए हुए हैं दासी ने जाते ही औषधि चन्दा को देनी चाही जो एक मुर्दे की तरह कमजोर हुई पड़ी थी, वह औषधि को परे करती हुई बोली—"क्या करूं मैं औषधि लेकर ।" मुझे कोई रोग नहीं । चतुरो बोली—आप तो कह रही थी मेरे सिर में दर्द है ? चन्दा सांस छोड़ती हुई बोली—दर्द तो उसी दिन शुरू हो गया था जब मैं पहले दिन यहां आई थी परन्तु आज दस मास हो गए मेरी किसी ने बात तक नहीं पूछी ।

सच कहते हैं जब कर्म ताना तनते हैं,
मुसीबत में अपने भी पराये बनते हैं।
मुझे पूर्ण विश्वास था, गुणपाल यहां पर आएगा,
छुड़ा कर मौत के मुंह से, मुझे वह ले जाएगा।

इस प्रकार विचार करते हुए चन्द्रप्रभा की आंखों से आंसू सावन की तरह टपक पड़े। उसी समय अनायास ही आवाज़ आई, चन्द्रप्रभा दिल न छोड़ो, व्यर्थ आंसू न बहाओ, जिस गुणपाल को तुम याद करती हो वह यहां पर पहुँच चुका है। मन में धैर्य रक्खो और समझ लो तुम्हारे सब कष्ट दूर गए।" यह भविष्य वाणी सुन कर चन्दा तथा चतुरो आश्चर्य चकित रह गई और आंखें फाड़-फाड़ कर चारों ओर देखने लगी परन्तु शून्य के सिवाय कुछ नजर नहीं आया, फिर वही आवाज़ आई—"चन्दा मैं तुम्हें नजर नहीं आऊंगा जब तक चटपटे का नामों निशाँ न मिटा दूं। मैं अभी उसे यमलोक पहुंचा दूंगा और तुम्हें बन्धन मुक्त कर दूंगा" इतने शब्द कहते ही आवाज बन्द हो गई।

चन्द्रप्रभा का दिल बांसो उछल पड़ा और चतुरो का दिल डोल गया वह सोचने लगी—शायद कोई भूत-प्रेत बोल रहा है वह वहीं बेहोश हो गई।

उधर गुणपाल सीधा चटपटा की राज-सभा में जा पहुंचा! देखा तो चटपटा बड़े ठाट बाट से एक ऊंचे

सिंहासन पर बैठा हुआ है। बहुत से सैनिक उसके दायें बायें बैठे हैं। चटपटे नें एक व्यक्ति को संकेत करते हुए कहा, क्यों रे मूले! जिस व्यक्ति ने मेरे भाई को पकड़ा है क्या पता चला है वह कौन है? हम देखना चाहते हैं। वह कितना वीर है! हमारा लहू उबल रहा है, हम इन्तकाम की आग में जल रहे हैं। "जब तक मेरी तलवार उसके खून में नहीं रंग जाती मुझे चैन नहीं आएगा!" एक सैनिक बीच में ही—महाराज वह वीर असल में वीर है, जब वह तलवार चलाता है तो लगता है आकाश से बिजली उतर कर उसके हाथ में आ गई हो, तलवार के एक वार से दश-दश सिर काट देता है......चटपटे का मूख्य अंग रक्षक जो शेखी खोरा था, पास ही खड़ा था बोला—मेरा दिल चाहता है, मैं उस का खून पी जाऊं अफसोस! मैं वहां पर नहीं था, नहीं तो उसे ऐसे हाथ दिखाता कि उसे दिन में तारे नजर आ जाते, ऐसी झांपड़ मारता कि उसे जमीन में तीन फुट तक नीचे पहुंचा देता। कण्ठाराम जो गुणपाल के साथ लोप होकर खड़ा था मन ही मन में बोला—ऐसी—तेरी खबर मैं लूंगा। देखूंगा तू कितना बहादुर है।

इस प्रकार जब सभी अपनी-अपनी वीरता के डंके बजा रहे थे, तो एक आवाज आई जो गुप्त थी, कह रही थी—ओ चटपटे! जब पाप का घड़ा भर जाता है तो वह फूट

पड़ता है, जब गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की ओर भागता है। तेरी भी मौत आ गई है, "हम चाहते तो नहीं थे कि तेरे गंदे लहू से अपने हाथ अपवित्र करें पर हम मजबूर हैं।" इस गुप्त आवाज को सुन कर सभी सैनिक सहम गये और चटपटा भी इधर उधर देख कर बोला—कौन है, सामने क्यों नहीं आता। "फिर वही आवाज"—मैं क्षत्रिय हूं, यह अन्तिम अवसर है यदि तू जीवित रहना चाहता है तो चन्द्रप्रभा को वापिस लौटा दे वरना तुझे तथा तेरे सभी अंग रक्षकों को यमपुरी पहुंचा दूंगा। बोल क्या चाहता है ? जीवन पसन्द है या मौत ?

चटपटा बोला—जब तक मेरे दम में दम रहेगा तब तक चन्द्रप्रभा को तो क्या उसकी हवा तक को भी कोई पा नहीं सकता, अगर क्षत्रिय हो तो सामने आ जाओ। "मैं देख लूं तूं कितना बहादुर है।" इस बात को सुनते ही कण्ठाराम और गुणपाल दोनों सामने उपस्थित हो गए। चटपटे की चोर सेना में और गुणपाल में भयंकर लड़ाई शुरू हो गई। इधर कण्ठाराम जी भी तलवार चलाने लगे और जो मुख्य अंग रक्षक था जो शेखी खोरा था; उसे जा घेरा और बोला—"अब बता बच्चू ! उस समय बड़ी शेखी मारता था" और देखते ही देखते कण्ठाराम जी ने उसे यमलोक पहुँचा दिया।

गुणपाल भी दैवी तलवार को संभालते हुए आगे बढ़ा—

बिजली के मानिंद कड़क कर, तलवार उठाई वीर ने,
जिधर भी वह झुक गया, आफत मचाई वीर ने।
निडर हो वह लड़ रहा, आगे निरन्तर बढ़ रहा,
शेर जैसे बकरियों में, यूं लपक कर पड़ रहा।
पीछे हटा जो समझ लो, कि मौत से वह बच गया,
सामने जो अड़ गया, बस शीश उसका कट गया।
कोलाहल चंहु ओर छाया, भागे जान बचाय कर,
चटपटा भी देखता था, उस को आंखें फाड़ कर।

चटपटा भी सोचने लगा यह इन्सान है या कोई तूफान है। अच्छा ! मैं इसे देखता हूं यह कैसा वीर जवान है" यह कह कर उसने तलवार उठाई और गुणपाल पर झपटता हुआ बोला—ओ ! नादान छोकरे !! क्यों तेरा सिर खुजलाया; जो पागल कुत्ते की तरह मेरी राजधानी में घुस आया, तुझे पता नहीं मेरे नाम का चटपटा है !! तुझे सफाचट बना दूंगा। इस तेरी चांद सी सूरत को मिट्टी में मिला दूंगा।" गुणपाल—वाह ! वाह !! मिल गया ! मिल गया !! जिसे मैं वहुत दिनों से खोज रहा था वह आज मिल गया।

प्यासी तेरे खून की, यह मेरी तलवार।
जरा संभल के हो खड़ा, लेऊं शीश उतार।

चटपटा दांत पीस कर बोला—जा ! जा !! ओ दूध पीते बच्चे, अकल कच्चे, अभी तो तेरे दूध के दांत भी नहीं

गुणपाल और कण्ठाराम शान्त खड़े थे। वहाँ के लोग गुणपाल के पास आये और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगे—"हे सत्य के देवता ! हम आप के शरण आए हैं हमें शरण दीजिए।"

गुणपाल बोला—शरण तो हम सब को उस भगवान का है मेरी ओर से तुम सब निर्भय हो जाओ, मैं तुम्हें अभय दान देता हूँ। इतनी बात सुनकर सभी लोग गुणपाल के चरणों में गिर पड़े और जयकारों के नाद से आकाश गूंजा दिया। कुछ ही समय के पश्चात् चटपटा के साथी भी लौट आए और गुणपाल के चरणों में गिर कर क्षमा याचना की गुणपाल ने उन सब को क्षमा कर दिया। बात की बात में वहाँ पर सहस्रों लोग एकत्रित हो गए। सब जनसमूह के सन्मुख खड़े होकर गुणपाल ने कहा "उपस्थित सज्जनों! चटपटा से मेरी कोई शत्रुता नहीं थी, मुझे उस के कार्य से घृणा थी, वह एक समय रत्नपुर नगर में गया था जहाँ पर इस समय प्रसन्न कीर्ति भूपति राज्य का संचालन करते हैं। उस राजा की पुत्री जिस का नाम चन्द्रप्रभा है वह एक दिन अपनी सखियों के संग उद्यान भ्रमण हेतु गई थी। चटपटा उस राजकुमारी को बलात् उठा लाया। उसी दिन से में चटपटा की खोज में निकल पड़ा और अति कठिनाइयों का सामना करता हुआ यहां तक पहुँच गया। यहां

आकर भी मैंने चटपटा को समझाया कि चन्द्रप्रभा को वापिस लौटा दीजिए परन्तु उसने यही उत्तर दिया कि जब तक मेरे धड़ पर सिर है तब तक चन्दा को तो क्या कोई उस की हवा तक भी नहीं ले सकता। उस का उत्तर सुन कर मुझे विवश होकर शस्त्र उठाना पड़ा उस का जो परिणाम निकला वह आप लोगों के सन्मुख है ही, पाप का फल सदैव भयंकर होता है। जो आत्मा का पतन कर डालता है इस लिए आप पाप से बचो और दीन दुखियों की रक्षा करो, साधु सन्तों की सेवा करनी चाहिए। ज्ञान ध्यान पूर्वक सदाचार का पालन करना चाहिए। तभी आत्मोत्थान हो सकता है। आज से आप लोग भी सप्त कुव्यसनों का त्याग कर दें। क्योंकि त्याग की महिमा महान है। एक कुव्यसन के त्याग से मानवात्मा में प्रकाश की रश्मियां फूट पड़ती हैं परन्तु जिन का सभी कुव्यसनों का त्याग हो उन का उत्थान कितना होगा इस का अनुमान स्वयं करें।" इन शब्दों के साथ गुणपाल ने अपना उपदेश समाप्त किया।

गुणपाल के उपदेशों का नागरिकों पर गहरा प्रभाव पड़ा। सहस्त्रों की संख्या में लोगों ने सप्त कुव्यसनों का त्याग किया। किसी ने एक किसी ने दो किसी ने तीन का अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार त्याग किया सारे शहर में

गुणपाल पूर्णमासी के चन्द्र की तरह छा गया।

उधर चन्द्रप्रभा को भी ज्ञात हुआ कि चटपटे का काम तमाम हो गया और गुणपाल से लोग अति प्रभावित हैं तो वह खुशी से झूम उठी मानो रावण का अन्त हुआ हो।

अब इधर गुणपाल चन्दा के भवन में जाता है। चन्दा ने उठ कर स्वागत किया और सिंहासन की ओर संकेत करते हुए बैठने को कहा। गुणपाल के बैठते ही स्वयं भी पास आ गई और भूमि की ओर निहारती हुई बोली— आप ने मेरे लिए बहुत कष्ट उठाये, आप का किस मुख से धन्यवाद करूँ।"

गुणपाल—किसी गिरते को सहारा देना, किसी के सतीत्व की रक्षा करना, ये क्षत्रियों का परम कर्त्तव्य हैं। मैंने तो अपने कर्त्तव्य का पालन किया है कोई अहसान नहीं किया। ये सुनकर चन्दा चुप हो गई इतने में वहां पर न जाने कहाँ से हजारों व्यक्ति आ गए और गुणपाल को कुछ दिन ठहरने की प्रार्थना की। गुणपाल और कर्णठाराम कुछ थके हुए थे, सो उन्होंने प्रार्थना स्वीकार कर ली।

गुणपाल को यहां पर रहते हुए एक सप्ताह व्यतीत हो गया। आठवें दिन खटपटा भी वहां आ पहुँचा। उसे देख सभी लोग आश्चर्य करने लगे परन्तु वह सीधा गुणपाल के पास पहुँचा। गुणपाल ने भी उसका आदर सत्कार किया।

तनिक सी देर में वहां पर नगर निवासी एकत्रित हो गए। गुणपाल ने खटपटे को सारी सम्पूर्ण घटना कह सुनाई तथा लोगों से कहा कि "ये खटपटा मेरा मित्र है।" इस बात को सुनकर सब नर-नारी चकित रह गए और एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

गुणपाल ने लोगों से कहा कि कल मैं यहां से रवाना हो जाऊंगा मेरे वाद तुम खटपटे की छत्रछाया में रहना आज से तुम इसे अपना स्वामी समझना, यह सुनकर सभी बोले "हमारे तो आप ही सब कुछ हैं। खटपटे ने भी उन की बातों का समर्थन किया।"

गुणपाल ने सभी लोगों को धैर्य देते हुए कहा कि अब खटपटे का पूर्ववर्ती जीवन नहीं है अब तो मेरे और इस के जीवन में कोई अन्तर नहीं है। हम और ये सगे भाई के समान है। आप लोग किसी बात की चिन्ता न करें। इस की ओर से आप को कोई कष्ट न होगा। इस बात को सुनकर सभी लोग प्रसन्न हो गए। खटपटे ने बहुत कहा कि मैं इस योग्य नहीं हूँ परन्तु गुणपाल ने उसकी एक न सुनी और वहां का स्वामी बना दिया, कुछ लोगों को यथा योग्य स्थानों पर नियुक्त कर दिया। इस के पश्चात् उस ने खटपटे से कहा कि जो बन्दी किए हुए हैं उनको मेरे सामने उपस्थित करो। खटपटे ने सब को बन्धन मुक्त कर

दिया। सैकड़ों लोग बन्धन मुक्त होकर गुणपाल के पास आ गए सभी ने आप वीती घटना कह सुनाई। गुणपाल ने आज्ञा दी कि इन सब युवक युवतियों को अपने-अपने निजी स्थान पर पहुँचा दो, तत्काल ही सबको आदर सत्कार सहित पहुँचा दिया गया।

इसके वाद गुणपाल ने कहा अब हमें भी आज्ञा दीजिए मैं भी यहां से सीधा रत्नपुर जाने का विचार रखता हूं, आज ही जाने का निश्चय किया है। खटपटे ने तथा अन्य लोगों ने बहुत विनति की कि आप कुछ दिन और ठहरें परन्तु आग्रह करने पर भी गुणपाल ने विवशता प्रकट की यह वात सुनते ही खटपटे के एक साथी ने कहा कि महाराज चटपटा कहीं से एक विमान लाया था जो शाही महलों में रखा हुआ है। यदि उसके द्वारा जाओ तो महीनों का रास्ता दिनों में ही तय हो जायेगा। जब चटपटा भी कहीं दूर परदेश को जाता था तो इस विमान द्वारा मार्ग तय किया करता था। उसकी बात सुनते ही विमान महलों से लाया गया और खटपटे ने विमान संचालक से कहा—तुम चलाना जानते हो, इसलिए तुम रत्नपुर तक इन्हें छोड़ आओ और मैं भी साथ चलूंगा।

गुणपाल ने साथ न चलने के लिए बहुत कहा परन्तु खटपटे ने अपनी नम्रता से विनय पूर्वक साथ जाने की

स्वीकृति ले ली फिर उस ने अपने मन्त्री से कहा कि जब तक मैं रत्नपुर से वापिस न लौट आऊं तब तक कार्यक्रम का ठीक ढंग से संचालन करना, उत्तर में मन्त्री ने कहा आप कोई चिन्ता न करें सब ठीक हो जाएगा ।



तेइस

........गुणपाल रत्नपुर को

जब गुणपाल तैयार हुआ तो नगर के सभी लोग विदाई देने को पहुंच गए इतने में विमान सज गया। गुणपाल, चन्द्रप्रभा, कण्ठाराम और खटपटा ये सभी विमान पर सवार हो गए। बहुत बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हो गए उन्होंने गुणपाल को विदा तो कर दिया, परन्तु किया भारी दिल और भरी आंखों से। विमान आकाश में हवा से बातें करता हुआ भागा जा रहा था। लोग तब तक उसे देखते रहे जब तक कि विमान आँखों से ओझल न हो गया। विमान आकाश में यूं उड़ रहा था मानो आषाढ़ का श्याम मेघखण्ड अपने स्वेद बिन्दुओं से दिग-दिगान्त को परिप्लावित करने के लिए भागा जा रहा हो। आकाश की ठण्डी-ठण्डी वायु गुणपाल के केशों को उड़ा रही थी और नीचे का दृश्य भी मनमोहक था। सन्ध्या को विमान रत्नपुर के समीप पहुँच गया। गुणपाल ने देखा नीचे सारे रत्नपुर को सैनिकों ने घेर रक्खा है। गुणपाल

ने आश्चर्य चकित होकर विमान को उतार लिया। गुणपाल ने विमान और उन तीन प्राणियों को वहीं पर छोड़ सैनिकों को जाकर पूछा कि क्या बात है ? सैनिक बोला—हमारे महाराज चक्रवर्ति सम्राट् बनना चाहते हैं। सभी राजाओं ने तो हमारे महाराज की अधीनता स्वीकार कर ली है, परन्तु यहां के बादशाह ने अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, इस लिए हमें यहां हमला करना पड़ा। गुणपाल को यह सुन कर क्रोध तो बहुत आ रहा था पर जहर के घूंट पी कर रह गया और बोला—"मैं आप के महाराज से मिलना चाहता हूँ।" सैनिक उसे अपने महाराज के पास ले गया। गुणपाल ने महाराज को प्रणाम किया और बताया कि वह नेपाल नरेश का पुत्र है। राजा बड़ा अहंकारी और घमण्डी था बोला "तो आप यहां किस कारण से आये हैं ?"

गुणपाल बोला महाराज आप ने जो रत्नपुर पर बिना कारण हमला किया है मैं आप से प्रार्थना करने आया हूं कि वह हमला बन्द कर दें, थोड़ी सी भूमि के लिए लाखों मनुष्य वलि चढ़ जाएं यह घोर अन्याय है। इन्सान-इन्सान पर तलवार उठाए यह पशुता है, मूर्खता है, अनाचार है, पाप है, मानवता के विरुद्ध है। इसे रोकिए महाराज, इसे रोकिए [illegible] लय आ जाएगी। उस दृश्य को आंखों [illegible] ने [illegible] व सारा युद्ध क्षेत्र निर्दोष वीरों की

लाशों से भर जाएगा और मेरे देश की वीर स्त्रियां उस जगह बैठ कर मातम करेंगीं, सुहागनों का सिन्दूर मिट जाएगा, माताओं की गोदें पुत्रों के लिए तरसेगीं और-और गरीबों की बददुवाएं आप को लगेगीं आप को।" यह बात सुन कर वह राजा क्रोध में पागल हो गया और चीखा—"खामोश" और तम्बू में थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया। राजा गुणपाल को थोड़ी देर तक घूर-घूर कर देखता रहा और फिर बोला—"ये युद्ध होकर रहेगा", साक्षात् ब्रह्मा भी आकर मुझे पीछे हटने को कहें तो यह क्षत्रिय पीछे नहीं हटेगा। "तुम जा सकते हो।"

गुणपाल होठों को सिकोड़ता हुआ बोला—लानत है ऐसे क्षत्रित्व पर "जो अपनी तलवार का प्रयोग हिंसा के लिए करना चाहता है।"

अब तो राजा से न रहा गया और बोला—तो लो हम अपनी तलवार का प्रयोग पहले तुम्हीं पर ही करते हैं और फिर अपने सैनिकों से बोला—"पकड़ लो इसको और हमारे अपमान करने का मजा चखा दो।" सैनिकों ने गुणपाल को चारों ओर से घेर लिया। (गुणपाल ने देवमयी तलवार म्यान से निकाल ली)

"सन्मुख अड़ा तलवार लेकर, भय न लाया वीर ने।
जिधर को भी झुक गया, तूफान मचाया वीर ने॥

जो भी आया सामने, उस को उड़ाया वीर ने।
लाशों के ढेर लग गये, गजब ढाया वीर ने॥

जिस तरफ तलवार उस की, इक बार भी बढ़ गई।
अनेकों वीरों की गर्दनें, कट जमीं पर पड़ गई॥

मच गया हाहाकार सारे, सेना छोड़ गई मैदान को।
आगे बढ़ गुणपाल ने, पकड़ा उस शैतान को॥

दृढ़ बन्धन से बांधा, भूपति नादान को।
पल भर में समाप्त कर दिया, उसके सब अभिमान को।

× × × ×

शोरोगुल सुन कर कंठाराम, चन्द्रप्रभा और खटपटा भी वहीं आ गये। जब उन्होंने देखा कि गुणपाल ने राजा को बन्दी बना लिया है तो वे सब हैरान रह गये। राजा भी शर्म के मारे भूमि में गड़ा जा रहा था। गुणपाल ने राजा से कहा कि—"अहंकार ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।" राजा बड़े धीमे स्वर से बोला—वीर, तुम असल में वीर हो। मैं अपने किये पर बहुत शर्मिन्दा हूं। मैं अभी अपनी सेना को वापिस जाने का आदेश देता हूं आप मुझे बन्धन मुक्त कर दीजिये। मैं आपका जन्म भर अहसान मन्द रहूंगा। "तुमने मेरी आँखे खोल दीं।"

गुणपाल बोला—महाराज, मैं अभी भी अपने आपको एक तुच्छ सेवक समझता हूँ। मैं प्रसन्नकीर्ति महाराज का छोटा सा सेवक हूँ; इसलिए अगर आप क्षमा चाहते हैं

तो, महाराज से क्षमा मांगे । "मैं आपको क्षमा नहीं दे सकता ।"

उधर दूर महल में भी यह खबर पहुंच गई थी कि—कोई वीर शत्रु सेना में घुस गया और युद्ध कर रहा है, इसीलिए वह अपने महल के झरोखों में से ये सारी लड़ाई देख रहे थे पर वे अभी तक समझ नहीं पाये थे कि किस वीर ने राजा को बन्दी किया है क्योंकि दूर होने से गुणपाल का चेहरा उन्हें स्पष्ट नजर नहीं आता था ।

उधर गुणपाल बन्दी राजा को अपने साथ ले कर रत्नपुर की ओर चला उसके साथ खटपटा, कंठाराम आदि सब चलने लगे । जब शहर के निकट पहुंचे तो सेनापति ने गुणपाल को पहचान लिया वह खुशी से उछल पड़ा फिर महाराज की ओर दौड़ा और उनके पास जाकर खुशी-खुशी से चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा—महाराज की जय हो, गुणपाल जी आ गए हैं । इस से भी खुशी की खबर यह है कि उन्होंने हमारे प्रतिपक्षी राजा (शत्रु-भूप) को बन्दी बना लिया है और उसे साथ लेकर आ रहे हैं । ये शुभ सूचना सुन कर राजा भी खुशी में झूम उठा और बोला—हमें गुणपाल के पास ले चलो और देखो, सभी द्वार खोल दो, और सब वन्दियों को बन्धन मुक्त कर दो, स्वतन्त्र कर दो,

खजानों के मुंह खोल दो। भर-भर कर धन के थाल गरीबों को बांट दो।

उधर राजकुमार मनमोहन ने दौड़ कर गुणपाल को अपने अंक में भर लिया। गुणपाल भी मनमोहन से बड़े स्नेह पूर्वक मिले। राजा खुशी के सागर में गोते लगा ही रहा था कि—गुणपाल कंठाराम तथा खटपटा आदि भी वहीं आ पहुंचे, राजा ने सभी का अभिवादन किया गुणपाल ने ज्यों ही राजा को प्रणाम किया राजा ने उसी समय उसे गले से लगा लिया तथा उसकी पीठ को थपथपा कर बोला—गुणपाल आज मैं बहुत खुश हूं तुम मनुष्य नहीं देवता हो देवता। आज तुमने हमारे शत्रु को पकड़ कर हमारी ही नहीं सारे राज्य की इज्जत बचाई है।'' गुणपाल—मै सोचता हूँ तुम्हारा यह उपकार का ऋण किस प्रकार चुकाऊंगा।'' गुणपाल बोला—''महाराज ! मैं तो आपका सेवक हूँ इसमें ऋण की क्या बात है।

उधर सारे शहर में भी उसके आने की सूचना फैल गई थी। सभी उसके दर्शनार्थ को दौड़े आ रहे थे। अनायास ही राजा की दृष्टि चन्द्रप्रभा पर पड़ी और वह उसे देखते ही अति प्रसन्न हुये। चन्दा मनमोहन को देखते ही जा चिपटी और उस की आंखों से आंसुओं का झरना बह निकला। मनमोहन अपनी छोटी बहन को शीघ्र ही महल में ले गया। महारानी

ने चन्दा पुत्री को देखते ही गोदी में उठा लिया और बड़े स्नेह पूर्वक सिर पर हाथ फेरने लगी तथा कहा—हे पुत्री तू कहां चली गई थी, उसके दिल में खुशी के फुव्वारे छूट रहे थे सभी ओर खुशियां ही खुशियां नज़र आ रही थीं। चन्दा भी अपनी माता को देख कर खुशी से फूल उठी। मनमोहन पुनः गुणपाल से आ मिला। राजा, मनमोहन और गुणपाल तथा खटपटे बन्दी राजा को लिये धीरे-धीरे राज सभा की ओर अग्रसर हुये राज सभा में पहुंचते ही नरेश प्रसन्नकीर्ति सिंहासन रूढ़ हो गये और दायें-बायें ज़ो दो सिंहासन खाली पड़े थे उन पर क्रम से दोनों राजकुमार बैठ गये तथा अन्य सभी राज्याधिकारी यथायोग्य स्थानों पर जा विराजे। तब भूपति प्रसन्नकीर्ति ने बन्दी की ओर संकेत करते हुए कहा—हे चण्डू महिपाल ! अब तुम बताओ तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाए, क्या यही क्षत्री वीरों का धर्म है ? कि—किसी को धोखा देकर आ दबाएं और अपनी वीरता की धाक जमाना यह कहां का न्याय है। उत्तर में चण्डू राजा ने कहा कि—राजन् मैं आप का अपराधी हूं, आप जो भी सजा देंगे मैं वही स्वीकार करूंगा इसका आप को पूरा-पूरा अधिकार है।

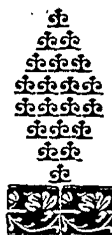
मनमोहन क्रोध में दांत पीसता हुआ बोला—"पिता

जी इसे फांसी पर लटका दीजिये"। पर गुणपाल मनमोहन के कन्धे पर प्यार से हाथ फेरता हुआ बोला, मनमोहन, जो इन्सान अपनी भूल को स्वीकार कर अपने किये पर पश्चाताप करता है उसके सारे पाप धुल जाते हैं। सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाए तो वह भूला नहीं कहलाता। चण्डू राजा ने अपनी भूल को स्वीकार कर लिया है, वह अपने किये पर पछता रहा है, इसलिए मेरा तो यही विचार है कि "अब इसे बन्धन मुक्त कर देना चाहिए।"

प्रसन्नकीर्ति राजा यह सुन कर बोले—गुणपाल जी, हम यह बात तुम्हीं पर छोड़ते हैं जो तुम्हारी इच्छा हो वही करो। गुणपाल ने उसे क्षमा कर दिया और कहा कि "वह महाराज प्रसन्नकीर्ति से क्षमा याचना करें।" चण्डू राजा ने आगे बढ़कर क्षमा मांगी और प्रसन्नकीर्ति राजा ने क्षमा के साथ ही मुक्त कर दिया।

जहां पर द्वेष का दावानल धधक रहा था, क्रोध की चिनगारियां उछल रही थीं, शत्रुता की भयंकर लपटें नभ को स्पर्श कर रही थीं, एक दूसरे की पैनी तलवार रक्त की प्यासी थी, ऐसे दूषित वातावरण में एक दम ही इतना परिवर्तन हो गया। आह! संसार तेरी जय हो, संसार में परिवर्तनशीलता का ही सुदर्शन चक्र चल रहा है। अब वहां

प्रेम और स्नेह पूर्वक वार्तालाप चलने लगी और प्रत्येक बात में मुख से पुष्प झरने लगे। यूं कहना चाहिए कि दूध और जल मिल कर एक हो गये और बड़े आदर सत्कार के साथ चण्डू नरेश को विदाई दी गई।



चौबीस

........दुल्हा गुणपाल

इधर सूर्य भी अस्ताचल पर चला गया। सन्ध्या के समय सभी राज्याधिकारी गण अपने-अपने निवास स्थान की ओर प्रस्थान कर गए। गुणपाल ने कण्ठाराम का भी महाराजा से परिचय करवा दिया। राजा, मनमोहन, गुणपाल और कण्ठाराम राज भवन में आ बैठे। खटपटा और विमान चालक भी साथ ही थे। भोजनादि से निवृत्त होकर भोजनालय से उठ कर विश्राम हेतु जब शयन कक्ष में गए तो चन्द्रप्रभा के विषय में चर्चा चली। गुणपाल ने शुरू से अन्त तक सारी घटना कह सुनाई। सुन कर दोनों पिता पुत्र ने दांतों तले ऊँगली दबा ली।

उधर महल में कमला तथा अन्य सखियां चन्द्रप्रभा से गले लगकर मिलीं और पूछा कि उसने कैसे उस पापी से अपने सतीत्व की रक्षा की। उत्तर में चन्द्रप्रभा ने सारी घटना ज्यों की त्यों कह सुनाई। चन्दा की बातें सुनकर सभी आश्चर्यचकित हुईं। चन्दा ने फालतू राम के बारे में पूछा

तो पता चला कि वह अपने घर चला गया। बातों ही बातों में अर्धरात्रि व्यतीत हो गई, फिर सभी गहरी निद्रा की गोद में चले गए।

दूसरे दिन गुणपाल और चन्द्रप्रभा के विवाह की बात चली। राजा और रानी गुणपाल को दुल्हे के रूप में शीघ्र से शीघ्र देखना चाहते थे। राज-ज्योतिषी ने भी शुभ दिन बता दिया और फिर विवाह की तैयारियां होने लगी, मंगल गीत गाए जाने लगे सभी देशों से महाराज जी को बधाईयां आने लगीं। सारा शहर सजाया गया, लोग गुणपाल से इतना प्रेम करते थे कि प्रत्येक नें अपनी-अपनी दुकान को नव-नवेली दुल्हन की तरह सजा लिया। क्या गली क्या बाजार हर ओर का दृश्य अनोखा था, मनोहर था, मानो साक्षात् सुन्दरता की देवी उस शहर में आ गई हो। सुन्दरता का वर्णन करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं। राजा के रिश्तेदार और भिन्न-भिन्न नगरों के राजकुमार भी वहाँ ठीक समय पर पहुंच गए थे। चहुं ओर हर्ष की लहर दौड़ रही थी। राजकुमारी भी मन ही मन फूली न समा रही थी, वह जीवन को सुखी बनाने के लिए भविष्य की कल्पनाओं में डूबी हुई थी। यौवन की जलती दो मसालें एक दूसरे के पाश में बंध जाना चाहती थीं।

राजा के प्रांगण में हर्ष की लताएं बिखरी हुई थीं।

स्थान-स्थान पर "स्वागतम्" लगाए गए। जिस दिन की कुमारी प्रतिक्षा कर रही थी अपने जीवन साथी से मिलने के लिए आखिर वह समय आ ही पहुंचा। तीसरे दिन बड़ी धूम धाम के साथ पाणिग्रहण की रस्म सम्पूर्ण हुई। गुण-पाल और चन्द्रप्रभा दोनों पति-पत्नि के रूप में आबद्ध हो गये। इस खुशी में चन्दा की सखियाँ नाच उठीं, गा उठी और उनके होठों से शब्द छूट-छूट कर अपने आप बाहर आ निकलें—

गाना

गावो मंगला चार, सब बहनें रलमिल गावो।
आज है मंगल बहार, मिलकर खुशी मनावो॥
बहुत दिनों से आशा फलियां, आज खिली मुरझाई कलियां।
हो रहा हर्ष अपार, स्नेह के झरने बहावो॥
जोड़ी मिली है बड़ी लासानी, जैसे इन्द्र और इन्द्रानी।
सब जाते बलिहार, वीर प्रभु के गुण गावो॥
आज हमारा पुन्य सवाया, सब महलों में आनन्द है छाया।
महक रही गुलजार, सब मिल नाचो गावो॥
हमारी चन्दा की किस्मत जागी, कैसा वर पाया बड़ भागी।
हो रही जय-जयकार, प्रेम पुष्प बरसाओ॥
गावो मंगला चार........

राजा ने विवाह के समय हीरे-पन्ने जड़ित आभूषण, बहुमूल्य वस्त्रादि दिये और सेवा हेतु दास दासियां भी दीं।

राजा ने एक सुन्दर भवन की ओर इशारा करते हुये

कहा गुणपाल आपके रहने के लिए हमने वह भवन तैयार करवाया है। आप इसमें निवास करें और किसी भी चीज़ की आवश्यकता हो तो मांग लेना।" गुणपाल अपनी पत्नि चन्द्रप्रभा के साथ उस भवन में चला गया और दोनों सुख शान्ति पूर्वक अपने जीवन को व्यतीत करने लगे।

एक दिन गुणपाल ने खटपटा को बुला कर कहा कि—तुम यहां से तिलकपुर नगर जाओ वहां जाकर सेठ धन्ना मल के पुत्र मदनलाल से मिलो, उन्हें सूचना दो कि—गुणपाल रत्नपुर नगर में पहुंच चुका है। इसके पश्चात् कंचन पुर नगर में सेठ ब्रह्मदत्त और वहां के भूपति को भी सूचना दे दो। बाद में दीपनगर के नरेश चतुरसेन को हमारी ओर से कह देना कि—आप के प्रेम भाव को भुलाया नहीं सदैव ही याद करते रहते हैं और आजकल हम रत्नपुर नगर में ठहरे हुए हैं। इस प्रकार उपर्युक्त सभी नगरों में हमारी सूचना देकर अपने पाताल नगर को लौट जाना।

खटपटे ने उसी समय विमान चालक के साथ विमान द्वारा सूचना देता हुआ दीपनगर में पहुंच गया वहां के नरेश को सभी घटनाएं सुना कर दो दिन तक विश्राम करने के लिए ठहर गया और तीसरे दिन पाताल नगर की ओर रवाना हो गया और वह सब लोग सूचना मिलते ही अपनी-अपनी कन्याओं को साथ लेकर रत्नपुर नगर की ओर

प्रस्थान कर गये।

उधर जब राजा प्रसन्नकीर्ति को ज्ञात हुआ कि—दीप नगर का नरेश चतुरसेन बड़े ठाट-बाट से आ रहा है और कंचनपुर नगर की ओर से राजा बलबीर का प्रधान मंत्री तथा साथ में सेठ ब्रह्मदत्त और उनके पुत्र रूपलाल जी भी पधार रहे हैं तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। तिलकपुर से सेठ धन्ना जी साथ उनके पुत्र मदनलाल तथा मदन के मित्र सुन्दरलाल जी अपने पिता के साथ बड़ी प्रसन्नता पूर्वक रत्नपुर नगर की ओर चले आ रहे हैं, और रत्नपुर नगर के बाहर कुछ ही दूरी पर तीनों नगरों के मेहमान एकत्रित हो गए और सबने राजा प्रसन्नकीर्ति के पास अपना-अपना दूत भेज दिया कि हम पहुंच गये हैं।

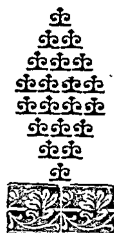
दूत द्वारा सूचना मिलते ही राजा ने अपने प्रधानमंत्री को बुलाकर विचार विमर्श किया कि सारा शहर सजवाया जाये। दोनों की सम्मति होते ही राज्यधिकारियों की ओर से शहर की सजावट के लिए तैयारियां होने लगीं और देखते ही देखते स्वर्गपुरी के सदृश्य सारा शहर सज-धज गया। अब उनके स्वागत की सभी कार्यवाही तैयार हो गई। इसके पश्चात् स्वयं नरेश प्रधान मंत्री, युवराज, गुणपाल, सेनापति तथा अन्य राज्यधिकारियों के साथ स्वगतार्थ चल दिये।

नगर के बाहर मान सरोवर के समीप ही परस्पर दोनों समूह मिल गये और यथायोग्य सविधि एक दूसरे का आदर, सत्कार, स्वागत, प्रणाम किया देखते ही देखते नगर निवासी भी स्वागत हेतु उमड़ पड़े जिस प्रकार तारागण चन्द्र को घेर लेते हैं उसी प्रकार उन्होंने आये हुयें मेहमानों को घेर लिया। तोपों के सिंहनाद से आकाश गूंज उठा, जय-जयकार की ध्वनि चहुँ ओर फैल गई। दर्शक प्रजा ने अपने हृदय में रहे हुए अतिथियों के सम्मान में पुष्प वर्षा की राजा प्रसन्नकीर्ति जब आये हुये मेहमानों से मिले तो सब खुशी में झूम उठे। जब चतुरसेन की पैनी दृष्टि युवक गुणपाल पर पड़ी तो हर्ष से विभोर होकर उसे अपने अंक में भर लिया। सेठ और सेठ पुत्र जितने भी थे सभी ने गुणपाल को जयजिनेन्द्र की, गुणपाल ने भी उन सब का आदर सत्कार किया तथा गले से लगा लिया। नगर निवासियों ने नरेश तथा प्रधान मंत्री के गले में बहुमूल्य हार डाले और सब जनसमुदाय विशाल मण्डप की ओर बढ़ने लगा। दोनों नरेश, दोनों युवराज, दोनों प्रधान मंत्री साथियों सहित अपने-अपने हाथियों पर विराजमान थे वे, सब से आगे चल रहे थे, क्रम से उनके पीछे सेनापति, सेठ, अन्यधिकारी चल रहे थे और नगर निवासी गीत गाते हुए, तथा जय बुलाते हुए चलते थे और ठाट-बाट तथा गाजे

बाजे सहित मण्डप में पहुंच गये। वहां पर सब को यथा-योग्य स्थान दिया गया और भोजन परोस दिया गया। भोजन से निवृत्त होने के पश्चात् आये हुए मेहमान एकत्रित होकर जहां पर गुणपाल बैठा था वहां पर पहुंच गये और सब एक साथ बोले—आप अपनी धरोहर संभाल लीजिये। यह सुन कर गुणपाल सिर झुका कर भूमि की ओर निहारने लगे और बीच में ही नरेश प्रसन्नकीर्ति बोल पड़े कि—मैं समझ गया हूँ कि क्या माजरा है। आप के वचनों से युव-राज शरमा गये हैं, इस लिये बोलने में संकोच हो रहा है। आप लोगों की कन्यायें स्वयं आगे बढ़कर युवराज के गले में माला डाल दें।

राजा चतुरसेन ने अपनी पुत्री स्नेहलता को संकेत द्वारा बुलाया। उसने आते ही गुणपाल के गले में माला डाल दी और अपने आसन पर जाने लगी तो पास में बैठी चन्दा ने उसका हाथ पकड़ कर खींचा और अपने पास ही बैठा लिया इसी प्रकार गुणमाला और इन्द्रप्रभा ने मनमोहन के गले में माला डाल दी मनमोहन भी एक बहुत सुन्दर युवक राजकुमार था। रूपवति ने कंठाराम जी के गले में जयमाला डाली। कंठाराम जी भगवान का लाख-लाख शुक्र कर रहे थे। जोड़ियाँ खूब जच रही थी, गुणपाल, कंठाराम को देख

कर मुस्कराया और बोला—क्यों कंठाराम जी अब तो खुश हो ? कंठाराम ने उत्तर दिया खुश तो आपको होना चाहिए जिनके दो-दो हैं। "यहां तो एक ही है" यह सुन कर सब खिलखिला पड़े।



छबीस

........पिता पुत्र मिलाप

युवराज गुणपाल की शक्ति का प्रभाव आसपास के देशों में तो पूर्व ही पड़ चुका था, अब दूर के विदेशी लोगों पर भी उसकी धाक जम गई। यहां तक कि—स्वयं नेपाल नरेश को भी उसकी महानता का ज्ञान हुआ।

अपने पुत्र की विशेषताओं को सुन कर कौन पिता प्रफुल्लित न होता होगा, आखिर पिता-पिता ही होता है। भले ही गुणपाल आज इतना आदर पात्र और आदर्शों का पुंज था, उस का भावी जीवन उज्ज्वलता की ओर तीव्र गति से बढ़ता जा रहा था, उसे इतना बहुमान प्राप्त हुआ था कि बड़े-बड़े सम्राट् उसकी अधीनता स्वीकार करने को तैयार हो जायें फिर भी वह था तो नेपाल नरेश का पुत्र ही। इस सूचना से शीघ्र ही विमान द्वारा रत्नपुर की ओर प्रस्थान कर गया निकट पहुंचने पर सूचना दी गई। सूचना के अनुसार पूर्ववर्ती सजावट, बनावट, आदर, सत्-कार, सम्मान, स्वागत सहित मण्डप की ओर चल पड़े।

गुणपाल को जब अपने पिता जी के आगमन की खबर मिली तो वह इतना प्रसन्न हुआ जितना शायद ही वह कभी हुआ हो। वह नंगे पैर ही महल से अपने पिता को लेने दौड़ पड़ा और अपने पिता जी के चरणों में जा गिरा। बार-बार प्रणाम किया। उसके पिता ने भी उसे अपने गले से लगा लिया सोच रहे थे मैं भी कितना मूर्ख हूँ जो अपने हीरे जैसे पुत्र को घर से निकाल दिया। इसी बात को सोचते-सोचते उनकी आंखों से आंसू बह निकले। गुणपाल आसुओं को देख कर आश्चर्य में डूब गया और बोला— पिता जी क्या आपने मुझे अभी तक क्षमा नहीं किया "आप क्यों रो रहे हैं ?"

पिता बनावटी हंसी मुंह पर ला कर बोला—"बेटा यह तो खुशी के आंसू हैं," भला कई वर्षों के बाद तो तुमसे मिल रहा हूँ क्या अब भी मेरी आंखों में आंसू नहीं आयेंगे। "क्या मैं पत्थर थोड़े ही हूँ।"

इस प्रकार वर्षों से बिछुड़े पिता-पुत्र मिल गये। प्यार और ममता का सागर उमड़ पड़ा, ममत्ता की जीत हुई, नगर निवासी भी उस महानात्मा को झुक कर प्रणाम कर रहे थे जिसने गुणपाल जैसे देवपुरुष को जन्म दिया !

मण्डप में पहुंचने के पश्चात् चिरात विरही पुत्र को पाकर पिता स्नेहातिरेक में विभोर हो गये। उनका हर्ष पूरित

मन एक पलक के लिए भी पुत्र से अलग होने को तैयार न था, यहाँ तक की उन्होंने महाराज द्वारा भोजन के लिए की प्रार्थना पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जैसे कि वे भोजन आदि समस्त आवश्यक क्रियाएं ही भूल चुके हों उनके सामने तो केवल उनका पुत्र था, जिसकी मनोहारी छवि को वे आंखों के रास्ते हृदय में उतार लेना चाहते थे। इस समय उन्हें भोजन अधिक प्रिय नहीं था यदि कुछ प्रिय था तो उसके साथ वार्तालाप करना ही तथा प्यारे गुणपाल व उसके साथियों के अति आग्रहपूर्ण कथन पर वे अनमने भाव से भोजन आदि से निवृत्त हो कर पुनः वार्तालाप में खो गये।

कुछ समय के पश्चात् कंचनपुर के प्रधान मंत्री ने प्रार्थना की कि गुणपाल को कंचनपुर में चलना चाहिए क्योंकि वहां का राजा बलबीर तथा रानी सुंदरा बड़ी शोचनीय दशा में हैं और मृत्यु की घड़ियां गिन रहे हैं इसलिए आप शीघ्रातिशीघ्र कंचनपुर पधारें, परन्तु गुणपाल के पिता जी बोल उठे—नहीं अभी-अभी तो हम अपने बेटे से मिले हैं फिर इतनी जल्दी नहीं बिछुड़ना चाहते, अभी तो हमने अपने बेटे को जी भर कर देखा भी नहीं और इसकी माता जी भी तो इस के बिना मछली की भांति तड़फ रही हैं।

इस बात को सुन कर वहां का उपस्थित जनसमुदाय ने महाराज को यही परामर्श दिया कि इस समय गुणपाल का कंचनपुर जाना ही उचित है। गुणपाल ने अपने पिता जी को समझाया कि जिस बात को अधिकपुरुष कहें वह बात मान लेनी चाहिए। गुणपाल का पिता गुणपाल की बातों से बड़ा प्रभावित हुआ और प्रसन्न भी और उसने अपने हृदय के टुकड़े को छाती से लगाकर अनुमति दी और गुणपाल को शीघ्र वापिस लौटने को कहा। गुणपाल ने अपने पिता जी को भी साथ चलने को कहा, पर उसके पिता जी बोले मैं नहीं जा सकता मुझे शीघ्र वापिस लौटना है क्यों कि मुझे वहां आवश्यक कार्य है। अनुमति मिलने पर सब के चेहरों पर जो उदासी छाई हुई थी वह प्रसन्नता में परिवर्तन हो गई और नेपाल नरेश की जय नादों से आकाश भी गूंज उठा।





छब्बीस

........कंचनपुर में गुणपाल

पिता की आज्ञा मिलते ही गुणपाल कंचनपुर जाने की तैयारी में लग गया, चतुरसेन नरेश ने भी यह निश्चय किया कि कंचनपुर तक तो गुणपाल के साथ ही चलेंगे इसलिए वह भी तैयारी करने लगा। उधर प्रधानमंत्री और सेठ ब्रह्मदत्त भी अपनी तैयारी में लग गए।

प्रातः काल होते ही स्नान मंजन और नाश्ता से छुट्टी पाकर उनकी विदाई के लिए नगर निवासी आ पहुँचे, चन्द्र-प्रभा, गुणमाला, इन्दुप्रभा, स्नेहलता आदि सखियां पहले ही तैयारी कर चुकी थीं। चलते समय चंदा अपनी माता के गले से लिपट कर रोने लगी, माता ने कहा पुत्री कंचनपुर जाकर माता को भूल न जाना, तेरे विरह में मेरा खान-पान भी समाप्त हो गया था जब तू यहां से गायब हो गई थी और कोई भी अपनी पुत्री को जीवन भर घर में नहीं रख सकता आखिर एक दिन तो जाना ही पड़ता है। चन्दा रो रही थी और माता को कह रही थी कि क्या आज ये महल मेरे

नहीं रहे ? कहां गया वह तुम्हारा प्यार ? भाई का दुलार कहां गया ? पिता का नेह और सखियों का स्नेह कहां गया ! वह प्रेम कहां गया क्या सब कुछ यहीं तक था ?

इतनी देर में चंदा की सखियां उसको चारों ओर से घेर लेती हैं और कहती हैं, चंदा क्या तुम हमें छोड़कर चली जाओगी ? हमारा तुम्हारे बिना कैसे निर्वाह होगा, हम तुम्हें नहीं जाने देगीं यदि "तुम्हें जाना ही है तो हमें भी साथ ले चलो।" चन्दा की माता ने सखियों को समझाया और चन्दा को भी समझाया कि मैं तुम्हें शीघ्र ही बुलवा लूँगी। मेरी एक शिक्षा का ध्यान रखना कि पति ही स्त्री के लिए सब कुछ होता है, उसको खुश रखने में हर प्रकार से प्रयत्न करना, यदि वह कुछ कह भी दें तो शान्त रहना क्रोध न करना, प्रेम से ही घर में लक्ष्मी का निवास होता है तथा घर स्वर्ग के समान हो जाता है, पति की आज्ञानुसार ही कार्य करना इसी में तुम्हारे जीवन का कल्याण है, तुम्हारा भविष्य प्रगति के शिखर पर पहुंचेगा। अभी इस प्रकार की शिक्षा माता पुत्री को दे रही थी कि—मनमोहन आकर कहता है कि माता जी चन्दा को शीघ्र तैयार करो, बाहर सब तैयार खड़े हैं तथा विमान भी चलने ही वाला है। रानी चन्दा के साथ विमान तक आई और बड़ी कठिनता से विमान में बैठाया। साथ ही गुणमाला भी बैठ गई, गुण-

पाल के बैठते ही विमान धीरे-धीरे सिंह द्वार तक चला, साथ ही जनसमूह भी चल रहा था। सिंह द्वार के बाहर गुणपाल ने सबको एक सार गर्भित उपदेश दिया और स्नेह-भरे शब्दों के साथ वापिस लौट दिया।

इधर गुणपाल ने कंचनपुर की ओर विमान की गति तीव्र कर दी। उधर उसके पिता नेपाल दिशा की ओर रवाना हो गये तथा कंठाराम भी अपनी पत्नि सहित नेपाल नरेश के साथ चले गये।

गुणपाल के मार्ग में पहले तिलकपुर नगर आया। उन्होंने एक रात्रि वहाँ पर विश्राम किया। मदनलाल, सुन्दर लाल और योद्धाराम ने बड़े प्रेम भाव से सेवा की। इन्दु की माता तथा गुणमाला की माता ने भी अपनी-अपनी पुत्री के विषय में कुशल क्षेम पूछा। गुणपाल ने उत्तर में कहा कि "वे सब सुख-शान्ति एवं सानन्द मंगल में हैं।"

वहां से वे प्रातःकाल ही अपनी कंचनपुर की यात्रा के लिए प्रस्थान कर गए। कंचनपुर निवासियों को वीर गुणपाल के आगमन की सूचना किसी प्रकार प्राप्त हो गई थी। राज परिवार एवं प्रजाजनों के हृदय आनन्द विभोर हो उठे, सब लोग स्वागत की तैयारियां करने लगे।

उधर गुणपाल तथा कंचनपुर के मंत्री जब शहर के निकट पहुँचे तो नगर निवासी बादलों की भाँति उमड़ पड़े

और जयकारों से नभ गूंज उठा। वे बड़ी धूमधाम के साथ बाजार के मध्य भाग से होकर जा रहे थे, सड़क के दोनों किनारों पर पुरुष तथा नारियां फूल मालाएँ लिये स्वागतार्थ खड़ी थीं, गुणपाल चलते जाते थे और नर-नारी उनके गले में मालाएँ डालते जाते थे। गुणपाल स्वागत मण्डप में न जाकर सीधे ही राजप्रासाद में-जहां भूपति बिमार थे चले गये। नवागन्तुक को आते देख स्वयं रानी ने उठकर स्वागत किया और राजा के शयन कक्ष में ले गई। राजा ने देखते ही उसे अंक में भर लिया और आंखों से आंसू बहाते हुये बोले—मैं बहुत बिमार हूँ, चन्द रोज का मेहमान हूँ, चिकित्सकों ने तो जवाब दे दिया है। गुणपाल ने राजा को सान्त्वना देते हुए कहा—"आप घबराइए नहीं मैं अभी आपको ठीक कर देता हूँ, धैर्य रखिये।"

वीर गुणपाल के साथ रहे दीपनगर के स्वामी चतुरसेन ने भी राजोचित्त प्रणाम आदि कंचनपुरराज को किया तथा क्रमशः चन्द्र प्रभा तथा स्नेह लता ने भी अपने पिता राजा को प्रणाम करके स्वास्थ्य की कुशलता पूछी।

इधर पांव धोकर क्रिया आदि के बाद महारानी सुन्दरा ने अतिथियों को स्वल्पाहार करवाया। इस समय चन्द्रप्रभा को कंचनपुर नरेश की कुमारी ललिता को देखने का अवसर मिला और वह उसे अपने पास बैठाकर निर्निमेष दृष्टि से

देखने लगी।

गुणपाल को जिस कार्य हेतु लाया गया था तथा वह जिस कार्य के लिए आये थे उसमें लग गए। उन्होंने देव-प्रदत्त जड़ी का प्रयोग आरम्भ किया और जल आदि द्रव्य के साथ राजा को पिलाया। बूटी को पीते ही राजा का समस्त रोग समाप्त हो गया। वे पूर्ववत् स्वस्थ हो गए तथा अपनी अवस्था को देखकर विस्मित रह गये। मानो वे कभी बिमार ही नहीं हुए थे तथा गुणपाल की सराहना करने लगे!

गुणपाल की चिकित्सा की बात सारे शहर में फैल गई। नगर निवासी यह सुनकर अति प्रसन्न हुए कि हमारे महाराज को गुणपाल ने स्वस्थ कर दिया। घर-घर में उसकी प्रशंसा होने लगी, राज महलों में खुशी के बाजे बज उठे। राजा ने इस खुशी में दीन-अनाथों को दान दिया, कैदियों को स्वतन्त्र कर दिया। जब हर प्रकार से आनन्द मंगल हो गया तब चतुरसेन ने जाने का आग्रह किया। राजा बलबीर ने कहा अभी तो गुणपाल को राज्याभिषेक करना है "तब तक आप यहाँ विराजिए।" इस बात को सुनकर राजा चतुरसेन राज तिलक की अवधि तक ठहर गये।

उसी दिन राजा ने ज्योतिषी को बुला कर कहा कि

ऐसा शुभ मुहूर्त निकालो कि एक ही दिन ललिता और गुणपाल का सम्बन्ध तथा राज तिलक की रस्म पूर्ण हो जाये । ज्योतिषी ने बताया कि राजन् कल राम नवमी है, यह इतना श्रेष्ठ मुहूर्त है कि हर राम नवमी को उपलब्ध न हो सकेगा । इतना सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और सेनापति को बुला कर कहा कि एक अनुपम मण्डप तैयार करो, सारा शहर सजवा दो, हर प्रकार के साधन जुटवा दो और सर्वत्र घोषणा करवा दो कि कल प्रातः काल नौ बजे ललिता और गुणपाल का पाणि ग्रहण तथा चार बजे राजतिलक होगा ।

आज्ञा मिलते ही घोषणा करवा दी गई । घोषणा को सुनते ही सारे शहर में खुशियों के स्रोत बहने लगे । मंत्री, सेनापति ने सारे शहर को भली भांति सजवाया तथा बहुत सुन्दर मण्डप की रचना की जिसे देखकर सभी लोग आश्चर्य करने लगे ।

नाना प्रकार के वाद्ययंत्र बजने लगे, घर-घर में मंगल गान होने लगे, राजा ने सब नगर निवासियों को आमंत्रित कर उन्हें स्नेह पूर्वक भोजन कराया गया । भोजन एक दिव्य भोजन था जिसकी प्रत्येक पुरुष सराहना करता था । रात्रि को बहनों ने नाना प्रकार के गीत गाये । चन्द्रप्रभा, स्नेहलता आदि का दिल भी खुशी से ओत-प्रोत हो गया ।

प्रातः काल ही शहनाइयां बजने लगीं। नौ बजे फेरे आरम्भ हो गये तथा सवा दस बजे सब कार्यक्रम समाप्त हो गया, सुन्दरी रानी की इच्छा वर आई। एक रत्नों से जड़ित हार पिता ने पुत्री के गले में डाल दिया तथा नाना प्रकार के आभूषण और वस्त्र दिये तथा इसी प्रकार एक हार गुणपाल को भी पहना दिया।

इसके बाद भोजनादि से निवृत्त होकर विश्राम हेतु एकान्त बैठक में चले गये। उसके पश्चात् राज्याभिषेक की तैयारी होने लगी। कहीं सैनिक फिर रहे हैं तो कहीं सिपाही डट कर खड़े हैं। नगर निवासियों से मण्डप खचा-खच भर गया। राजा ने ठीक चार बजे गुणपाल के मस्तक पर राज-तिलक कर दिया उसी समय तोपों के गंभीर शब्द सुनाई देने लगे, उन्नचास प्रकार के वाद्ययंत्र बजने लगे, बड़ी धूम-धाम से सर्व कार्यक्रम पूर्ण हुआ "महाराजा गुणपाल की जय हो विजय हो" इस प्रकार के जयकारे बोलती हुई जनता अपने-अपने घर वापिस लौट गई। राजतिलक होने के बाद राजा चतुरसेन भी दीपनगर जाने के लिए अपनी तैयारी करने लगे। चलते समय दीपनगर नरेश ने राजा गुणपाल से कहा कि दीपनगर का अर्धराज भी आप का है उस का भी ध्यान रखियेगा।

गुणपाल ने कहा—राज्य मेरा प्रबन्ध आपका इसमें

कोई अन्तर नहीं। जिस दिन आप यह कहेंगे कि अब मुझ से कार्य प्रवन्ध नहीं होता उस दिन हम अपना अधिकार संभाल लेंगे। गुणपाल की बात सुनकर राजा मौन हुए तथा दीपनगर की ओर प्रस्थान कर गए। गुणपाल ने वड़े आदर सहित सिंह द्वार तक विदाई दी।

इधर राज्याधिकार पाकर गुणपाल ने अनाथालय, औषधालय, वृद्धाश्रम, कन्या पाठशाला, धर्मशाला तथा सुविधालय वनवाये, दीनों के लिए भोजनालय का और गरीवों के लिये व्यापार आदि का भी प्रवन्ध किया। जो निर्धनता के कारण अध्ययन प्रेमी होते हुये भी अध्ययन करने में असमर्थ थे उनके लिए पुस्तकों आदि का प्रवन्ध किया। स्थान-स्थान पर कुएं, वावड़िया, सरोवर वनवाये, संन्यासाश्रम, विधवाश्रम, अनपढ़ नारियों के लिए शिक्षा शालाएं, कला शालाएं जो परोपकारार्थ साधन थे जहां तक हो सकते थे जुटाए। जितने भी राज कर्मचारी थे सभी के वेतनों में वृद्धि कर दी और शहर में घोपणा करवादी कि "किसी को कोई भी किसी प्रकार का कष्ट हो तो मुझे आकर कहे, मैं उसके निवारण का पूरा-पूरा प्रयत्न करूँगा।"

इस नए कार्यक्रम से नगर निवासी अति प्रसन्न थे। गुणपाल की तीनों रानियां वड़े प्रेम भाव से रह रही थी। उन्होंने रानी सुन्दरा को माता समझकर अत्यन्त सेवा की।

रानी भी उनसे अति प्रसन्न थी वह भी फूली नहीं समाती थी। एक दिन गुणपाल के मन में विचार आया कि "मेरी तीन रानियां हैं जो रूप, सौंदर्य, लावण्य, सुन्दरता तथा आज्ञानुसार कार्य करने में एक समान हैं अब पटरानी किसे बनाना चाहिए।" इसी विचार में डूबे देख चन्दा ने पूछा- "प्राणनाथ ! ऐसी क्या समस्या है जिसका आप समाधान न कर सके और इतने अधीर हो रहे हो।" राजा मौन थे उसी समय चन्दा के साथ-साथ स्नेहलता और ललिता ने भी पूछा—बार-बार पूछने पर राजा ने मन की बात कह दी। आखिर सभी की दृष्टि चन्दा पर गई। सभी ने चन्दा का समर्थन किया कि यही पटरानी के योग्य हैं। वैसे भी हम से समझदार है और आपकी प्रथम रानी भी है।

सब की सम्मति लेकर राजा ने चन्दा को पटरानी का चीर देना निश्चित कर लिया। उसी समय एक महोत्सव का प्रबन्ध करवाया, महल आदि सजवाये गए तथा सब कार्य-क्रम के साथ चन्दा को पटरानी का चीर प्रदान किया। अन्य रानियां अति प्रसन्न थीं।

एक दिन बैठे-बैठे राजा बलवीर ने गुणपाल से कहा- हे पुत्र ! मैंने गृहस्थाश्रम का उपभोग तो कर लिया है अब मेरी अवस्था भी प्रौढ़ हो गई है इसलिए इस जन्म मरण की शृंखला को तोड़ने तथा आत्म कल्याण हेतु संन्यासा-

श्रम स्वीकार करना चाहता हूँ।" गुणपाल, राजरानी सुन्दरा तथा ललिता ने वहुत समझाया पर राजा अड़िग रहे। इस वात से रानी के विचार भी परिवर्तित हो गये और वह भी राजा के साथ ही साध्वी वनने के लिए तैयार हो गई। गुणपाल ने जव देखा कि दोनों अपने वचनों पर कायम हैं तो महोत्सव द्वारा अपने राज में ही दीक्षा करा दी। वहुत वर्षो तक तप-जप संयम का पालन कर आत्म कल्याण किया।

अव गुणपाल निश्चित रूप से राज्य का संचालन करने लगे। प्रजा उसे पिता सम तथा वह प्रजा को पुत्रवत् समझता था। एक राजा में जो गुण विशेप होने चाहिए वे सभी गुण उसमें विद्यमान थे। उसके राज्य में सभी एक समान थे। वैसे भी उसके दरवार में गरीव-अमीर को एक जैसा स्थान मिलता था, घर-घर में धर्म ध्यान तथा साधु सन्तों का मान सन्मान होने लगा। गुणपाल रात्रि में वेश परिवर्तन कर गली-गली में घूमते थे कि मेरे राज्य में कोई दुःखी तो नहीं है, चोर लुटेरे डाकुओं का कोई वहां भय न था। वे जनता के सुख में सुख और दुःख में दुःख का अनुभव करते थे। लोग घरों के द्वार तक खुले छोड़ देते थे। उसे राम-राज्य के सदृश्य कह दिया जाये तो कोई अनुचित नहीं अथवा दूसरे शब्दों में विक्रमादित्य का राज्य भी

कह दिया जाये तो उचित ही है। वह प्रजा को अपना सेवक नहीं बल्कि अपना सहयोगी मानता था। प्रजा भी उस पर प्रसन्न थी। "यथा राजा तथा प्रजा" वाली कहावत उस पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती थी। उसे सत्ता का तनिक भी अभिमान न था।

जहां इस प्रकार का व्यवहार हो तथा परस्पर प्रेम हो उस राज्य का कौन क्या बिगाड़ सकता है? राजा अन्याय तथा अत्याचार और हिंसा का विरोध करने में वज्र से भी कठोर था उतना ही दुःखियों का दुःख सुनने में उसका हृदय नवनीत से भी कोमल था। यदि आजकल भी ऐसी दशा हो तो हमारा देश भारत भी स्वर्ग के मानिन्द हो सकता है।

उस राज्य में जहाँ सच्चाई, अहिंसा, सदाचार के अंकुर स्फुटित पल्लवित पुष्पित होते थे, वहां असत्य, असदाचरण तथा छल कपट, उदण्डता आदि का समूल उन्मूलन होता था।

इस प्रकार गुणपाल को प्रजा की सेवा में दो वर्ष व्यतीत हो गए। दो वर्ष के बाद आज फिर कंचनपुर में बधाई के शंख गूंज रहे थे, खुशियां भी स्वयं खुश हो रही थीं, क्योंकि आज महारानी चन्दा ने एक पुत्र को जन्म दिया था। गुणपाल तथा उसकी रानियां भी नए मेहमान को निहार रही थी। गुणपाल ने उसका नाम शशिकान्त रखा, वैसे

भी वह वालक शशि से कम न था। पांच धाय माताओं ने उसकी लालना-पालना की। कोई स्नान कराने वाली, वस्त्र पहनाने वाली, आभूषण पहनाने वाली, दूध पिलाने वाली और कोई गोद में खिलाने वाली थी। सभी रानियां अति प्रसन्न थी। सारे राज्य महलों में खुशी का वातावरण छाया हुआ था।

इस प्रकार बच्चे को पालते-पालते आठ वर्ष बीत गए। आठ वर्ष की वय में वालक को किसी योग्य कलाचार्य के पास कला सिखाने हेतु सौंप दिया। वालक की प्रतिभा अत्यन्त तीव्र थी जो एक बार पाठ पढ़ लेता था वह सदैव के लिए हृदय पटल पर अंकित हो जाता था। स्वयं कलाचार्य तथा वालक के सहपाठी आश्चर्य चकित रह जाते थे और उसने पच्चीस वर्ष की वय में सम्पूर्ण कलाओं का ज्ञान कर लिया।

अध्ययन के पश्चात् कलाचार्य अपने साथ ले राजा के पास आये और कहा कि—"नराधीश ! वालक सभी कलाओं में निपुण हो गया है।" राजा ने उसी समय शशिकान्त से एक-दो राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक ढंग के प्रश्न किये। वालक ने तपाक से उन सभी प्रश्नों का उत्तर दे दिया। राजा अति प्रसन्न हुआ और कलाचार्य को दक्षिणा देकर प्रसन्नचित्त से विदा किया।

बालक की सभी प्रकार की क्रीडाएं सुन्दर थीं उसका उठना, बैठना, खाना, पीना, सोना, बोलना, हंसना अच्छा लगता था। नगर निवासी उसे देख-देख कर प्रफुल्लित हो उठते थे। पुरुष की बहत्तर कलाओं में वह निपुण था। वह सब के चित्त पर चढ़ा हुआ था क्योंकि वह भावी राजा घोषित हो चुका था। बालक का खान-पान-रहन-सहन बिल्कुल सादा था। सादा जीवन बिताना उसे पसन्द था। आकृति सुन्दर हो तो उसे जो कुछ भी पहना दिया जाए उसके लिए वही आभूषण बन जाता है। राज्याधिकारी तथा विद्वान होते हुए भी उस के हृदय में तनिक भी अभिमान का अंकुर उत्पन्न नहीं हुआ था। दुर्वासना की दुर्गन्ध तो उसने समीप न आने दी बल्कि हाथी की तरह अपने आपको अंकुश में रखा यही उसकी महानता थी। अब शशिकान्त राजकुमार पिता जी के साथ राजकार्य में सहयोग देने लगा।

प्रकृति की लीला देखिये। राजा गुणपाल की अन्य दो रानियों के भी एक-एक पुत्र रत्न पैदा हुआ। उनका भरण-पोषण, पठन-पाठन, नाम संस्कार, कला आदि सब शशिकान्त के सदृश्य सिखलाई गई। उन दोनों में रानी स्नेहलता का पुत्र बड़ा था जिसका नाम सुनीतकुमार था और दूसरी रानी के पुत्र का नाम रश्मिकुमार था। अब

गुणपाल हर वात में समर्थ हो गया, उसने चालीस वर्ष तक खूब राज-उपभोग किया। उसको अपने राज्य में नारी-सुख, सन्तान-सुख, शारीरिक और मानसिक सभी प्रकार के सुख उपलब्ध थे। जीवन में किसी वस्तु का अभाव नहीं था।



सत्ताईस

........वैराग्य पथ पर गुणपाल

एक समय की बात है कि गुणपाल अपने शयन-कक्ष में सो रहा था, अनायास ही अर्ध रात्रि में आंख खुल गई और वह उठ कर बैठ गया—देखा कि सभी रानियां और राजकुमार सो रहे हैं। वह फिर लेट गया परन्तु निद्रा न आई, अन्त में धर्म जागरणा करने लगा। एक ओर अपनी रानियों को, राजकुमारों को और राज वैभव को देखता है, दूसरी ओर उसे मृत्यु भी याद आती है। मन में विचार उत्पन्न हुआ कि—यह संसार असार है, रागद्वेष का दावानल इसमें धधक रहा है, तृष्णा का विशाल महासागर ठाटें मार रहा है, अहंकार और लोभ के मगरमच्छ मुंह बाये खड़े हैं, जगत का कोई भी दृश्यमान पदार्थ स्थिर नहीं है, बिगड़ता और बनता रहता है, मौत आने पर कोई भी वैभव बचा न सकेगा, जिस प्राणी ने जन्म लिया है वह एक दिन अवश्य ही मरेगा। मैंने जीवन भर में कई युद्ध किए, मेरी विजय की पताका चहुं दिशाओं में फैल गई परन्तु भविष्य के लिए,

परलोक के लिए कुछ भी न किया कुछ करना चाहिए।

सब प्रकार के सुखोपभोग किए, मेरी अवस्था भी प्रौढ़ हो चली है, न जाने यह श्वास मुड़ कर आये या न आये, इसलिए मैं अशाश्वत वस्तु के लिए भटकता रहूं यह मेरे लिए श्रेयकारी नहीं है। एक धर्म ही ऐसा है जो शाश्वत है, मंगल है, उत्कृष्ट है, कल्याणकारी है, हितकारी है तथा मौत भी जिससे भयभीत है। यह जीवन के साथ रहता है क्योंकि आत्मा का अपना गुण है और मरने पर भी साथ ही जाता है। यदि यहां पर कोई जैन मुनि पधार जाए तो मैं प्रवज्या (दीक्षा) अंगीकार कर जीवन को सफल बनाऊं, नहीं तो मैं इस संसार के चक्कर में फंसा रहूंगा, मोक्ष की प्राप्ति के लिए भटकता रहूंगा। तभी गुणपाल को दीवार पर लगी उस से पूर्व राजाओं की तस्वीरें दिखाई दी जो बड़े ठाट से तस्वीरों में खड़े थे परन्तु कहां है अब उनका ठाट? कहां है उनका राज्य? कौन उन्हें याद करता है? जिसने सच्चे मन से भगवान के नाम की माला फेर ली, जो निष्कामी बन गया, बस वही अमर है, वही विजयी है।

विचारों की इस उधेड़ बुन में गुणपाल को यह भी पता न चला कि कब रात्रि उसका साथ छोड़ गई और कब सूर्य की किरणों ने उसका दामन पकड़ लिया है। गुणपाल उठा

और स्नानादि कार्य से निवृत होकर दरबार में चला गया। उसका शरीर तो राज सभा में था परन्तु उसका मन कहीं और चक्कर लगा रहा था। चेहरे पर मुस्कान नहीं, ललाट पर तेज नहीं, आंखों में ओज नहीं क्योंकि उस के मन मस्तिष्क में तो वैराग्य रूपी विचार ही परिभ्रमण कर रहे थे।

पास में सभी मंत्री, कर्मचारी, अधिकारी विराजित हैं परन्तु किसी को भी कुछ कहने का साहस न था और गुणपाल अपने गहन विचारों में डूबा सोच रहा था कि कब मेरी मनोकामना पूर्ण हो। इतनी ही देर में माली ने आ कर सन्देश दिया महाराज की जय हो, उपवन में श्री धर्म घोष नाम के जैन मुनि पधारे हैं अपने शिष्य समुदाय के साथ। गुणपाल ने जब यह सुना तो उसके शरीर के रोम-रोम में खुशी छा गई और इसी खुशी में उस ने माली को एक बहुमूल्य हार दे दिया। माली हार लेकर खुशी-खुशी वापिस लौट गया।

गुणपाल ने वहीं से मुनि को भाव बन्दन किया तथा नगर में घोषणा करवा दी कि उपवन में महात्मा जी पधारे हैं। फिर क्या था दर्शनार्थियों का तांता सा लग गया। नगर निवासी उपवन की ओर ऐसे बढ़ने लगे मानो पुरुषों की एक बाढ़ आ गई हो। गुणपाल भी सर्व परिवार सहित

उस महानात्मा के पवित्र वचन सुनने के लिए चल पड़ा। निकट पहुंचने पर महात्मा को पांचों अंग नमा कर तीन बार प्रदक्षिणा अर्थात् सविधि वन्दन नमस्कार कर समीप बैठ गया। इसी प्रकार रानियों और राजकुमारों ने यथा-योग्य वन्दना की तथा गुणपाल की तरह यथास्थान पर बैठ गए।

महात्मा ने गुणपाल को तथा गुणपाल ने महात्मा को देखा तो देखते ही पहचानने में देर न लगी और मन में सोचने लगे कि ये मेरे पूर्व परिचित महात्मा हैं। ये वो ही परोपकारी मुनिवर हैं, जिन्होंने मुझे नवकार मंत्र दिया था गुणपाल का हृदय प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो गया। गुणपाल ने युगल कर बांध कर कहा, हे! गुरुदेव मैं आपका पुराना सेवक हूँ जिस ने तिलकपुर के निर्जन कानन में आप के पवित्र दर्शन किये थे।" महात्मा ने कहा—हां वत्स! मैं तुम्हें पहचानता हूँ, तुम्हारा नाम गुणपाल है।

इसके बाद सब शांत भाव से महात्मा का धर्म व्याख्यान सुनने के लिए एकाग्र चित से बैठ गए।

महात्मा ने धर्म का महत्व बताया और अपनी अमृतमय वाणी द्वारा उपदेशों के फूलों की वर्षा करनी शुरू कर दी। सभी ओर खामोशी थी। सभी महात्मा जी की ओर टक टकी लगाये देख रहे थे। महात्मा जी बोले—

अट्ठाईस

गुणपाल का पूर्व भव

गुणपाल को कुछ तो वैराग्य पूर्व ही था और महात्मा के उपदेश से तो और भी मजीठी रंग चढ़ गया। उसने हाथ जोड़ कर यह प्रश्न किया—हे गुरुदेव ! मुझे बचपन में कुसंगति किस कर्मोदय से हुई और माता-पिता का वियोग क्यों हुआ ? और इन तीन रानियों का संयोग जो मुझे अति इष्टकारी, प्रियकारी हैं कैसे हुआ ? महात्मा जी गुणपाल के प्रश्न को सुन कर मुस्कराये और गुणपाल की ओर देखने लगे।

महात्मा कुछ सोच कर बोले हे देवानुप्रिय ! तनिक ध्यान पूर्वक एकाग्रचित्त से सुनो। इसी जम्बू द्वीप में कंकापुरी नामक एक नगरी थी। उस नगरी में कालसूरी नाम का एक डाकू रहा करता था, उसके चार पुत्र थे। उन सब का खान-पान और आचार बिगड़ा हुआ था। मांस भक्षण करना, मदिरा पान करना, लूटना, मारना, चोरी करना यही उनका नित्य का कार्य था।

उन चार भाइयों में दुर्बुद्धि नाम का भाई प्रमुख था। किसी समय वह शिकार हेतु जंगल में गया उस समय उसकी दृष्टि एक हिरणी के वच्चे पर पड़ी जो अपनी माता के साथ खेल रहा था। वच्चे को देख कर वह शिकार करना तो भूल गया और दवे पांव से निकट जाकर तथा लपक कर उसने वच्चे को पकड़ लिया तथा अपने स्थान की ओर चल दिया। पुत्र विरह में माता तड़फ उठी और मोह वश हिरणी की आँखों से आंसू टप-टप गिरने लगे।

वह राग वश कुछ दूरी तक तो पीछे-पीछे आई परन्तु जव आशा न रही तो निराश होकर वापिस लौट गई।

जिस समय वह दुर्बुद्धि वच्चे को लेकर आ रहा था तो मार्ग में उसे एक महात्मा मिल गए। महात्मा ने देखते ही सव घटना को जान लिया क्योंकि वह चार ज्ञान के धर्त्ता थे। महात्मा तपाक से वोले कि—

"तकदीर के इन्साफ में, कुछ फेर नहीं है।
है देर तो जरूर, पर अन्धेर नहीं है॥

हे युवक ! तुम आज शक्तिशाली होकर वेजवानों को रूलाते हो, सताते हो, कल्पाते हो, परलोक में तुम्हें भी रोना पड़ेगा। जो कुछ तुम करते हो ये कर्म तुम्हारी आत्मा को घोर नरक में धकेल देंगे। वह भी समय आएगा जब वह तेरा गला घोटेगी और तू चिल्लाएगा, जिस का

तुम बच्चा उठा लाये हो। आत्मा सदैव अपनी पर्याय बदलती रहती है। वह एक जैसी अवस्था में नहीं रहती, यदि वह आज पशु हैं तो कल मनुष्य योनि में अथवा देव योनि में भी जा सकती है। जिस आत्मा को आज तुम निर्बल समझते हो वह कभी शक्तिशाली हो कर तुम्हें भी पछाड़ सकती है इसलिए जागो, बोध को प्राप्त करो।

महात्मा के सदुपदेश से दुर्बुद्धि की आत्म जाग उठी। उसी समय वह वापिस जंगल में गया और उस बच्चे को छोड़ आया तथा तीन भाइयों सहित उसी महात्मा के पास शिष्य बन गये और प्रव्रज्या ग्रहण की अर्थात् दीक्षा ली और दीर्घ काल तक तप-संयम• पालन करके, कालान्तर में देह का त्याग करके सभी वे स्वर्ग में गए। वहां स्वर्ग में आयु के क्षय होने पर उस दुर्बुद्धि देव का जीव इसी जम्बू द्वीप में नेपाल नरेश के पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ और उसके तीनों भाई पृथक्-पृथक् राजाओं के घर पुत्री रूप में उत्पन्न हुए जो आगे चल कर उसी की पत्नियां बनी।

हे गुणपाल ! तुम वही दुर्बृद्धि हो और ये तीनों तुम्हारी रानियां, पूर्व जन्म के भाई ही हैं, क्योंकि तुमने ज्ञान एवं सरलता पूर्वक तपश्चरण किया था अतः पुरुष के पुरुष बने रहे और तुम्हारे तीनों भाइयों ने कपट पूर्ण तप

का आचरण किया था इसलिए उन्होंने पुरुष वेद का छेदन कर स्त्री वेद का बन्धन किया, क्योंकि कपटाचरण का दुष्परिणाम स्त्रीत्व का प्राप्त करना ही है। पूर्व संस्कार के कारण ही तुम्हारा खान पान बिगड़ा और इनका सम्बन्ध हुआ तथा हिरणी के बच्चे के वियोग से तुम्हें भी माता-पिता का वियोग हुआ।

इन बातों को सुनकर राजा गुणपाल तथा तीनों रानियों को जाति स्मरण ज्ञान हुआ अर्थात् वे अपने पूर्व जन्म को देखने लगे। यह संसार उन्हें असार नज़र आने लगा, वैराग्य का मजीठी रंग उन की रग-रग में समा गया। हाथ जोड़ कर महात्मा जी से निवेदन किया कि—हे गुरुदेव! पूर्व जन्म के शुभ कर्मोदय से ही इस जीवन में सब प्रकार के साधन प्राप्त हो गए, नहीं तो न जाने इस जीवन का क्या होता। कर्मों का जो कृष्ण रंग वाला भुजंग अपना फन उठाये रहता है, उस को समाप्त करने के लिए तथा मलिन आत्मा को शुद्ध बनाने हेतु आप के पास दीक्षा अंगीकार करना चाहता हूँ। यदि आप स्वीकृति देंगे तो अति कृपा होगी, मैं अपने राज्य का सम्पूर्ण भार अपने ज्येष्ट पुत्र शशिकान्त पर छोड़ दूंगा। वह भली भांति इस राज्य का संचालन कर

सकता है ।

महाराजा गुणपाल को संसार की ओर से उदासीन देख कर मुनि ने फरमाया, हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो परन्तु शुभ कार्य में विलम्ब न करो। गुणपाल सन्त चरणों में नमस्कार कर सपरिवार वापिस महलों में लौट आया और सर्व प्रथम रानियों से विचार-विमर्श किया। रानियों ने उसे बहुत समझाया पर गुणपाल की वाणी में न जाने क्या जादू था जो रानियां कल दीक्षा के लिए इन्कार कर रही थी आज वे स्वयं गुणपाल के साथ दीक्षा हेतु तैयार हो गई हैं।

इसके बाद राजा ने शशिकान्त से परामर्श लिया। उसने तथा उसके लघुभाइयों ने भी बहुत समझाया परन्तु राजा मेरू सम अड़िग रहे और शुभ दिन तथा शुभ मुहूर्त में शशिकान्त का राज्याभिषेक कर दिया। नगर निवासियों को जब यह ज्ञात हुआ कि हमारे सिरताज दीक्षा ले रहे हैं तो वे दौड़े-दौड़े आये और बहुत रोका परन्तु राजा ने एक न मानी। मंत्री, सेनापति, राजकर्मचारी, अधिकारी तथा मित्रों ने भी समझाया पर वे टस से मस न हुए, होते भी क्यों सच्ची लगन कभी छुटती नहीं।

उधर राजा के वैराग्य की बात का पता नेपाल नरेश तथा नेपाल की महारानी को लगा तो वे भी उसी समय विमान द्वारा कंचनपुर नगर में आये उन्हें सादर सत्कार पूर्वक ठहराया गया। गुणपाल ने माता-पिता को प्रणाम किया तथा बहुओं ने भी सास-स्वसुर की सेवा भक्ति की।

गुणपाल के पिता जी ने पूछा, "बेटा, तुम दीक्षा क्यों ले रहे हो ?" तुम्हें यहां किस बात की कमी है ? गुणपाल बोला—पिता जी "कमी तो किसी बात की नहीं पर मैं जन्म-मरण के अटूट बन्धन को तोड़ना चाहता हूँ।" बीच में हीं माता बोली—पर "बेटा तुम्हारे राज्य का क्या होगा। गुणपाल बोला—माता जी आप का शशि जो है वह राज्य का संचालन करेगा। माता-पिता ने बहुतेरा समझाया, मोहमाया की बहुत जंजीरें फेंकी, पर गुणपाल उनमें न बंध सका। माँ के आंसू भी बेटे के अटल निश्चय को न बदल सके। आखिर मा ने एक और दाव खेला, बोली—बेटा तुम्हारी रानियों का क्या होगा वे किस के सहारे जीएंगी, गुणपाल मुस्कराया और बोला माता जी वे भी मेरे साथ ही दीक्षा ले रही हैं और अपने इस अस्थिर जीवन से मुक्ति प्राप्त करने जा रही हैं। मां ने फिर कहा

संयम में बहुत कष्ट सहने पड़ते हैं। जैसा बाईस परीषह, पांच महाव्रत, पांच सुमति, तीन गुप्ति, केश लोच करना, रात को न खाना, गर्मी-सर्दी-भूख-प्यास सहन करना आदि-आदि। गुणपाल बोला—माता जी मैंने नर्क में न जाने क्या-क्या दु:ख भोगे हैं और जो जंगलों में पशु पक्षी रहते हैं वे भी तो अपना निर्वाह करते ही हैं। रुग्णावस्था में कौन उन्हें औषधी और भोजन पानी देता है।

आखिर माता-पिता ने विचार किया कि जब हमारा पुत्र और पुत्र वधुएं दीक्षा ले रही हैं तो हम घर रह कर क्या करेंगे, अतः वे भी तैयार हो गए। नगर निवासियों को बड़ा आश्चर्य हुआ वे कहने लगे कि सोचा तो यह था कि वे अपने पुत्र को समझायेंगे परन्तु ये तो स्वयं भी तैयार हो गए।

बात की बात में यह सूचना दीपनगर, रतनपुर नगर, तिलकपुर नगर में पहुंच गई। राजा चतुर सेन, राजा प्रसन्न-कीर्ति, मनमोहन, मदनलाल और सुन्दरलाल भी आ गए। दीक्षा महोत्सव मनाया गया। सम्राट् शशिकान्त ने सारा शहर सजवाया। दीक्षा की सभी सामग्री तैयार की गई। नेपाल शाह ने सुधीर को, प्रसन्नकीर्ति भूप ने मनमोहन

को और राजा चतुरसेन ने जितेन्द्र को राज्य का कार्य-भार सौंप दिया और स्वयं गुणपाल के साथ संयम व्रत लेने हेतु तैयार हो गए।

अब धनंजय तथा उनकी पत्नी, गुणपाल तथा उसकी तीनों रानियाँ, चतुरसेन, प्रसन्नकीर्ति, मदनलाल, सुन्दर लाल ये दशों दीक्षा हेतु तैयार हुए। बड़ी धूम-धाम से जलूस के साथ उन्हें उपवन में ले जाया गया। जहां पर धर्म घोप मुनि विराजमान थे। संयोग वश वहां पर सुमति आर्या भी अपनी शिष्या-मंडली सहित पधारी हुई थी।

ये सभी महात्मा के चरणों में पहुंचे और निवेदन किया कि—भंते हमें तारो—तारो, पार उतारो।

महात्मा ने छहों पुरुषों को दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया, और चारों नारियों को दीक्षित करके आर्या सुमति को शिष्याएं घोपित कर दी।

अब दशों नव दीक्षित साधु-साध्वी संयम की आराधना करते हुए, आत्मा को अलोकित करते हुए विचरने लगे। उपवास, वेला, तेला, चौला आदि तपश्चर्या में जीवन की कालिमा को दूर करते थे, लोगों को मुक्ति का राह दिखाते थे, धर्म देशना देते थे, इस प्रकार अशुभ योग,

कषाय राग और द्वेष को पतला करने लगे तथा आत्मा पर छाये हुए कर्म क्षय करने लगे।

अन्त समय समाधि पूर्वक शुभ परिणामों में नश्वर देह का त्याग कर दिया और सभी प्राणी स्वर्ग में नल गुलनी विमान में जा कर उत्पन्न हो गए।

समाप्तम्



